श्री माँ शरणम्

श्री मार्कण्डेय पुराणाधृत मूल मात्रम्

श्रीदुर्गासप्तशती

सबके पढ़ने योग्य अति सरल संस्कृत भाषा में

तां दुर्गां दुर्गमां देवीं दुराचारविघातिनीम्।
नमामि भवभीतोऽहं संसारार्णवतारिणीम्।।

सम्पादक :

स्वामी श्रीआगमानन्दजी महाराज

प्रकाशक :

श्रीमद्भागवतकथा ज्ञानयज्ञ समीति
उसराहा, बेलदौर, खगड़िया

Shree Durgasaptsatee
Ed. by-Swamee Aagmanandjee
श्रीदुर्गासप्तशती (सरल संस्कृत भाषा मे)
प्रथम संस्करण : विक्रम संवत् २०६८
भाद्रकृष्ण : अघोर चतुर्दशी
२८/०८/२०११ ई० रविवार

प्रकाशन कर्त्ता : श्रीमद्भागवतकथा ज्ञानयज्ञ समीति
उसराहा, बेलदौर, खगड़िया

प्रकाशक : मानस प्रकाशन, नवगछिया

सर्वाधिकार © – सम्पादक/प्रकाशक

पुस्तक प्राप्ति स्थल :

- श्रीकृष्णा बुक सेलर, स्टेशन रोड, भागलपुर
- किताब घर, भारतीय स्टेट बैंक के सामने मेन रोड, नवगछिया
- माया मेडिकल हाल, काली बाड़ी रोड, कटिहार

सहयोग राशि –

टंकक (कम्पोजिटर) : Niraj Kumar, Bhagalpur

मुद्रक : सृजन प्रेस, भागलपुर

आत्म-निवेदन

भारत में धर्म-दर्शन, सभ्यता-संस्कृति के उत्कृष्ट ज्ञान-विज्ञान से संवलित आध्यात्मिक-वाङमय का विपुल भंडार समुपलब्ध है। सनातन हिन्दू-धर्म में जितने आध्यात्मिक ग्रंथ विद्यमान हैं उतना दुनियाँ के किसी भी धर्म में नहीं है। वेद-चतुष्टय से लेकर समस्त संत-साहित्य हमारी अमूल्य निधियाँ हैं। वैदिक-साहित्य के साथ तांत्रिक-साहित्य का भी प्राचुर्य है।

सर्वविदित है कि समग्र ग्रंथावलियों में शक्ति-उपासना की दृष्टि से श्रीदुर्गासप्तशती हिन्दू-धर्म का सर्वप्रसिद्ध, सार्वदेशिक, सार्वकालिक, सार्वभौमिक एवं सर्वमान्य धर्म-ग्रंथ है। यह वैदिक और तांत्रिक साधकों के बीच समान रूप से समादृत है। इसमें भगवती की कृपापूर्ण इतिहास के साथ कृपापात्र सुरथ और समाधि की साधना और उपलब्धि का सुस्पष्ट और सत्य-वर्णन उल्लिखित है। जब राजा सुरथ ने महर्षि मेधा से अपने कल्याण का सर्वोत्तम उपाय पूछा- तो महर्षि ने बड़े ही सारगर्भित शब्दों में उत्तर दिया-

तामुपैहि महाराज शरणं परमेश्वरीम्।
आराधिता सैव नृणां भोगस्वर्गापवर्गदा।।(13/4-5)

अर्थात् "महाराज! आप उन्हीं भगवती परमेश्वरी दुर्गा की शरण ग्रहण कर आराधना कीजिए। वे ही आराधना से प्रसन्न होकर मनुष्यों को सम्पूर्ण भोग (ऐश्वर्य), स्वर्ग तथा मोक्ष प्रदान करती हैं।" मेधा ऋषि के निर्देशानुसार आराधना-उपासना कर राजा सुरथ ने अपना खोया साम्राज्य तथा समाधि वैश्व ने तत्त्वज्ञान के द्वारा मोक्ष प्राप्ति की। अतः कहना समीचीन होगा कि सप्तशती में कर्म, ज्ञान और भक्ति की त्रिवेणी है। अनेक गूढ़-साधनात्मक रहस्यों से परिपूर्ण यह भक्तों के लिए कामधेनु और कल्पतरु के सदृश्य सद्यः फलदायी है। आशीर्वादात्मक मंत्रमय यह ग्रंथ सभी वर्णों और वर्गों के लिए समान रूप से कल्याणकारी है।

श्रीदुर्गासप्तशती के अनेक संस्करण अनेक सम्पादक महोदय के द्वारा अनेक प्रकाशनों से अनुदित सम्पादित और प्रकाशित हैं। किन्तु सप्तशती जैसे सामासिक गंथों की दुरूहता और क्लिष्टता के कारण अधिकांश लोग पढ़ नहीं पाते थे और अशुद्ध उच्चारण हेतु डरते भी थे। लोक कहावत भी है कि जूता सिलाई सबसे सरल काम है और चंडीपाठ सबसे कठिन। साथ ही कहा जाता है कि पाठ में चंडी, हवन में कुशकण्डी और श्राद्ध में सपिण्डी कठिन है और इसे जो विधिवत् जनता है वही पंडित है। ये सारी बाते तो लोक में प्रसिद्ध है ही किन्तु सबमें एक महत्त्वपूर्ण बातें है कि माता की उपासना में किसी को कोई भय नहीं होनी चाहिए। निर्विशेष ब्रह्म अथवा ईश्वर का मातृत्व रूप भक्त्यात्मक दृष्टिकोण से सर्वोपरि माना जाता है। जब सबसे हिंसक पशु सिंहनी भी अपने शिशु के प्रति वात्सल्य भाव रखती है तो जगदम्बा भला शिशु के प्रति अपने अनन्त वात्सल्य और स्नेह को कैसे छोड़ सकती है? एक छोटा शिशु जब माँ की गोद में मल-मूत्र त्याग करता है और बार-बार रोता है तो माँ उसे कोई दण्ड नहीं देती। विस्तर पर जब बच्चा रात्रि में मल-मूत्र त्याग करता है तो स्वयं गीले स्थान पर सोकर बच्चे को सूखे स्थान पर लिटाती है। जो बच्चा दूध भी नहीं मांग सकता है वह जब भूख से व्याकुल होकर रोने लगता है तो माँ सारे काम को छोड़कर आती है और पहले उसे अपना अमृतमय दूध पिलाती है। फिर बच्चा चुप हो जाता है। बच्चे की सारी, सुख-सुविधा का जितना ख्याल माँ रखती है उतना पिता नहीं रख सकते। इसीलिए माता को ममता, करुणा, वात्सल्य और स्नेह-प्रेम की साक्षात् मूर्ति मानते हैं। भूख से पीड़ित पक्षी (मादा) अपने

बच्चों को पहले अपने चंचु से उसके चंचु में भरकर खिलाते हैं फिर अपनी क्षुधा तृप्ति करते हैं। क्या इस मातृत्व-भाव का कहीं कोई मिशाल है? जब जगदम्बा के द्वारा सृष्ट पशु-पक्षियों में शिशु के प्रति इतनी ममता और करुणा है तो जगदम्बा में भला ममत्वहीनता, अकरूणा और अवात्सल्यता कैसे हो सकती है? कभी संभव ही नहीं है। वशर्ते कि माँ के उपासना-आराधना में साधक का शिशु-भाव हो। अज्ञानता, अल्पज्ञता, अक्षमता और आत्मसमर्पित भाव ही मातृ-शक्ति उपासना का संबल होता है। शिशु-भावी साधक से जितनी गलतियाँ हो वह अभिमान रहित होता है और उसे माता सहज भाव से क्षमा कर देती है। माता की महिमा कहाँ तक कही जाय। भगवान श्रीमदाद्य शंकराचार्यजी महाराज तो यहाँतक लिखते हैं-

"कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति।"

अर्थात् "पुत्र कुपुत्र हो सकता है किन्तु माता कभी भी कुमाता नहीं होती है।"

साथ ही - "अपराधपरम्परापरं न हि माता समुपेक्षते सुतम्।"

अर्थात् "पुत्र अपराध-पर-अपराध क्यों न करता जाता हो फिर भी माता उसकी उपेक्षा नहीं करती।"

इस प्रकार शास्त्रों में, महान ऋषियों-मुनियों एवं आचार्यों ने मातृ शक्ति उपासना के वैशिष्ट्य वैलक्षण्य का वैविध्यपूर्ण प्रतिपादन कर उसकी महत्ता को अक्षुण्ण रखा है। अनेक शास्त्रीय-लौकिक दृष्टांत भरे-पड़े हैं जिससे मातृ-सत्ता की पूजा-अर्चना, आराधना-उपासना की महत्ता जाना जा सकता है।

एक बात और ध्यान देने योग्य है कि अहंकार भगवान या भगवती को प्रिय नहीं है। वह उनका भोजन है अतः अहंकार पूर्वक यदि कोई शुद्धचंडी पाठ का दावा करते हैं तो यह भी महान मूर्खता है। अतः मातृत्व-साध्ना में भय वहीं है और उन्हीं को लगता

है जिसमें सर्वज्ञता का अभिमान हो। और फिर यही अभिमान उसे पतन और सर्वनाश के गर्त्त में गिरा देता है। मधु-कैटभ, महिषासुर, रक्तबीज तथा निशुंभ-शुंभ का अभिमान ही तो उसके सर्वनाश का कारण बना।

निश्छल शिशु-भाव से की गयी उपासना सर्वदा कल्याणकारिणी होती है। एक कथा है - एक पंडितजी कहीं दुर्गापाठ करते थे। वे "नमस्तस्यै नमो नमः" न कहकर 'नमस्तस्मै नमो नमः'। बोलते थे। किन्तु भावना शुद्ध थी। पाठ कराने बाले थोड़े पढ़े लिखे थे और दूसरे विद्वान पंडित भी साथ थे। पंडित जी ने कहा ये तो अशुद्ध पाठ करते हैं "नमस्तस्यै" के बदले नमस्तस्मै बोलते हैं। घरवालों ने और पंडितजी ने उन्हें खूब डाँटा। कहा-कल से आप पाठ नहीं करेंगे। क्योंकि व्याकरण-दृष्टि से स्त्रीत्व-भाव से नमस्तस्यै शुद्ध है। नमस्तस्मै तो पुरुष के लिए होता है। पंडितजी दूसरे दिन पाठ करने नहीं आए। माता जगदम्बा ने दूसरे दिन पंडितजी और घरवालों को स्वप्न में कहा-अरे मूर्ख! मेरा वह पुत्र निश्छल-भाव से पाठ करता था। उसके मन में अद्वैत-वेदान्त का भाव था। देव्यथर्वशीर्ष में मेरी उद्घोषणा है - "अहं ब्रह्मस्वरुपिणी। मतः प्रकृति-पुरुषात्मकं जगत्।" अर्थात् मैं ही ब्रह्मस्वरुपा हूँ। मुझसे ही प्रकृति-पुरुष मय जगत् उत्पन्न हुआ है।" अर्थात् मैं ही स्त्री और पुरुष हूँ। अतः मुझे केवल स्त्री मानना मूर्खता है। मैं पुरुष भी हूँ या भी दोनों से परे या प्रकृतिपुरुषमयी ब्रह्म-स्वरुपा हूँ। अतः वह भोले-भाव से अद्वैत भाव में परिनिष्ठित होकर "नमस्तस्मै कहता है न कि अज्ञानता और मूर्खता से। अतः इससे क्षमायाचना कर पाठ कराओ तुम्हारा कल्याण होगा। बड़े विद्वान पंडित और घरवालों का भ्रम दूर हुआ और उनसे क्षमा याचना कर पाठ कराने लगे। इस तरह भक्ति या उपासना में भाव की प्रधानता होती है ज्ञान की नहीं।

किन्तु हाँ व्यक्ति ज्ञानी होकर यदि भाव न रखता हो और "भार्या रक्षतु भैरवी" के बदले भार्यां भक्षतु भैरवी कहे तो अनिष्ट फल से भी अनपेक्षित नहीं रह सकता। यदि पढ़ने में कुछ भी उच्चारण हो, भाव भक्ति युक्त हो और विनम्र भाव से साधक क्षमा याचना कर लें तो फिर सभी अपराध माता क्षमा कर देती है। कहा भी गया है -

न काष्ठे विद्यते देवा न पाषाणे न मृण्मये।
भावो हि विद्यते देवा तस्मात् भावस्य हि कारणम्।।

अर्थात् देवता न काठ में, न पत्थर में और न मिट्टी में रहते हैं। 'भावो मिच्छंति देवता' के सिद्धान्त से वे भाव से प्रकट होते है। भाव ही देवता की प्रसन्नता का मूल कारण है।

निष्पक्ष दृष्टि से यदि विचार किया जाय तो पता चलता है कि सम्पूर्ण भारत वर्ष एवं विदेशों में भी शारदीय नवरात्र व्रत उपासना करने वालों की संख्या सर्वाधिक है। फिर ईश्वर के मातृत्व स्वरुप की उपासना करने वाले भी अधिकाधिक हैं। मातृ-उपासना का यानी शक्ति आराधना का सर्वाधिक लोकप्रिय ग्रंथ श्री दुर्गा सप्तशती है। इसके सामासिक शब्दों को देख लोग पढ़ने से डरते हैं। अधिकांश प्रकाशित ग्रंथों में संयुक्त शब्दावलियों और सामासिक शब्दों के कारण ही इसका पाठ करना कठिन लगता है। कुछेक भाष्यकारों ने थोड़ा-बहुत सरल करने का प्रयास किया है। लेकिन जिस रूप में तोड़ने पर थोड़ा संस्कृत जानने वाले या हिन्दी भाषी भी अच्छी तरह पाठ कर सकें, इसका प्रायः अभाव था। इसी की पूर्ति के लिए, मैंने व्याकरण के लिहाज से नहीं बल्कि उच्चारण एवं शुद्ध पाठ के प्रयास के हिसाब से संयुक्त व्याकरणिक सामासिक शब्दों का विच्छेदन बहुजन हिताय बहुजन सुखाय" को ध्यान में रखकर आम-आवाम भक्तिमान जनमानस के लाभ के लिए किया है। यह मेरी अनधिकार चेष्टा है कि संस्कृत-भाषा के स्वरूप के साथ छेड़छाड़ करना। किन्तु मेरे इस बाल-चपल स्वभाव एवं अशास्त्रीय प्रयास से यदि पाठकों में देवभाषा संस्कृत के प्रति थोड़ी भी श्रद्धा-निष्ठा जगती है

और माता की आराधना के लिए भक्ति-भाव जाग्रत होती है तो मेरे अनधिकृत श्रम की सार्थकता होगी। हाँ इसके लिए मैं व्याकरण और साहित्य के अनावश्यक चूल हिलाने वाले, समालोचक आचार्यों से क्षमा प्रार्थी हूँ। आशा है अल्पज्ञ संस्कृत भाषी के साथ विज्ञ संस्कृतज्ञों को भी इससे आनन्द लाभ मिले। यह मेरी नहीं गुरुदेव और पराम्बा की प्रेरणा और कृपा है। प्रस्तुत सरल सर्वपठनीय दुर्गासप्तशती का पाठक्रम का आधार श्रीगीताप्रेस, गोरखपुर द्वारा प्रकाशित सप्तशती ही है। तथापि जन मानस के विशेष लाभ के लिए कुछ स्तोत्र और आरती बढ़ा दिये गये हैं। आशा है अगले संस्करण में कुछ और स्तोत्रों की संख्या बढ़ाई जा सकती है। सम्प्रति इसमें पाठ-पूजा विधि भी अति संक्षिप्त और सबके लिए है। आगे विस्तृत पाठ विधि एवं पूजा-विधि संयुक्त हो सकता है।

जिनके कृपाशीष से प्रस्तुत सरल-संस्करण श्रीदुर्गासप्तशती का निकला है उन पूज्या-पूज्य माता-पिता, समस्त शिक्षा-गुरुवृन्दों एवं ब्रह्मविद्या प्रदायक सर्वदा वंदनीय समस्त आध्यत्मिक श्रीसदगुरुदेवभगवान के पुनीत पाद-पद्मों में अनन्त कोटि नमन निवेदित है। विज्ञजनों एवं मित्रों के प्रति भी आभार प्रकट करता हूँ। अपने समस्त अन्तेवासियों को आध्यात्मिक एवं अन्य अभ्युन्नति के लिए आशीष देता हूँ। प्रकाशक एवं मुद्रक को साधुवाद देता हूँ। आशा है पराम्बा के इस प्रेरणा प्रसूत कार्य से सभी लाभान्वित हो उनकी कृपा प्राप्त करेंगे।

प्रस्तुत संस्करण का प्रकाशन श्रीमद्भागवतकथा ज्ञानयज्ञ समीति, उसराहा, बेलदौर खगड़िया के पावन सहयोग से हुआ है। इसके लिए समीति के सभी लोग अशेष के धन्यवाद के पात्र है। प्रकाशन में शीघ्रता तथा भूल एवं प्रमादवश हुई त्रुटियों की ओर ध्यान आकृष्ट कराने के लिए मनीषियों के अभारी रहेंगे।

पराशक्तिपादाम्भोजरसपायक

आगमानन्द

प्रकाशकीय वक्तव्य

श्रीदुर्गासप्तशती शक्तिसाधना का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण धर्म-ग्रंथ है। सम्पूर्ण भारत में अनेक प्रकाशन स्थल से अनेक महान मनीषियों के द्वारा श्रीदुर्गा सप्तशती सम्पादित हुआ है। किन्तु वह व्याकरणिक संयोग और सामासिक-शैली के कारण अत्यन्त कठिन है। यहाँ तक कि बड़े-बड़े ज्ञानी-पंडित लोग भी भूल कर बैठते है और आम-आवाम लोग पढ़ने में भय महसूस करते हैं। भारत में शक्ति-उपासकों का एक विराट् समूह है। अतः चाहकर भी सप्तशती ने पढ़ने वालों, के पढ़ने के लिए आम-आवाम जनता के धर्मलाभ के लिए सरल-संस्कृत संस्करण पूज्य स्वामी आगमानन्द जी महाराज ने प्रस्तुत कर एक महान कार्य किया है। पढ़ने के बाद इसकी सरलता-सहजता का अनुभव लोग करेंगे। यह एक साथ विद्वानों तथा सामान्य संस्कृत-हिन्दी जाननेवालों के लिए उपकारक सिद्ध होगा ऐसा मेरा विश्वास है।

अन्य प्रकाशनों की अपेक्षा इसका अल्प संख्या में प्रकाशित होने के कारण कुछ अधिक मूल्य या सहयोग लग सकता है फिर भी प्रकाशन खर्च में ही हम यह आप पाठकों को उपलब्ध करा रहें है। इसका जितना प्रचार-प्रसार वितरण और दान होगा उतना ही जन देवता का कल्याण होगा। आशा है स्वामी जी कृपा और अम्बा की दया हम सभी पर वरसती रहेगी। त्रुटियों पर हमारा ध्यान विद्वान पाठक केंद्रित करेंगे।

प्रकाशक-निवेदक :
श्रीमद्भागवतकथा ज्ञानयज्ञ समीति
उसराहा, बेलदौर, खगड़िया

अतिसंक्षिप्त पूजन और दुर्गापाठ विधि

भारतीय आध्यात्मिक वाङ्मय के वैदिक और तांत्रिक उपासना में सभी देवी देवताओं के पूजन-अर्चना का अत्यन्त सुविस्तृत विधान मिलता है। इनमें पंचोपचार, दशोपचार, द्वादशोपचार, षोडशोपचार, अष्टादशोपचार चतुःषष्टि उपचार या राजोपचार तथा मानसोपचार ये प्रमुख उपचार कहे जाते हैं। सभी देवी देवता की अपेक्षा शक्ति की आराधना के व्यापक आयाम हैं। शक्ति-आराधना में भी उपरोक्त सभी उपचारों से पूजन का विधान है। इनमें से विशिष्ट साधकों के लिए राजोपचार श्रेष्ठ है और फिर अतिविशिष्ट अध्यात्म-साधकों या फिर भक्ति-भाव से युक्त साधकों के लिए मानसोपचार या भावोचार पूजन सर्वश्रेष्ठ माना जाता है।

मानसोपचार को छोड़कर वैदिक पद्यति में शेष सभी उपचारों में वस्तु की अनिवार्यता तथा वैदिक मंत्रों के द्वारा प्रत्येक वस्तुओं से पूजन-कार्य सम्पन्न होता है। तांत्रिक पद्यति में वस्तुओं के अर्पण के क्रम में तांत्रिक मंत्रों (कतिपय वैदिक मंत्रों) या फिर नाम-मंत्रों से पूजन क्रियाएँ सम्पन्न होती है। वैदिक और तांत्रिक दोनों पद्यतियों में सकाम या कामना से यक्तु भक्तों के लिए विविध वस्तुओं एवं अर्पण के लिए उपयुक्त मंत्रों की आवश्यकता मानी जाती है। निष्काम यानी कामना से रहित भक्त-साधकों के लिए वस्तु एवं मंत्रों की आवश्यकता पूजन क्रम में है भी और नहीं भी है। यदि सामर्थ्य और उपलब्धि है तो ठीक है पर यदि नहीं है तो वस्तु एवं मंत्रों की अनिवार्यता भी नहीं है। भारतीय उपासना पद्धति में वेद के तीन कांड-कर्मकाण्ड, ज्ञानकाण्ड और उपासना (भक्ति) कांड इन सभी का आश्रय लिया जाता है। तंत्र-जगत में भी बाम, दक्षिण और दिव्यमार्ग इन तीनों पद्यतियों का आश्रय लिया जाता है। मिश्र पद्यति में तीनों के समाश्रयण में भक्ति भाव और दिव्य भाव की मुख्यता रह जाती है। वेदोक्त पद्यतियों में भी सकाम भक्तों के लिए तो कर्मकाण्ड अनिवार्य है। पर उत्तरोत्तर आगे बढ़ने पर ज्ञान और भक्ति की मुख्यता रह जाती है। इसमें भी भक्ति को सभी शास्त्रों और आचार्यों ने सर्वश्रेष्ठ माना है। इसी प्रकार तंत्रशास्त्रों में भी दिव्य-भाव को सर्वश्रेष्ठ माना गया है। मिश्र मार्ग में सभी के सम्मिश्रण से दिव्य भक्ति भाव का भास्कर उदित

होता है और इसे वेद तथा तंत्र में अतिमहत्त्व दिया गया है। निष्काम भक्तों साधकों के लिए यही दिव्यभक्ति भाव उत्कृष्ट माना गया है जिसे हमारे आध्यात्मिक-साहित्य में महाभाव या पराभक्तिभाव या सहज भक्तिभाव या प्रेमाभक्ति भाव आदिनामों से अभिहित किया गया है। अत: निष्कर्ष निकलता है कि हमें तीनों वैदिक काण्डों का सम्मान एवं तंत्रमार्गों की उपासना पद्यतियों का यथासमय सम्मान करते हुए वैयक्तिक-साधना या निजी-आराधना या आत्म-उपासना में दिव्य भक्ति-भाव का ही मूलत: आश्रय ग्रहण करना चाहिए। शास्त्रों में भी मानसोपचार को श्रेष्ठ माना गया है और वहाँ विविध वस्तुओं की कल्पना केवल मानस में करके उसका मानसिक-अर्पण देवताओं को किया जाता है। किंवहुना यहाँ भी भक्ति की ही प्रधानता है। अत: अब विशेष निष्कर्ष की ओर न जाकर भक्ति-भाव से जगदम्बा दुर्गा या किसी देवी देवता की पूजा-अर्चना-आराधना-उपासना करने वाले साधकों के लिए कर्मकाण्ड के अतिसंक्षिप्त पूजन-पद्यति का वर्णन करना उपयुक्त होगा।

सर्वप्रथम नित्यक्रिया से निवृत होकर पूजा स्थल पर उपलब्ध पूजन-सामग्री लेकर बैठ जाएँ। फिर अपने दाएँ हथेली में तीन बार जल लेकर अपने इष्टदेव का स्मरण आचमन करें यानी पी ले। फिर अपने उपर और पूजन वस्तु पर अपने दृष्टदेव का मंत्र या नाम लेकर अपने उपर और सामान के उपर जल छिड़क लें। फिर पृथ्वी और आसन को क्षमा-याचना पूर्वक प्रणाम कर लें। इसके बाद अपने मस्तक पर अपने सम्प्रदाय के अनुसार या फिर भस्म रोली या सिंदूर का तिलक लगा लें चावल भी दे दे। फिर शिखा-स्थान रटीक यानी ब्रह्मरंध्र को हाथ से स्पर्श कर गायत्री या चिद्रूपिणी मंत्र या इष्टदेव का मंत्र या गुरु-मंत्र का तीन बार उच्चारण करें ताकि सहस्रसार चक्र तक कुण्डलिनी स्वत: जाग्रत होकर पहुँच जाय। उच्चारण के क्रम में भावना यह रखनी चाहिए कि मेरे गुरुदेव और इष्टदेवता मेरे मस्तक पर यानी ब्रह्मरंध्र या सहस्रार पर विराजमान हो गए। फिर तीन बार गायत्री या सावित्री मंत्र से या अपने इष्टमंत्र गुरु-मंत्र का स्मरण करते हुए पूरक कुंभकरेचक प्राणायाम करे लें। फिर दीक्षित हो तो अपने गुरुदेव का या किसी भगवान या भगवती का स्मरण जप ध्यान कर लें फिर अपने गुरु-प्रदत्त मंत्र या किसी भी शास्त्र सम्मत ईश्वरीय मंत्र का जप ध्यान कर लें। फिर गणेश-अम्बिका

माता-पिता एवं सभी देवी-देवता का स्मरण करते हुए उन्हें प्रणाम करते हुए (उपलब्ध हो तो मंत्रों से संकल्प हेतु सभी सामान लेकर) अन्यथा केवल जल या फूल हाथ में लेकर या मानसिक रूप से संकल्प करें या बोलकर -

"हे माता दुर्गे! मैं उपलब्ध वस्तुओं, भावों, मंत्रों स्तुतियों आदि के द्वारा तुम्हारी पूजा-अर्चना उपासना कर रहा हूँ। माते! आप मेरा कल्याण करें।"

फिर माता का और अन्य सभी देवों का चित्र पूजा घर या स्थल में या मंदिर में रखा हो वहाँ बढ़िया से फूल आदि से सजा दें। उपलब्ध वस्तुओं का नैवेद्य चढ़ा दे। दीपक और धूपवती या अरवत्ती जला दें। फिर एक फूल या वेलपत्र लेकर सभी देवताओं का स्मरण कर माँ का ध्यान करें और फूल को माँ के आगे रख दें या अपने मस्तक पर रख दे या दाएँ कान पर भी रख लें और भावपूर्वक मन में बोले

"माँ मैं तुम्हें बुला रहा हूँ। आओ और इस मेरे दिये हुए पवित्र आसन पर विराजों मैं तुम्हारी पूजा-अर्चना भाव से करूँगा।"

किसी पात्र में पाँच बार जल छोड़ते हुए मन ही मन बोलें -

"यह पवित्र जल तुम्हारे पाँव-धोने, अर्ध्यलेने, आचमन करने, स्नान करने एवं पून: आचमन करने के लिए अर्पित कर रहा हूँ।"

फिर चार अंगुल का माली धागा तोड़कर अपित करते हुए भावना से बोले -

"माँ दुर्गे! यह उपलब्ध सूत्र-वस्त्र, सौभाग्य सूत्र और उपवस्त्र अर्पित कर रहा हूँ।"

फिर फूल में चंदन चढ़ावे देवि! अर्पित चंदन को ग्रहण करो। इसी प्रकार फूल में हरिद्रा (हरदी) चूर्ण, कुंकुम (रोली); सिन्दूर, काजल, दूर्वा (दूमड़ी), बेलपत्र, शभी पत्र, फूल, उपलब्ध हो तो फूल की माला, सुगन्धित द्रब्य (सेंन्ट या इत्र), अबीर, गुलाल चढ़ावें। फिर जहाँ धूप-दीप जलता हो वहाँ चावल या जल या पूष्प दे दें। नैवेद्य सामने रख दें या रखे हुए नेवैद्य पर 1 फूल या बेलपत्र रख दें और भाव रखें -

"हे अम्बिके इस उपलब्ध नैवेद्य को ग्रहण करो तुम्हारी वस्तु तुम्हें ही अर्पित

कर रहा हूँ।" इसके बाद 5 बार जल दें।

इसके बाद एक सम्पूर्ण काल अर्पित करें। कामना करें कि "माँ मुझे भी पूर्ण फल प्रदान करो। तत्पश्चात् 1 पान का बीड़ा लगाकर उसमें -नागकेश्र, कपूर, जावित्री, कत्था, लौंग, इलाइची, सुपाड़ी देकर माँ को अर्पित करें। इतना ना हो सके तो 1 पान के पत्ते पर सुपाड़ी लौंग इलाइची और थोड़ा कपूर रखकर देवि के आगे चढ़ा दें। इसके बाद 1 सिक्का या जो बन पड़े वो द्रव्य-दक्षिणा अर्पित करें। फिर पाठ करें -

"यहाँ माता दुर्गा के भावोचार पूजन की संक्षिप्त विधि भक्तों के लिए वर्णित है। यहाँ यह कल्पना करके अर्पित करें कि मैं दुर्गा के साथ सभी देवताओं को अर्पित कर रहा हूँ। पूजन की विशेष जानकारी की इच्छावाले साधक गीताप्रेस के नित्य कर्मपूजा प्रकाश आदि ग्रंथों को देखें या फिर विज्ञ आचार्यों से सम्पर्क करें। संभव है अगले संस्करण में इस विधि के साथ विस्तृत पूजन विधि प्रकाशित हो"

श्रीदुर्गासप्तशती पाठ विधि

श्रीदुर्गा सप्तशती की पाठ-विधियों का वर्णन विभिन्न तंत्रादि ग्रंथों में विविध रूपों में मिलता है। यहाँ गीता-प्रेस द्वारा प्रकाशित एवं अन्य ग्रंथों तथा अनेकानेक सिद्ध-साधकों के अनुभव से निकले हुए वचनामृतों के आधार पर सबके हित के लिए सरल एवं सारगर्भित विधि प्रस्तुत किया जा रहा है।

सर्व प्रथम पुस्तक को अपने से उँचे आसने (पीठा/पाटा/या छोटे टेबुल) पर एक लाल कपड़ा बिछाकर रख दें। फिर उस पर पुस्तक (दुर्गासप्तशती को विराजमान करें। पुनः 1 फूल लेकर पुस्तक उपर रखकर या कहकर प्रणाम करें - "हे शब्दब्रह्मस्वरूपा महा सरस्वीरूपा श्री दुर्गा जी! आपको प्रणाम कर में पाठ का आरंभ करता हूँ।"

❑ सबसे पहले जो विधिवत् सम्पूर्ण पाठ अर्थात् षडंग तेरह अध्यायों का न्यासादि के साथ पाठ करके हैं या करना चाहते हैं उनके लिए पाठ का क्रम निर्दिष्ट कर रहा हूँ। -

सर्वप्रथम माँ का ध्यान करके ब्रह्मा, वशिष्ठ विश्वामित्र-इन

तीनों ऋषियों का ध्यान कर शापोद्धार यानी श्रीचंडिका-शाप-विमोचन मंत्रों का पाठ करें इसमें विनियोग जहाँ-जहाँ है वहाँ पढ़कर पृथ्वी पर जल गिरा दें या 1 फूल या थोड़ा अरवा चावल माँ के सामने रख दें। फिर क्रमशः शोपाद्धार, सिद्धि-कुंजिका-स्तोत्रम, श्रीदेव्याः कवचम्, अर्गला-स्तोत्रम्, कीलक-स्तोत्रम्, वेदोक्त रात्रि-सूक्तम्, तंत्रोक्त रात्रिसूक्तम्, श्रीदेव्यथर्वशीर्षम्, श्री नवार्ण मंत्र जप विधि सप्तशती न्यास कर दुर्गा का ध्यान करके 1 फूल माँ को अर्पित करें और क्रमशः एक से तेरह अध्याय का पाठ मीठे स्वर में, अक्षरों के स्पष्ट उच्चारण, एक लयता के साथ धैर्यपूर्वक करें। तेरहवां अध्याय समाप्त होने पर फिर श्री नवार्ण मंत्र जप विधि, सप्तशती न्यास, ध्यान, ऋग्वेदोक्त देवी सूक्तम्, तंत्रोक्त देवी सूक्तम्, प्राधानिक रहस्य, वैकृतिक रहस्य, मूर्तिरहस्य का पाठ कर आरती और क्षमा प्रार्थना करें। इच्छा हो और समय हो दिन में ही या फिर रात्रि में, दुर्गामानसपूजा, दुर्गा-द्वा-त्रिशन्-नाममाला (32 नाम), दुर्गाष्टोत्तर शतनाम् (108 नाम) श्री रामकृत दुर्गास्तोत्र, श्रीकृष्णकृत दुर्गा स्तोत्र, श्रीदुर्गा आपदुद्धार स्तोस्त्र, श्री भवान्यष्टकम् श्रीशंकराचार्यकृत क्षमापन स्तोत्र के बाद आरत मंत्रपुष्पांजलि और क्षमा प्रार्थना करें। पाठ के बाद या दुर्गा पूजन के बाद 1 आचमनी जल माँ के पास पाय में या भूमि घर गिरा दें। भाव यह रहे कि "हे माता! मेरे द्वारा किया गया पूजन और पाठ आपके साथ सभी देवगणों की प्रसन्नता के लिए है; मेरा कुछ नहीं।" अंत में माता को भक्तिपूर्वक प्रणाम कर प्रसाद उठाकर ग्रहण करें और बाँट दें। नवरात्र के नौ दिनों तक इसी प्रकार करके दशमी को विसर्जन करें। पाठ का यह क्रम नौ दिन रात तक रहेगा। दशमी को अन्य पाठ करते हुए अध्याय में चौथा या पांचवाँ या ग्यारहवाँ किसी 1 अध्याय का पाठ करें क्योंकि ये स्तुति-अध्याय हैं। संभव हो तो पूरे अध्याय का भी पाठ किया जा सकता है।

❑ पाठ का दूसरा नियम उनके लिए जो प्रतिदिन तेरह अध्यायों का पाठ नहीं कर सकते हैं वे शेष पाठ के नियम उपर की विधि से

करके अध्याय पाठ में प्रथम दिन में 2 से 4 अध्याय मध्यमचरित फिर दूसरे दिन प्रथम चरित्र यानी केवल प्रथम अध्याय तीसरे दिन 5 से 13 अध्याय। फिर इसी क्रम को दुहरावें तो 9 दिनों में तीन-तीन दिन के अन्तराल से 3 सम्पूर्ण पाठ पूरा होता है। फिर अध्याय समाप्त होने पर शेष पूर्व निर्देश से करें।

❑ पाठ की तीसरी विधि है कि प्रथम दिन प्रथम चरित यानी प्रथम अध्याय, दूसरे दिन मध्यम चरित यानी 2 से 4 थे अध्याय तक, तीसरे दिन उत्तरचरित यानी 5वें से 13वें अध्याय तक, फिर इसी क्रम को दुहरा दें। इस प्रकार 9 दिन में तीन पाठ सम्पन्न होता है। इसमें भी अध्याय पाठ के पहले और बाद का पाठ-जपादि पूर्व निर्देश से ही करें।

❑ पाठ की चौथी विधि है जो शास्त्रों में तो वर्णित नहीं है किन्तु आम-आवाम जनमानस के लाभ के लिए अभ्यासी और रूचि-लेने वाले सामान्य लोगों के लिए श्रेष्ठ शाक्तोपासक बताते हैं - विधि यह है कि नौ दिन में एक सम्पूण पाठ यानी 13 अध्याय का पाठ करना इसका क्रम है पहले दिन 1 अध्याय, दूसरे दिन 2, और 3 अध्याय, तीसरे दिन 4 था अध्याय, चौथे दिन 5 वाँ अध्याय, पांचवें दिन 6 और 7 अध्याय छठे दिन 8 वाँ अध्याय, सातवें दिन 9 वाँ तथा 10 वाँ अध्याय, आठवें दिन - 11 वाँ एवं 12 वाँ अध्याय, नौवें दिन - 13 वाँ अध्याय पाठ करना है। शेष पाठ कार्य यानी अध्याय पाठ के पहले और बाद में उपर लिखित विधियों से ही पाठ कार्य करें।

❑ पांचवी विधि जो सबसे सरल और जिज्ञासुओं के लिए क्रमशः पहले शपोद्धार फिर सिद्ध कुजिका, फिर कवच, अर्गला, कीलक इसके बाद चौथी विधि से अध्याय-क्रम पाठ फिर तीनों रहस्य इच्छा हो तो कोई भी नाम माला या स्तुति फिर आरती और क्षमा-प्रार्थना।

इनमें से समय, इच्छा, अधिकार, योग्यता क्षमता के अनुसार किसी भी विधि से साधक पाठ कर सकता है। विशेष विधि अगले संस्करण में जुटेगा।

विषय-सूची

क्रं०	अध्याय	पृ० सं०
1.	आत्म-निवेदन	3
2.	प्रकाशकीय	9
3.	पूजन और दुर्गापाठ विधि	10
4.	श्रीचण्डिकाशापविमोचन	17
5.	श्रीसिद्धकुंजिकास्तोत्रम्	20
6.	श्रीदेव्याः कवचम्	22
7.	श्री अर्गला-स्तोत्रम्	28
8.	श्री कीलक-स्तोत्रम्	31
9.	श्री-वेदोक्तम् रात्रिसूक्तम्	33
10.	श्री तन्त्रोक्तं रात्रिसूक्तम्	34
11.	श्रीदेव्यथर्व-शीर्षम्	36
12.	प्रथमोऽध्याय	50
13.	द्वितीयोऽध्याय	60
14.	तृतीयोऽध्याय	68
15.	चतुर्थोऽध्याय	73
16.	पञ्चमोऽध्याय	79
17.	षष्ठोऽध्याय	88
18.	सप्तमोऽध्याय	91
19.	अष्टमोऽध्याय	94
20.	नवमोऽध्याय	101
21.	दशमोऽध्याय	106
22.	एकादशोऽध्याय	110
23.	द्वादशोऽध्याय	116
24.	त्रयोदशोऽध्याय	120
25.	श्री नवार्ण मंत्र जपविधि	123
26.	श्रीऋग्वेदोक्तदेवीसूक्तम्	133
27.	प्राधानिक रहस्यम्	138
28.	वैकृतिकम् रहस्यम्	142
29.	श्री मूर्ति-रहस्यम्	146
30.	श्रीदेवीमयी (देवी-स्तुति)	149
31.	श्रीसप्त श्लोकी दुर्गा स्तोत्रम्	150
32.	श्रीदुर्गा मानस-पूजा	152
33.	श्रीदुर्गाद्वात्रिंशन्नामाला	155
34.	दुर्गाष्टोत्तरशतनामस्तोत्रम्	156
35.	श्रीचण्डिका-हृदयम्	158
36.	श्रीचण्डिकाम् दलम्	161
37.	श्रीरामकृत दुर्गास्तुतिः	164
38.	श्रीकृष्णकृत-दुर्गास्तोत्रम्	166
39.	श्रीदुर्गाष्टकम्	169
40.	श्रीभवान्यष्टकम्	171
41.	श्रीमदाद्य-शंकराचार्यकृत	173
42.	आरती	175-183
43.	क्षमा-प्रार्थना	184

श्रीचण्डिका-शाप-विमोचन मंत्र

(शापोद्धार)

विनियोग :-

ॐ अस्य श्री चण्डिकाया ब्रह्म-वसिष्ठ-विश्वामित्र-शाप-विमोचन मंत्रस्य वसिष्ठ-नारद-संवाद-साम-वेदाधि-पति-ब्रह्माण ऋषय: सर्वे- श्वर्य- कारिणी श्रीदुर्गा देवता चरित्र-त्रयम् बीजम् ह्रीम् शक्ति:त्रिगुणात्म-स्वरूप चण्डिका-शाप-विमुक्तौ मम संकल्पित-कार्य सिद्ध्यर्थे जपे विनियोग:।

ॐ (ह्रीं) रीं रेत: स्वरूपिण्यै मधु-कैटम-मर्दिन्यै ब्रह्म-वसिष्ठ-विश्वामित्र-शापाद् विमुक्ता भव।।1।।

ॐ श्रीं बुद्धि स्वरूपिण्यै महिषासुर-सैन्य-नाशिन्यै ब्रह्म-वसिष्ठ-विश्वामित्र-शापाद् विमुक्ता भव।।2।।

ॐ रं रक्त-स्वरूपिण्यै महिषासुर-मर्दिन्यै ब्रह्म-वसिष्ठ-विश्वामित्र-शापाद् विमुक्ता भव।।3।।

ॐ क्षुं क्षुधा स्वरूपिण्यै देव-वंदितायै ब्रह्म-वसिष्ठ-विश्वामित्र-शापाद् विमुक्ता भव।।4।।

ॐ छां छाया - स्वरूपिण्यै दूत -संवादिन्यै ब्रह्म-वसिष्ठ-विश्वामित्र-शापाद् विमुक्ता भव।।5।।

ॐ शं शक्ति-स्वरूपिण्यै धूम्र-लोचन-घातिन्यै ब्रह्म-वसिष्ठ-विश्वामित्र-शापाद् विमुक्ता भव।।6।।

ॐ तृं तृषा- स्वरूपिण्यै चण्ड - मुण्ड-वध-कारिण्यै ब्रह्म-वसिष्ठ-विश्वामित्र-शापाद् विमुक्ता भव।।7।।

ॐ क्षां क्षान्ति-स्वरूपिण्यै रक्तबीज-वध-कारिण्यै ब्रह्म-वसिष्ठ-विश्वामित्र-शापाद् विमुक्ता भव।।8।।

ॐ जां जाति-स्वरूपिण्यै निशुम्भ-वध-कारिण्यै ब्रह्म-वसिष्ठ-विश्वामित्र-शापाद् विमुक्ता भव।।9।।

ॐ लं लज्जा-स्वरूपिण्यै शुम्भ-वध-कारिण्यै ब्रह्म-वसिष्ठ-विश्वामित्र-शापाद् विमुक्ता भव।।10।।

ॐ शां शान्ति - स्वरूपिण्यै देव - स्तुत्यै ब्रह्म-वसिष्ठ-विश्वामित्र-शापाद् विमुक्ता भव।।11।।

ॐ श्रं श्रद्धा - स्वरूपिण्यै सफल -फल-दात्र्यै ब्रह्म-वसिष्ठ-विश्वामित्र-शापाद् विमुक्ता भव।।12।।

ॐ कां कान्ति - स्वरूपिण्यै राजवर -प्रदायै ब्रह्म-वसिष्ठ-विश्वामित्र-शापाद् विमुक्ता भव।।13।।

ॐ मां मातृ - स्वरूपिण्यै अनर्गल - महिम - सहितायै ब्रह्म-वसिष्ठ-विश्वामित्र-शापाद् विमुक्ता भव।।14।।

ॐ ह्रीं श्रीं दुं दुर्गायै सं सर्वे-श्वर्य - कारिण्यै ब्रह्म-वसिष्ठ-विश्वामित्र-शापाद् विमुक्ता भव।।15।।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं नम: शिवायै अभेद्य-कवच-स्वरूपिण्यै ब्रह्म-वसिष्ठ-विश्वामित्र-शापाद् विमुक्ता भव।।16।।

ॐ क्रीं काल्यै कालि ह्रीं फट् स्वाहायै ऋग्वेद-स्वरूपिण्यै
ब्रह्म-वसिष्ठ-विश्वामित्र-शापाद् विमुक्ता भव।।17।।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं महाकाली - महालक्ष्मी- महासरस्वती-
स्वरूपिण्यै त्रिगुणात्मिकायै दुर्गा-देव्यै नमः।।18।।

इत्येवम् हि महा-मन्त्रान् पठित्वा परमेश्वर।
चण्डी-पाठम् दिवा रात्रौ कुर्या-देव न संशयः।।19।।

एवम् मन्त्रम् न जानाति चण्डी-पाठम् करोति यः।
आत्मानम् चैव दातारम् क्षीणम् कुर्यान्न संशयः।।20।।

•••

श्रीसिद्ध-कुंजिका-स्तोत्रम्

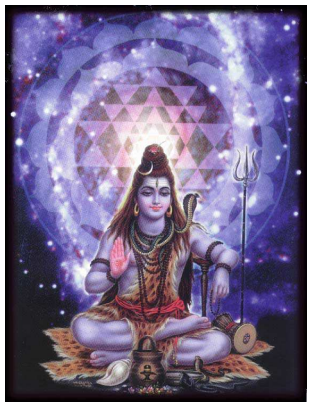

शिव उवाच

शृणु देवि! प्र-वक्ष्यामि कुंजिका-स्तोत्र-मुत्तमम्।
येन मन्त्र-प्रभा वेण चण्ड-जापः शुभो भवेत्।।1।।

ार्गला-स्तोत्रम् कीलकम न रहस्यकम्।
ा ध्यानम् च न न्यासो न च वाऽर्चनम्।।2।।

ठ-मात्रेण दुर्गा-पाठ-फलम् लभेत्।
रम् देवि! देवा-नामपि-दुर्लभम्।।3।।

प्रयत्नेन स्व-योनि-रिव पार्वति।
मारणम् मोहनम् वश्यम् स्तंभ-नोच्चाट-नादिकम्।।
पाठ-मात्रेण संसिद्ध-येत् कुंजिका-स्तोत्र-मुत्तमम्।।4।।

मंत्र - ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे।।
ॐ ग्लौं हुं क्लीं जूं सः ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल
प्रज्वल ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ज्वल हं सं लं क्षं फट् स्वाहा।

नमस्ते रूद्र-रूपिण्यै नमस्ते मधु-मर्दिनी।
नमः कैटभ-हारिण्यै नमस्ते महिषा-मर्-दिनी।।1।।

नमस्ते शुम्भ-हन्त्र्यै च निशुम्भा सुर-घातिनी।।2।।

जाग्रतम् हि महादेवि! जपम् सिद्धम् कुरुष्व मे।
ऐंकारी सृष्टि-रूपायै ह्रींकारी प्रति-पालिका।।3।।

क्लींकारी काम-रूपिण्यै बीज-रूपे नमोऽस्तु ते।
चामुण्डा चण्डघाती च यैकारी वरदायिनी।।4।।

विच्चे चाभयदा नित्यम् नमस्ते मंत्र-रूपिणी।।5।।

धां धीं धूं धूर्जटेः पत्नी वां वीं वूं वाग-धीश्वरी।
क्रां क्रीं क्रूं कालिका देवि शां शीं शूं मे शुभम् कुरु।।6।।

हुं हुं हुंकार-रूपिण्यै जं जं जं जम्भ-नादिनी।
भ्रां भ्रीं भ्रूं भैरवी भद्रे भवान्यै ते नमो नमः।।7।।

अं कं चं टं तं पं यं शं वीं दुं ऐं वीं हं क्षं।
धिजाग्रं धिजाग्रं त्रोटय त्रोटय दीप्तम् कुरु कुरु स्वाहा।।8।।

पां पीं पूं पार्वती पूर्णा खां खीं खूं खेचरी तथा।
सां सीं सूं सप्तशती देव्या मंत्र-सिद्धिम् कुरुष्व मे।।9।।

इदम् तु कुंजिका-स्तोत्रम् मंत्र-जागर्ति-हेतवे।
अभक्ते नैव दातव्यम् गोपितम् रक्ष पार्वति।।10।।

यस्तु कुंजिकया देवि हीनाम् सप्तशतीम् पठेत्।
न तस्य जायते सिद्धि-ररण्यै रोदनम् यथा।।11।।

श्री सिद्ध-कुंजिका-स्तोत्रम् श्रीदुर्गार्पण-मस्तु

श्रीदेव्याः कवचम्

ॐ अस्य श्रीचण्डी - कवचस्य ब्रह्मा ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः, चामुण्डा देवता, अंग - न्यासोक्त मातरो बीजम् दिग्बन्ध - देवतास् - तत्त्वम् श्री जगदम्बा - प्रीत्यर्थे सप्तशती - पाठ- अंगत्वेन जपे विनियोगः।

।।ॐ नमश्चण्डिकायै।।

मार्कण्डेय उवाच

ॐ यद् गुह्यम् परमम् लोके सर्व-रक्षा-करम् नृणाम्।
यन्न कस्य-चिदा-ख्यातम् तन्मे ब्रूहि पितामह।।1।।

ब्रह्मोवाच

अस्ति गुह्य-तमम् विप्र सर्व-भूतोप-कारकम्।
देवास्तु कवचम् पुण्यम् तच्-छृणुष्व महामुने।।2।।

प्रथमम् शैलपुत्री च द्वितीयम् ब्रह्मचारिणी।
तृतीयम् चन्द्र घण्टेति कूष्माण्डेति चतुर्थकम्।।3।।

पंचमम् स्कन्द-मातेति षष्ठम् कात्या-यनीति च।
सप्तमम् काल-रात्रीति महा-गौरीति चाष्ट-मम्।।4।।

नवमम् सिद्धि-दात्री च नव दुर्गाः प्र-कीर्ति-ताः।
उक्तान्ये-तानि नामानि ब्रह्मणैव महात्मना।।5।।

अग्निना दह्य-मानस्तु शत्रु-मध्ये गतो रणे।
विषमे दुर्गमे चैव भयार्त्ताः शरणम् गताः।।6।।

न तेषाम् जायते किंचिद-शुभम् रण-संकटे।
नापदम् तस्य पश्यामि शोक-दुःख-भयम् न हि।।7।।

यैस्तु भक्त्या स्मृता नूनम् तेषाम् वृद्धिः प्रजायते।
ये त्वाम् स्मरन्ति देवेशि रक्षसे तान्न संशयः।।8।।

प्रेत-संस्था तु चामुण्डा वाराही महिषा-सना।
ऐन्द्री गज-समा-रूढ़ा वैष्णवी गरूडासना।।9।।

माहेश्वरी वृषारूढा कौमारी शिखि-वाहना।
लक्ष्मीः पद्मासना देवी पद्म-हस्ता हरिप्रिया।।10।।

श्वेत-रूप-धरा देवी ईश्वरी वृष -वाहना।
ब्राह्मी हंस-समा-रूढा सर्वा-भरण-भूषिता।।11।।

इत्येता मातरः सर्वाः सर्व-योग-समन्विता।
नाना-भरण-शोभाढ्या नाना-रत्नोप-शोभिता।।12।।

दृश्यन्ते रथ-मारूढा देव्यः क्रोध-समा-कुलाः।
शंखम् चक्रम् गदाम् शक्तिम् हलम् च मुसला-युधम्।।13।।

खेटकम् तोमरम् चैव परशुम् पाशमेव च।
कुन्ता-युधम् त्रिशूलम् च शारंग-मायुध-मुत्तमम।।14।।

दैत्या नाम् देह-नाशाय भक्तानाम्-भयाय च।
धार-यन्त्या-युधा-नीत्थम् देवानाम् च हिताय वै।।15।।

नमस्तेऽस्तु महा-रौद्रे महा-घोर-पराक्रमे।
महाबले महोत्साहे महा-भय-विनाशिनि।।16।।

त्राहि माम् देवि दुष्-प्रेक्ष्ये शत्रूणाम् भय-वर्धिनि।
प्राच्याम् रक्षतु मामैन्द्री आग्नेय्या-मग्नि-देवता।।17।।

दक्षिणे-अवतु वाराही नैर्-ऋत्याम् खड्ग-धारिणी।
प्रती च्याम् वारुणी रक्षेद् वायव्याम् मृग-वाहिनी।।18।।

उदीच्याम् पातु कौमारी ऐशान्याम् शूल-धारिणी।
ऊर्ध्वम् ब्रह्माणि मे रक्षेद्-अधस्ताद् वैष्णवी तथा।।19।।

एवम् दश दिशो रक्षेद्-चामुण्डा शव-वाहना।
जया मे चाग्र-तः पातु विजया पातु पृष्ठतः।।20।।

अजिता वाम-पार्श्वे तु दक्षिणे चाप-राजिता।
शिखा- मुद्यो-तिनी रक्षेदुमा मूर्ध्नि व्यवस्थिता।।21।।

मालाधरी ललाटे च भ्रुवौ रक्षेद् यशस्विनी।
त्रिनेत्रा च भ्रुवोर-मध्ये यम-घण्टा च नासिके।।22।।

शंखिनी चक्षु-षोर-मध्ये श्रोत्र-योर्-द्वार-वासिनी।
कपोलौ कालिका रक्षेत्-कर्ण-मूले तु शांकरी।।23।।

नासिका-याम् सुगन्धा च उत्तरोष्ठे च चर्चिका।
अधरे चामृत-कला जिह्वा-याम् च सरस्वती।।24।।

दन्तान् रक्षतु कौमारी कण्ठ - देशे तु चण्डिका।
घण्टिकाम् चित्र-घण्टा-च महा-माया च तालुके।।25।।

कामाक्षी चिबुकम् रक्षेद् वाचम् मे सर्व-मंगला।
ग्रीवा-याम् भद्रकाली च पृष्ठ-वंशे धनुर्-धरी।।26।।

नीलग्रीवा वहिः कण्ठे नलिकाम् नल-कूबरी।
स्कन्धयोः खड्गिनी रक्षेद् बाहू मे बज्र-धारिणी।।27।।

हस्तयोर्-दण्डिनी रक्षे-दम्बिका चांगु-लीषु च
नखाञ्-छूलेश्वरी रक्षेत्-कुक्षौ रक्षेत्-कुलेश्वरी।।28।।

स्तनौ रक्षेन्- महादेवी मनः शोक-विनाशिनी।
हृदये ललिता देवी उदरे शूल-धारिणी।।29।।

नाभौ च कामिनी रक्षेद् गुह्यम् गुह्येश्वरी तथा।
पूतना कामिका मेढ्रम गुदे महिष-वाहिनी।।30।।

कट्याम् भगवती रक्षेत्-जानुनी विन्ध्य-वासिनी।
जंघे महाबला रक्षेत्-सर्व-काम-प्रदायिनी।।31।।

गुल्फयोर् नारसिंही च पाद-पृष्ठे तु तैजसी।
पादांगु-लीषु श्री रक्षेत् पादा-धस्तल-वासिनी।।32।।

नखान् द्रंष्ट्रा-कराली च केशांश्-चैवोर्ध्व-केशिनी।
रोम कूपेषु कौबेरी त्वचम् वागीश्वरी तथा।।33।।

रक्त-मज्जा-वसा-मांसा-न्यस्थि-मेदांसि पार्वती।
अन्त्राणि काल-रात्रिश्च पित्तम् च मुकुटेश्वरी।।34।।

पद्मा-वती पद्म-कोशे कफे चूड़ा-मणिस्-तथा।
ज्वाला-मुखी नख-ज्वाला-मभेद्या सर्व-संधिषु।।35।।

शुक्रम् ब्रह्माणि मे रक्षेत्-छायाम् छत्रेश्वरी तथा।
अहंकारम् मनो बुद्धिम् रक्षेन्-मे धर्म-धारिणी।।36।।

प्राणा-पानौ तथा व्यान-मुदानम् च समानकम्।
वज्र-हस्ता च मे रक्षेत् प्राणम् कल्याण-शोभना।।37।।

रसे रूपे च गंधे च शब्दे स्पर्शे च योगिनी।
सत्त्वम् रजस्-तमश्चैव रक्षेन्-नारायणी सदा।।38।।

आयु रक्षतु वाराही धर्मम् रक्षतु वैष्णवी।
यशः कीर्तिम् च लक्ष्मीम् च धनम् विद्याम् च चक्रिणी।।39।।

गोत्र-मिंद्राणि मे रक्षेत् पशून्मे रक्ष चण्डिके।
पुत्रान् रक्षेन्-महा-लक्ष्मी भार्याम् रक्षतु भैरवी।।40।।

पन्थानम् सुपथा रक्षेन्-मार्गम् क्षेमकरी तथा।
राज-द्वारे महा-लक्ष्मीर्-विजया सर्वतः स्थिता।।41।।

रक्षा-हीनम् तु यत्-स्थानम् वर्जितम् कवचेन तु।
तत्-सर्वम् रक्ष मे देवि जयन्ती पाप-नाशिनी।।42।।

पदमेकम् न गच्छेत् तु यदीच्छेत्-छुभ-मात्मनः।
कवचे-नावृतो नित्यम् यत्र यत्रैव गच्छति।।43।।

तत्र-तत्रार्थ-लाभश्च विजयः सार्व-कामिकः।
यम् यम् चिन्तयते कामम् तम् तम् प्राप्नोति निश्चितम्।
परमैश्वर्य-मतुलम् प्राप्-स्यते भूतले पुमान्।44।।

निर्भयो जायते मर्त्ये संग्रामेष्व-पराजितः।
त्रैलोक्ये तु भवेत्-पूज्यः कवचे-नावृतः पुमान्।।45।।

इदम् तु देव्याः कवचम् देवा नामपि दुर्लभम्।
यः पठेत् प्रयतो नित्यम् त्रिसन्ध्यम् श्रद्ध-यान्वितम्।।46।।

दैवी कला भवेत् तस्य त्रैलोक्येष्व-पराजितः।
जीवेद् वर्ष-शतम् साग्र-मप-मृत्यु-विवर्जितः।।47।।

नश्यन्ति व्याधयः सर्वे लूता-विस्फोट-कादयः।
स्थावरम् जंगमम् चैव कृत्रिमम् चापि यद्-विषम्।।48।।

अभि-चाराणि सर्वाणि मंत्र-यंत्राणि भूतले।
भूचराः खेचराश्-चैव जलजाश्-चोप-देशिकाः।।49।।

सहजा कुलजा माला डाकिनी शाकिनी तथा।
अन्तरिक्ष-चरा घोरा डाकि-न्यश्च महा-बलाः।।50।।

ग्रह-भूत-पिशा-शाश्च यक्ष-गंधर्व-राक्षसाः।
ब्रह्म-राक्षस वेताला: कूष्माण्डा भैरवादयः।।51।।

नश्यन्ति दर्शनात्-तस्य कवचे हृदि संस्थिते।
मानोन्नतिर् भवेद् राज्ञस्-तेजो-वृद्धि-करम् परम्।।52।।

यशसा वर्धते सोऽपि कीर्ति-मंडित-भूतले।
जपेत् सप्त-शतीम् चण्डीम् कृत्वा तु कवचम् पुरा।।53।।

यावद्-भूमण्डलम् धत्ते सशैल-वन-काननम्।
तावत् तिष्ठति मेदिन्याम् संततिः पुत्र-पौत्रिकी।।54।।

देहान्ते परमम् स्थानम् यत्-सुरैरपि दुर्लभम्।
प्राप नोति पुरुषो नित्यम् महा-माया-प्रसादतः।।55।।

लभते परमम् रूपम् शिवेन सह मोदते।।ॐ।।56।।

श्री देव्याः कवचम् दुर्गा-अर्पण-मस्तु

श्री अर्गला-स्तोत्रम्

ॐ अस्य श्री-अर्गला स्तोत्र-मंत्रस्य विष्णुः ऋषिः, अनुष्टुप छन्द, श्री महा-लक्ष्मीः देवता, श्री जगदम्बा-प्रीतये सप्तशती पाठ अंगत्वेन जपे विनियोगः।

।।ॐ नमश्चण्डिकायै।।

मार्कण्डेय उवाच

ॐजयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्री स्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते।।1।।

जय त्वम् देवि चामुण्डे जय भूतार्ति-हारिणि।
जय सर्व-गते देवि काल-रात्रि नमोऽस्तु ते।।2।।

मधु-कैटभ-विद्रा-विविधातृ-वरदे नमः।
रूपम् देहि जयम् देहि, यशो देहि द्विषो जहि।।3।।

महिषासुर-निर्णाशि भक्तानाम् सुखदे नमः।
रूपम् देहि जयम् देहि, यशो देहि द्विषो जहि।।4।।

रक्त-बीज-वधे देवि चण्ड-मुण्ड-विनाशिनी।
रूपम् देहि जयम् देहि, यशो देहि द्विषो जहि।।5।।

शुम्भ-स्यैव निशुम्भस्य धूम्रा-क्षस्य च मर्दिनी।
रूपम् देहि जयम् देहि, यशो देहि द्विषो जहि।।6।।

वन्दि-तांघ्रि-युगे देवि सर्व-सौभाग्य-दायिनि।
रूपम् देहि जयम् देहि, यशो देहि द्विषो जहि।।7।।

अचिन्त्य-रूप-चरिते सर्व-शत्रु-विनाशिनि।
रूपम् देहि जयम् देहि, यशो देहि द्विषो जहि।।8।।

नतेभ्यः सर्वदा भक्त्या चंडिके दुरितापहे।
रूपम् देहि जयम् देहि, यशो देहि द्विषो जहि।।9।।

स्तु-वदभ्यो भक्ति-पूर्वम्त्वाम् चण्डिके व्याधि-नाशिनि।
रूपम् देहि जयम् देहि, यशो देहि द्विषो जहि।।10।।

चण्डिके सतत् ये त्वामर्च-यन्तीह भक्तितः।
रूपम् देहि जयम् देहि, यशो देहि द्विषो जहि।।11।।

देहि सौभाग्य-मारोग्यम् देहि मे परमम् सुखम्।
रूपम् देहि जयम् देहि, यशो देहि द्विषो जहि।।12।।

विधेहि द्विषताम् नाशम् विधेहि बल-मुच्चकैः।
रूपम् देहि जयम् देहि, यशो देहि द्विषो जहि।।13।।

विधेहि देवि कल्याणम् विधेहि परमाम् श्रियम्।
रूपम् देहि जयम् देहि, यशो देहि द्विषो जहि।।14।।

सुरा-सुर-शिरो-रत्न-निघृष्ट चरणे-अम्बिके।
रूपम् देहि जयम् देहि, यशो देहि द्विषो जहि।।15।।

विद्या-वन्तम् यशस्वन्तम् लक्ष्मी-वन्तम् जनम् कुरू।
रूपम् देहि जयम् देहि, यशो देहि द्विषो जहि।।16।।

प्रचण्ड-दैत्य-दर्पघ्ने चण्डिके प्रणताय मे।
रूपम् देहि जयम् देहि, यशो देहि द्विषो जहि।।17।।

चतुर्-भुजे चतुर्-वक्त्र-संस्तुते परमेश्वरी।
रूपम् देहि जयम् देहि, यशो देहि द्विषो जहि।।18।।

कृष्णेन संस्तुते देवि शश्वद्-भक्त्या सदाम्बिके।
रूपम् देहि जयम् देहि, यशो देहि द्विषो जहि।।19।।

हिमाचल-सुता-नाथ-संस्तुते परमेश्वरि।
रूपम् देहि जयम् देहि, यशो देहि द्विषो जहि।।20।।

इन्द्राणी-पति-सद्भाव-पूजिते परमेश्वरि।
रूपम् देहि जयम् देहि, यशो देहि द्विषो जहि।।21।।

देवि प्रचण्ड-दोर्दण्ड-दैत्य-दर्प-विनाशिनि।
रूपम् देहि जयम् देहि, यशो देहि द्विषो जहि।।22।।

देवि-भक्त-जनोद्दाम-दत्ता-नन्दो-दयेऽम्बिके।
रूपम् देहि जयम् देहि, यशो देहि द्विषो जहि।।23।।

पत्नीम् मनोरमाम् देहि मनो-वृता-नुसारिणीम्।
तारिणीम् दुर्ग-संसार-सागरस्य कुलोद्-भवाम्।।24।।

इदम् स्तोत्रम् पठित्वा तु महा-स्तोत्रम् पठेन्नरः।
स तु सप्तशती-संख्या-वर-माप्नोति सम्पदा।।ॐ25।।

श्रीअर्गला-स्तोत्रम् श्री दुर्गा अर्पण-मस्तु

श्री कीलक-स्तोत्रम्

ॐ अस्य श्री-कीलक-मंत्रस्य शिव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, श्री महा-सरस्वती देवता, श्री जगदम्बा-प्रीत्यर्थम् सप्तशती-पाठ-अंगत्वेन जपे विनियोगः।

ॐ नमश्चण्डिकायै

मार्कण्डेय उवाच

ॐविशुद्ध-ज्ञान-देहाय त्रिवेदी-दिव्य-चक्षुषे।
श्रेयः प्राप्ति-निमित्ताय नमः सोमार्ध-धारिणे।।1।।

सर्व-मेतत्-विजा-नीयान्-मंत्राना-मभि-कीलकम्।
सोऽपि क्षेम-मवाप्-नोति सततम् जाप्य तत्परः।।2।।

सिद्ध-यन्त्युच्-चाटना-दीनि वस्तूनि सक लान्यपि।
एतेन स्तुवताम् देवी स्तोत्र-मात्रेण-सिद्ध्यति।।3।।

न मंत्रो नौषधम् तत्र न किंचिदपि विद्यते।
विना जाप्येन सिद्ध्येत् सर्व-मुच्चा-टना-दिकम्।।4।।

समग्रा ण्यपि सिद्ध्यन्ति लोक-शंका-मिमाम् हरः।
समाप्तिर् न च पुण्यस्य ताम् यथा-वन्नि यंत्र-णाम।।5।।

स्तोत्रम् वै चण्डिका-यास्तु तच्च गुप्तम् चकार सः।
समाप्तिर्-न च पुण्यस्य ताम् यथा-वन्नियंत्र-णाम्।।6।।

सोऽपि क्षेम-मवाप्-नोति सर्व-मेवम् न संशयः।
कृष्णा याम् वा चतुर्-दश्याम् अष्टम्याम्वा समाहितः।।7।।

ददाति प्रति-गृह्णाति नान्य-थैषा प्रसीदति।
इत्थम्-रूपेण कीलेन महादेवेन कीलितम्।।8।।

यो निष्कीलाम् विधायै-नाम् नित्यम् जपति संस्फुटम्।
स सिद्धः स गणः सोऽपि गंधर्वो जायते नरः।।9।।

न चैवाप्य-टतस्-तस्य भयम् क्वापीह जायते।
नामप-मृत्यु-वशम् याति मृतो मोक्ष-मवाप् नुयात्।।10।।

ज्ञात्वा प्रारभ्य कुर्वीत न कुर्वाणो विनश्यति।
ततो ज्ञात्वैव सम्पन्न-मिदम् प्रारभ्यते बुधैः।।11।।

सौभाग्यादि च यत्-किंचिद दृश्यते ललना-जने।
तत्-सर्वम् तत्-प्रसादेन तेन जाप्य-मिदम् शुभम्।।12।।

शनैस्तु जप्य-माने-अस्मिन स्तोत्रे सम्पत्ति-रूच्चकैः।
भवत्येव समग्रापि ततः प्रारभ्य-मेव तत्।।13।।

एश्वर्यम् यत्-प्रसादेन सौभाग्या रोग्य सम्पदः।
शत्रु ह्रानिः परो मोक्षः स्तूयते सा न किम् जनैः।।ॐ।।14।।

श्रीकीलक-स्तोत्रम् श्री-दुर्गा-अर्पण-मस्तु

श्री-वेदोक्तम् रात्रिसूक्तम्

ॐ रात्री-त्या-द्यष्टर-चस्य सूक्तस्य कुशिकः
सौभरो रात्रिर्-वा भारद्वाजो ऋषिः,
रात्रिर्-देवता, गायत्री द्दन्दः, देवी- महात्म्य पाठे विनियोगः।

ॐ रात्री व्यख्य-दायती पुरुत्रा देव्यक्ष-भिः।
विश्वा अधि श्रयोऽ-धित।।1।।

ज्येातिषा बाधते तमः।।2।।

निरु स्व-सार-मस्-कृतो-षसम् देव्या-यती।
अपेदु हासते तमः।।3।।

सा नो अद्य यस्या वयम् नि ते यामन्न- विक्ष्महि।
वृक्षे न वसतिम् वयः।।4।।

नि ग्रा-मासो अवि- क्षत नि पद्वन्तो नि पक्षिणः।
नि श्ये -नासश्-चिदर्- थिनः।।5।।

यावया वृक्यम् वृकम् यवय स्तेन मूर्म्ये।
अथा नः सुतरा भव।।6।।

उप मा पेपि-शत्तमः कृष्णम् व्यक्त-मस्थित।
उष ऋणेव यातय।।7।।

उप ते गा इवा-करम् वृ-णीष्व दुहितर् दिवः।
रात्रि स्तोमम् न जिग्युषे।।8।।

श्रीऋग्वेदोक्त रात्रिसूक्तम् अम्बा-अर्पणमस्तु

श्री तन्त्रोक्तं रात्रिसूक्तम्

विश्वे-श्वरीम् जगद्-धात्रीम् स्थिति-संहार-कारि-णीम्।
निद्राम् भगवतीम् विष्णोर्-तुलाम् तेजसः प्रभुः।।1।।

ब्रह्मोवाच।।2।।

त्वम् स्वाहा त्वम् स्वधा त्वम् हि वषट्कारः स्वरात्मिका।।3।।

सुधा त्व-मक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्-मिका स्थिता।
अर्ध -मात्रा-स्थिता नित्या यानु च्चार्या विशेषतः।।4।।

त्वमेव संध्या सावित्री त्वम् देवि जननी परा।
त्वयै-तत्-धार्यते विश्वम् त्वयै-तत्-सृज्यते जगत्।।5।।

त्वयै-तत्-पाल्यते देवि त्वमत्-स्यन्ते च सर्वदा।
विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वम् स्थिति-रूपा च पालने।।6।।

तथा संहृति-रूपान्ते जगतोऽस्य जगन्-मये।
महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः।।7।।

महामोहा च भवती महादेवी महासुरी।
प्रकृतिस्-त्वम् च सर्वस्य गुण-त्रय-विभाविनी।।8।।

काल रात्रिर्-महा-रात्रिर-मोह-रात्रिश्च दारूणा।
त्वम् श्रीस्-त्वमी श्वरी त्वम् ह्रीस्-त्वम् बुद्धिर-बोध-लक्षणा।।9।।

लज्जा पुष्टिस्-तथा तुष्टिस्-त्वम् शान्तिः क्षान्तिरेव च।
खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।।10।।

शंखिनी चापिनी बाण-भुशुण्डी-परिघा-युधा।
सौम्या सौम्य-तरा-शेष सौम्ये-भ्यस्-त्वति-सुन्दरी।।11।।

परा-पराणाम् परमा त्वमेव परमेश्वरी।
यच्च किंचित्- क्वचिद्-वस्तु सद-सद्वा-खिला त्मिके।।12।।

तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वम् किम् स्तूयसे तदा।
यया त्वया जगत्-स्रष्टा जगत्-पात्यत्ति यो जगत्।।13।।

सोऽपि निद्रा-वशम् नीतः कस्-त्वाम् स्तोतु-मिहेश्वरः।
विष्णुः शरीर-ग्रहण-मह-मीशान एव च।।14।।

कारि-तास्ते यतो-अतस्-त्वाम् कः स्तोतुम् शक्तिमान् भवेत्।
सा त्व-मित्थम् प्रभावैः स्वैरू-दारैर्-देवि-संस्तुता।।15।।

मोह-यैतौ दुरा-धर्षा-वसुरौ मधु-कैटभौ।
प्रबोधम् च जगत्-स्वामी नीयता-मच्युतो लघु।।16।।

बोधश्च क्रियता-मस्य हन्तु मेतौ महासुरौ।।17।।

तंत्रोक्तं रात्रिसूक्तं श्री अम्बा-अर्पण मस्तु

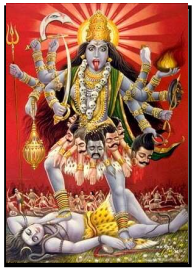

श्रीदेव्यथर्व-शीर्षम्

ॐ सर्वे वै देवा देवी-मुप-तुस्थुः कासि त्वम् महा-देवीति।।1।।

साब्र-वीत-अहम् ब्रह्म-स्व-रूपिणी। मत्तः प्रकृति-पुरु-
षात्-मकम् जगत्। शून्यम् चा-शून्यम् च।।2।।

अम्मा-नन्दा-नन्दौ। अहम् विज्ञाना-विज्ञाने।
अहम् ब्रह्मा-ब्रह्मणी वेदितव्ये। अहम् पंच-भूतान्य-पंच- भूतानि।
अह - मखिलम् जगत्।।3।।

वेदो ऽ-हम-वेदो ऽ-हम। विद्या-हमविद्या-हम्।
अजा- हमन-जाहम्। अधश्-चोर्-ध्वम्-च तिर्यक्- चाहम्।।4।।

अहम्-रुद्रे-भिर्-वसु-भिश्-चरामि। अहमा-दित्यै-रुत विश्व-देवैः।
अहम् मित्रा-वरुणा-वुभौ विभर्-मि।
अह-मिन्द्रा-ग्नी अह-मश्वि-ना-वुभौ।।5।।

अहम् सोमम् त्वष्टारम् पूष्णम् भगम् दधामि।
अहम् विष्णु-मुरु-क्रमम् ब्रह्माण-मुत प्रजा-पतिम् दधामि।।6।।

अहम् दधामि द्रविणम् हविष्-मते सुप्राव्ये यजमान्नाय सुन्वते।
अहम् राष्ट्री संगमनी वसूनाम् चिकितुषी प्रथमा यज्ञिया-नाम।
अहम् सुवे पितर-मस्य मूर्-धन-मम योनि-रप्-स्वन्तः समुद्रे।
य एवम् वेद। स दैवीम् सम्पद-माप्नोति।।7।।

ते देवा अब्रु-वन्

नमो देव्यै महा-देव्यै शिवायै सततम् नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्म ताम्।।8।।

तमाग्नि-वर्णाम् तपसा ज्वलन्तीम् वैरोचनीम् कर्म-फलेषु जुष्टाम्।
दुर्गाम् देवीम् शरणम् प्रपद्या-महेऽ-सुरान्-नाश-यित्र्यै ते नमः।।9।।

देवीम् वाचम् जनयन्त देवास्- ताम् विश्व-रूपा पश्वो वदन्ति।
सा नो मन्द्रेष-मूर्जम्-दुहाना धेनुर्- वागस्-मानुप सुष्ठु-तैतु।।10।।

काल-रात्रीम् ब्रह्म-स्तुताम् वैष्णवीम् स्कंद-मातरम्।
सरस्वती-मदितिम् दक्ष-दुहितरम् नमामः पावनाम् शिवाम्।।11।।

महा-लक्ष्म्यै च विद्महे सर्व-शक्त्यै च धीमहि। तन्नो देवी प्रचोदयात्।।12।।

अदितिर्-ह्य-जनिष्ट दक्ष या दुहिता तव। ताम् देवा
अन्व-जायन्त भद्रा अमृत-बन्धवः।।13।।

कामो योनिः कमला वज्र-पाणिर्-गुहा हसा
मात-रिश्वा-भ्रमिन्द्रः। पुनर्-गुहा सकला मायया च
पुरु-च्यैषा विश्व-माता-दिवि-द्योम्।।14।।

एषाऽऽत्म-शक्तिः। एषा विश्व-मोहिनी। पा-शांकुश-धनुर्-बाण-धरा।
एषा श्री-महा-विद्या। य एवम् वेद स शोकम् तरति।।15।।

नमस्ते अस्तु भगवती मातरस्-मान् पाहि सर्वतः।।16।।

सै-षाष्टौ वसवः। सैषै-का दश रुद्राः।
सैषा द्वादशा-दित्याः। सैषा विश्वे-देवाः सोमपा असोम-पाश्च।
सैषा यातु-धाना असुरा रक्षांसि पिशाचा यक्षाः सिद्धाः।
सैषा सत्व-रजस्-तमांसि। सैषा ब्रह्म-विष्णु-रुद्र-रुपिणी।
सैषा प्रजा-पतीन्द्र-मनवः। सैषा ग्रह-नक्षत्र-ज्योतीम्-षि।
कला-काष्ठादि-काल-रूपिणी। ता-महम् प्रणौमि नित्यम्।।

पापा-पहा-रिणीम् देवीम् भुक्ति-मुक्ति-प्रदायिनीम्।
अनन्ताम्विजयाम्शुद्धाम्शरण्याम्शिवदाम्शिवाम्।।17।।

वियदी-कार-संयुक्तम्वीति-होत्र-समन्वितम्। अर्धेन्दु
लसितम् देव्या बीजम् सर्वार्थ-साधकम्।।18।।

एव-मेका-क्षरम् ब्रह्म यतयः शुद्ध-चेतसः।
ध्या-यन्ति परमा-नन्द-मया ज्ञानाम्बु-राशयः।।19।।

वाङ्-माया ब्रह्म-सूस्-तस्मात् षष्ठम् वक्त्र-समन्वितम्।
सूर्योऽ-वाम-श्रोत्र-विन्दु-संयुक्तष् टात्-तृतीयकः।।
नारायणेन सम्मिश्रो वायुश-चाधर-युक्-ततः।
विच्चे नवार्ण-कोऽर्णः स्यान्-महदा-नन्द-दायकः।।20।।

हृत्-पुण्डरीक-मध्य स्थाम् प्रायः सूर्य-सम-प्रभाम्।
पाशांकुश-धराम् सौम्याम् वरदा-भय-हस्त-काम्।
त्रि-नेत्राम्रक्त-वसनाम्भक्त-काम-दुधाम्भजे।।21।।

नमामि त्वाम् महादेवीम् महा-भय-विना-शिनीम्।
महा-दुर्ग-प्रश-मनीम्महा-कारुण्य-रूपिणीम्।।22।।

यस्याः स्वरूपम्ब्रह्मा-दयोः न जानन्ति तस्मा-दुच्यते अज्ञेया।
यस्या अन्तो न लभ्यते तस्मा-दुच्यते अनन्ता।
यस्या लक्ष्यम् नोप-लक्ष्यते तस्मा-दुच्यते अलक्ष्या।
यस्या जननम् नोप-लभ्यते तस्मा-दुच्यते अजा।
एकैव सर्वत्र वर्तते तस्मा-दुच्यते एका।
एकैव विश्व-रूपिणी तस्मा-दुच्यते नैका।
अत एवा-च्यते अज्ञेया-नन्ता-लक्ष्या जैका नैकेति।।23।।

मन्त्रा-णाम् मातृका देवी शब्दा-नाम् ज्ञान-रूपिणी।
ज्ञाना-नाम् चिन्मया-तीता शून्या-नाम् शून्य-साक्षिणी।
यस्याः पर-तरम् नास्ति सैषा दुर्गा प्रकीर्-तिता।।24।।

ताम् दुर्गाम् दुर्ग-माम् देवी दुराचार-विघातिनीम्।
नमामि भव-भीतोऽ-हम् संसा-रार्णव तारिणीम्।।25।।

इद-मथर्व-शीर्षम्योऽ-धीतेस पंचा-थर्व-शीर्ष- जप-फल-माप्नोति।
इद-मथर्व-शीर्षम्-ज्ञात्वा योऽर्-चाम्स्थाप-यति- शत-लक्षम्
प्रजप्- त्वापि सोऽर्-चा-सिद्धिम् न विन्दति।
शत-मष्टोत्तरम्-चास्य पुरश्- चर्या-विधिः स्मृतः।

दश-वारम् पठेत् यस्तु सद्यः पापैः प्रमुच्यते।
महा-दुर्गाणि तरति महा-देव्याः प्रसादतः।।26।।

सायम्-धीयानो दिवस-कृतम् पापम् नाशयति।
सायम् प्रातः प्रयुन्-जानो अपापो भवति।
निशीथे तुरीय-संध्या-याम् जप्-त्वा वाक्-सिद्धिर्-भवति।
नूतना-याम् प्रतियाम् जप्त्वा देवता- सान्निध्यम् भवति।
प्राण-प्रतिष्ठा-याम् जप्-त्वा- प्राणा-नाम् प्रतिष्ठा भवति।
भौमाश्वि-न्याम् महादेवी-सन्निधौ जप्-त्वा महामृत्युम् तरति।
स महा-मृत्युम् तरति य एवं वेद। इत्युप-निषत्।।

श्रीदेव्यथर्व-शीर्षम् श्रीजगदम्बा-अर्पण-मस्तु

श्री नवार्ण मंत्र जपविधि

श्री गणपतिर्-जयति। ॐ अस्य श्रीनवार्ण-मंत्रस्य ब्रह्म-विष्णु-रूद्रा ऋषयः, गायत्रि-उष्णिक् -अनुष्टुपः छन्दांसि, श्री महाकाली-महालक्ष्मी-महा-सरस्वत्यो देवताः, ऐं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकम् श्री महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। (इसे पढ़कर जल गिरायें)

ऋष्यादिन्यास-विधि

ब्रह्म-विष्णु-रूद्र ऋषिभ्यो नमः, शिरसि।
(दाएँ हाथ की पाचों ऊँगलियों से यह पढ़कर सिर स्पर्श करें)
गायत्रि उष्णिक्-अनुष्टुप छन्दोभ्यो नमः, मुखे।
(दाएँ हाथ की पाचों ऊँगलियों से यह पढ़कर मुख स्पर्श करें))
महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती देवताभ्यो नमः, हृदि।
(दाएँ हाथ की पाचों ऊँगलियों से यह पढ़कर हृदय स्पर्श करें)
ऐं बीजाय नमः, गुह्ये।
(दाएँ हाथ की पाचों ऊँगलियों से यह पढ़कर गुप्तांग संकेत करें)
ह्रीं शक्तये नमः, पादयोः।
(दाएँ हाथ की पाचों ऊँगलियों से यह पढ़कर दोनों पाँव स्पर्श करें)
क्लीं कीलकाय नमः, नाभौ।
(दाएँ हाथ की पाचों ऊँगलियों से यह पढ़कर नाभी स्पर्श करें)
फिर - ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे
इस मूल मंत्र का एक बार उच्चारण करते हुए हाथ में जल लेकर हाथों की शुद्धि करके करन्यास करें।

करन्यास-विधि

ॐ ऐं अंगुठा भ्याम् नमः

(दोनों हाथ की तर्जनी अंगुली से दोनों अगूठे का स्पर्श करें)

ॐ ह्रीं तर्ज-नीभ्याम् नमः

(दोनों हाथ के अंगूठों से दोनों तर्जनी का स्पर्श)

ॐ क्लीं मध्यमा-भ्याम् नमः

(दोनों अंगूठों से दोनों मध्यमा का स्पर्श)

ॐ चामुण्डायै अनामिका भ्याम् नमः

(दोनों अंगूठों से दोनों अनामिका का स्पर्श)

ॐ विच्चे कनिष्ठि-काभ्याम् नमः

(दोनों अंगूठों से दोनों कनिष्ठा का स्पर्श)

ॐ ऐं ह्री क्लीं चामुण्डायै विच्चे

करतल-कर-षृष्ठा-भ्याम् नमः

(दोनों हथेलियों और उनके पृष्ठ /पीछे भागों का परस्पर स्पर्श करें)

हृदयादिन्यास-विधि

ॐ ऐं हृदयायः नमः।

(दाहिने हाथ की पाँचों अंगुलियों से हृदय का स्पर्श)

ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा।

(दाहिने हाथ की पाँचो अंगुलियों से सिर का स्पर्श)

ॐ क्लीं शिखायै वषट्

(पांचों अंगुलियों का अंगूठे से शिखा का स्पर्श)

ॐ चामुण्डायै कवचाय हुम्।

(दाएँ हाथ के पांचो अंगुलियों से बाएँ कंधे का और बाएँ हाथ की पाँचों अंगुलियों से दाएँ कंधे का परस्पर एक साथ स्पर्श करें।)

ॐ विच्चे नेत्र-त्रयाय वौषट्

(दाएँ हाथ की कंगूरिया और अंगूठा छोड़कर शेष तीनों अंगुलियों में तर्जनी से दाएँ आँख, मध्यमा से दोनों भौंह के बीच और अनामिका से बाएँ आँख का एक साथ स्पर्श करें।)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्यै विच्चे अस्त्राय फट्

(यह पढ़कर दाएँ हाथ को सिर के उपर से बायीं ओर से पीछे की ओर ले जायँ और फिर दाहिनी ओर से आगे की ओर से आये और केवल तर्जनी और मध्यमा अंगुली से शेष अंगुली मोड़कर बाएँ हाथ के पृष्ट भाग का दाँए तर्जनी मध्यमा अंगुली से स्पर्श कर फिर दाएँ हथेली पर तर्जनी और मध्यमा से एक या तीन बार ताली बजाये)

अक्षरन्यास-विधि

ॐ ऐं नमः, शिखायाम्

(दाएँ हाथ की अंगुली से शिखा स्पर्श)

ॐ ह्रीं नमः, दक्षिणनेत्रे

(दाएँ अंगुली से दाएँ नेत्र का स्पर्श)

ॐ क्लीं नमः, वामनेत्रे

(दाएँ अंगुली से बायाँ नेत्र का स्पर्श)

ॐ चां नमः, दक्षिण कर्णे

(दाएँ अंगुली से दायाँ कान का स्पर्श)

ॐ मुं नमः, वाम कर्णे

(दाएँ अंगुली से दायाँ कान का स्पर्श)

ॐ डां नमः, दक्षिण नासापुटे

(दाएँ अंगुली से दायाँ नाक का स्पर्श)

ॐ यैं नः, वामनासापुटे

(दाएँ अंगुली से बायाँ नाक का स्पर्श)

ॐ विं नमः, मुखे

(अंगुली से मुख स्पर्श संकेत)

ॐ च्चें नमः, गुह्ये

(अंगुली से गुदा स्पर्श संकेत)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे

(इस मूल मंत्र को पढ़ते हुए आठ बार दोनों हाथों के द्वारा सिर से पैर के सब अंगों का स्पर्श करें। यह व्यापक न्यास कहलाता है।)

दिङ्न्यास-विधि

ॐ ऐं प्राच्यै नमः

(यह पढ़कर पूरब दिशा में चुटकी बजायें)

ॐ ऐं आग्नेय्ये नमः

(अग्निकोण में चुटकी बजावें)

ॐ ह्रीं दक्षिणायै नमः

(दक्षिण में चुटकी बजावें)

ॐ ह्रीं नैऋत्यै नमः

(नैऋति कोण में चुटकी बजावें)

ॐ क्लीं प्रतीच्यै नमः

(पश्चिम में चुटकी बजावें)

ॐ क्लीं वायव्यै नमः

(वायुकोण में चुटकी बजावें)

ॐ चामुण्डायै उदीच्यै नमः

(उत्तर में चुटकी बजावें)

ॐ चामुण्डायै ऐशान्यै नमः

(ईशान कोण में चुटकी बजावें)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायै नमः

(उपर की ओर चुटकी बजावें)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे भूम्यै नमः

(नीचे की ओर चुटकी बजावें)

त्रिगुणा-ध्यानम्

(हाथ में फूल लेकर या ऐसे भी पढ़कर ध्यान करें फूल हो तो ध्यान कर माँ को अर्पण कर दें)

खड्गम् चक्र-गदेषु-चाप-परिघाञ्-छूलम् भुशुण्डीम्शिरः
शंखम् संदधतीम् करैस्-त्रिनयनाम् सर्वांग-भूषा-वृताम।
नीलाश्म-द्युति-मास्य-पाद-दशकाम् सेवे महा-कालिकाम्
यामस्-तौत्-स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुम् मधुम् कैटभम्।।1।।

अक्ष-स्रक-परशुम् गदेषु-कुलिशम् पद्मम् धनुः कुण्डिकाम्
दण्डम्शक्ति-मसिम् च चर्म जलजम् घण्टाम् सुरा-भाजनम्।
शूलम् पाश-सुदर्शने च दधतीम् हस्तैः प्रसन्ना-ननाम्
सेवे सैरिभ-मर्दिनी-मिह महा-लक्ष्मीम् सरो-जस्थि-ताम्।।

घण्टा-शूल-हलानि शंख-मुसले चक्रम् धनुः सायकम्
हस्ताब्जैर्-दधतीम् घनान्त-विलसच्-शीतांशु-तुल्य-प्रभाम्।
गौरी-देह-समुद्भवां त्रिजगता-माधार-भूताम् महा
पूर्वा-मत्र सरस्वती-मनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्-दिनीम्।।3।।

जप-माला पूजन मंत्र

"ऐं ह्रीं अक्षमालिकायै नमः"

माला को बाएँ हाथ में लेकर या समाने रखकर उपर का मंत्र पढ़कर उसपर जल गिरा दें। फिर एक फूल लेकर पढें

सर्वोपचारार्थे पुष्पम् समर्पयामि ऐं ह्रीं अक्षमालिकायै नमः।

माला पर फूल रखकर फिर माला को अंजलि में लेकर या सामने रखकर हाथ जोड़कर निम्न मंत्र पढ़ते हुए प्रार्थना करें -

"ॐ मां माले महामाये सर्व-शक्ति-स्वरूपिणि। चतुर्-वर्गस्-त्वयि न्यस्-तस्-मान्मे सिद्धिदा भव।।

ॐ अविघ्नम् कुरु माले त्वम् गृह्णामि दक्षिणे करे। जपकाले च सिद्ध-यर्थम् प्रसीद मम् सिद्धये।।

ॐ अक्ष-मालाधि-पतये सुसिद्धिम् देहि देहि सर्व-मंत्रार्थ-साधिनि साधय साधय सर्व-सिद्धिम् परि-कल्पय परि-कल्पय मे स्वाहा।"

इसके बाद माला दाएँ हाथ में लेकर सकाम भक्त अंगूठा अनामिका और मध्यमा की सहायता से तथा निष्काम भक्त मध्यमा पर माला रखकर अंगूठा से खींचकर माला जप करें। माला जप के समय सुखासन, सिद्धासन या पदमासन में बैठें तथा पूरे मेरूदंड को सीधा रखकर माला को कंठ के पास लाकर कपड़े से ढ़ककर या गोमुख (माला जप-वस्त्र) में रखकर माता दुर्गा का मानस ध्यान करते हुए या चित्र देखते हुए श्वांस के साथ या श्वांस रोक धीरे-धीरे तन्मय भाव से मंत्र के अर्थ का मनन करते हुए एक माला जप करें। यदि एक माला से अधिक जप करना हो तो सुमेरू यानी माला के शीर्ष के पास आने पर माला को उल्टा दें। एक माला से अधिक जितना बार जाप करना हो माला उल्टाते

जायें। स्थिर चित्त के जप से निश्चय ही सिद्धि मिलती है।

जप हेतु नवार्ण मंत्र -

"ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे"

जप जब पूरा हो जाय तो नीचे के श्लोक को पढ़कर देवी के बाएँ हाथ में जप निवेदन करते हुए थोड़ा जल गिरा दे या एक फूल दे दें। माला सुमेरू मस्तक में सटा लें।

"गुह्याति-गुह्य-गोप्-त्री त्वम् गृहाण अस्मत् कृतम् जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत् प्रसादान्-महेश्वरि।।"

सप्तशती न्यासः

(सप्तशती पाठ के पूर्व नवार्ण जप के बाद सप्तशती के विनियोग, न्यास, ध्यान करना चाहिये)

विनियोग -

ॐ प्रथम-मध्यमोत्तर-चरित्रा-णाम् ब्रह्म-विष्णु-रूद्रा ऋषयः श्री महाकाली-महालक्ष्मी महा सरस्वत्यो देवताः, गायत्रि-उष्णिक्-अनुष्टुप् छंदासि, नन्दा-शाकम्भरी-भीमाः शक्तयः, रक्त-दन्तिका- दुर्गा-भ्रामर्यो बीजानि, अग्नि-वायु-सूर्यस्- तत्त्वानि, ऋग्-यजुः सामवेदा ध्यानानि सकल-कामना-सिद्धये श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी- महासरस्वती देवता प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

सप्तशती करन्यास-विधि

ॐखड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।
शंखिनी चापिनी बाण-भुशुण्डी-परिघा-युधा।।

अंगुष्ठाभ्याम् नमः।

(दोनों हाथ की तर्जनी से दोनों अंगूठे का स्पर्श करें)

ॐशूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन-चाम्बिके।
घण्टा-स्वनेन नः पाहि चापज्या-निः स्वनेन च।।

तर्जनी-भ्याम् नमः (अंगूठे से तर्जनी स्पर्श)

ॐ प्राच्याम् रक्ष प्रतीच्याम् च चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणे-नात्म-शूलस्य उत्तरस्याम् तथेश्वरि।।

मध्यमा-भ्याम् नमः (अंगूठे से मध्यमा स्पर्श)

ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यर्थ-घोराणि तै रक्षास्-मांस्-तथा भुवम्।।

अनामिका-भ्याम् नमः (अंगूठे से अनामिका स्पर्श)

ॐखडग-शूल-गदा-दीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके।
कर-पल्लव संगीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः।।

कनिष्ठिका-भ्याम् नमः (अंगूठे से कनिष्ठा स्पर्श)

ॐ सर्व-स्वरूपे सर्वेशे सर्व-शक्ति-समन्विते।
भये-भ्यस्-त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते।।

करतल-कर-पृष्ठा-भ्याम् नमः।

(दोनों हथेली और पृष्ठभाग स्पर्श)

हृदयादि न्यास-विधि

ॐखड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।
शंखिनी चापिनी बाण-भुशुण्डी-परिघा-युधा।।

हृदयाय नमः (पाँचों अंगुलियों से हृदय स्पर्श)

ॐशूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन-चाम्बिके।
घण्टा-स्वनेन नः पाहि चापज्या-निः स्वनेन च।।

शिर से स्वाहा (पांचों अंगुलियों से सिर स्पर्श)

ॐ प्राच्याम् रक्ष प्रतीच्याम् च चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणे-नात्म-शूलस्य उत्तरस्याम् तथेश्वरि।।

शिखायै वषट् (पाँचों अंगुली या अगूठे से शिखा स्पर्श)

ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यर्थ-घोराणि तै रक्षास्-मांस्-तथा भुवम्।।

कवचाय हुम् (दाएँ हाथ से बाएँ, बाएँ हाथ से दाएँ कंधा)

ॐखडग-शूल-गदा-दीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके।
कर-पल्लव संगीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः।।

नेत्र-त्रयाय वौषट् (तीनों अंगुली से त्रिनेत्र स्पर्श)

ॐ सर्व-स्वरूपे सर्वेशे सर्व-शक्ति-समन्विते।
भये-भ्यस्-त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते।।

अस्त्राय फट्

(दाएँ हाथ को सिर के उपर से पीछे की ओर से लाकर बाएँ हाथ पर ताली बजाएँ)

श्रीदुर्गा ध्यानम्

(हाथ में लाल या कोई फूल लेकर श्लोक पढ़ते हुए अर्थ की भावना करते हुए माँ दुर्गा का ध्यान करें)

विद्युद्-दाम-सम-प्रभाम् मृगपति-स्कंध-स्थिताम् भीषणाम्
कन्याभिः करवाल-खेट-विलसद्-धस्ता-भिरा-सेविताम्।
हस्तैश्-चक्र-गदासि-खेट-विशिखाम् चापम् गुणम् तर्जनीम्
विभ्रा णा-मन-लात्मि-काम्-शशि धराम् दुर्गाम् त्रिनेत्राम् भजे।।

श्लोक पढ़ने के बाद कुछ समय तक मानस-ध्यान दुर्गा माँ का हृदय या आज्ञाचक्र पर या फोटो देखकर करें फिर ध्यान पुष्प को अपने सिर पर रखें या सिर पर रखकर माँ के आगे रख दें।

फिर प्रथम अध्याय का पाठ आरंभ करें -

श्रीदुर्गादेव्यै नमः

श्रीदुर्गासप्तशती

प्रथमोऽध्यायः

विनियोगः - ॐ प्रथम-चरित्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, महाकाली देवता, गायत्री छन्दः, नन्दा शक्ति रक्तदन्तिका बीजम, अग्निस्तत्त्वम, ऋग्वेदः स्वरूपम्, श्री महाकाली प्रीत्यर्थे प्रथम-चरित्र जपे विनियोगः।

ध्यानम्

ॐखड्गम् चक्र-गदेषु-चाप-परिघान्-छूलम भुशुण्डीम्शिरः
शंखम् संदधतीम् करैस्-त्रिनयनाम् सर्वांग-भूषा-वृताम।
नीलाश्म-द्युति-मास्य-पाद-दशकाम् सेवे महा कालिकाम्
यामस-तौत्-स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुम् मधुम् कैटभम्।।

ॐ नमश्चण्डिकायै। ॐ ऐं मार्कण्डेय उवाच।।1।।

सावर्णिः सूर्य-तनयो यो मनुः कथ्य-तेऽष्टमः।
निशामय तदुत्-पत्तिम् विस्तराद् गदतो मम।।2।।

महा माया-नु भावेन यथा मन्वन्त राधिपः।
स बभूव महाभागः सावर्णिस्-तनयो रवेः।।3।।

स्वारो चिषे-अन्तरे पूर्वम् चैत्र-वंश-समुद्भवः।
सुरथो नाम राजा भूत्-समस्ते क्षिति-मंडले।।4।।

तस्य पालयतः सम्यक् प्रजाः पुत्रा-निवौ-रसान्।
बभूबुः शत्रवो भूपाः कोला-विध्वंसि-नस्तदा।।5।।

तस्य तैर्भवद् युद्ध-मति-प्रबल-दण्डिनः।
न्यूनै-रपि स तैर्-युद्धे कोला-विध्वंसि-भिर्जितः।।6।।

ततः स्वपुर-मायातो निज-देशा-धिपोऽ भवत।
आक्रान्तः स महा-भागस्-तैस्-तदा प्रबला-रिभिः।।7।।

अमात्यैर्-बलिभिर्-दुष्टैर्-दुर् बलस्य दुरात्मभिः।
कोशो बलम् चाप-हृतम् तत्रापि स्वपुरे ततः।।8।।

ततो मृगया-व्याजेन हृत-स्वाम्यः स भूपतिः।
एकाकी हय-मारुह्य जगाम गहनम् वनम्।।9।।

स तत्रा-श्रम-मद्रा-क्षीद् द्विज-वर्यस्य मेधसः।
प्रशान्त-श्वापदा-कीर्णम्मुनि-शिष्योप-शोभितम्।।10।।

तस्थौ कंचित्स कालम् स मुनिना तेन सत्कृतः।
इतश-चेतश्च विचरंस्-तस्मिन-मुनि-वराश्रमे।।11।।

सोऽ-चिन्तयत्-तदा तत्र ममत्वा कृष्ट चेतनः।
मत्-पूर्वैः पालितम् पूर्वम् मया हीनम् पुरम् हि -तत्।।12।।

मद्-भृत्यैस्-तैर-सद्-वृतैर्-धर्मतः पाल्यते न वा।

न जाने स प्रधानो मे शूर-हस्ती सदामदः।।13।।

मम वैरि-वंशम् यातः कान् भोगा नुप लप्-स्यते।
ये ममा-नुगता नित्यम् प्रसाद-धन-भोजनैः।।14।।

अनुवृत्तिम् ध्रुवम् तेऽद्य कुर्वन-त्यन्य-मही-भृताम्।
असम्यग्-व्यय-शीलैस्-तैः कुर्वदभिः सततम् व्ययम्।।15।।

संचितः सोऽति दुःखेन क्षयम् कोशो गमिष्यति।
एतच् चान्यच्च सततम् चिंतया मास पार्थिवः।।16।।

तत्र विप्रा-श्रमा-भ्यासे वैश्य-मेकम् ददर्श सः।
स पृष्टस्-तेन कस्त्वम् भो हेतुश् चा गमनेऽत्रकः।।17।।

सशोक इव कस्मात्-त्वम् दुर्मना इव लक्ष्यसे।
इत्या-कर्ण्य वचस्-तस्य भूपतेः प्रणयो-दितम्।।18।।

प्रत्यु-वाच स तम् वैश्यः प्रश्रया-वनतो नृपम्।।19।।

वैश्य उवाच।।20।।

समाधिर्-नाम वैश्योऽ-ह मुत्पन्नो धनिनाम् कुले।।21।।

पुत्र-दारैर्-निरस्-तश्च धन-लोभाद्-साधुभिः।
विहीनश्च धनैर्-दारैः पुत्रै-रादाय मे धनम्।।22।।

वन-मभ्या-गतो दुःखी निरस्-तस्-चाप्त-बन्धुभिः।
सोऽहम् न वेद्मि पुत्राणाम् कुशला-कुशलात्मि -काम्।।23।।

प्रवृतिम् स्व-जनानाम् च दाराणाम् चात्र संस्थितः।

किम् नु तेषाम् गृहे क्षेमम-क्षेमम् किम् न साम्प्रतम्।।24।।

कथम् ते किम् नु सद्वृत्ता दुर्वृत्ताः किम् नु मे सुतः।।25।।

राजोवाच।।26।।

यैर्-निरस्तो भवाँ-ल्लुब्धैः पुत्र-दारादि-भिर्-धनैः।।27।।

तेषु किम् भवतः स्नेह-मनु-बध्नाति मानसम्।।28।।

वैश्य उवाच ।।29।।

एव-मेतत्-यथा प्राह भवान्-अस्मद्-गतम् वचः।।30।।

किम् करोमि न बध्नाति मम निष्ठुर ताम् मनः।
यैः संत्यज्य पितृ-स्नेहम् धन-लुब्धैर्-निराकृतः।।31।।

पति-स्वजन-हार्दम् च हार्दि तेष्वेव मे मनः।
किमेतन्-नाभि-जानामि जानन्-नपि महामते।।32।।

यत्-प्रेम-प्रवणम् चितम् विगु-णेष्वपि बंधुषु।
तेषाम् कृते मे निःश्वासो दौर्-मनस्यम् च जायते।।33।।

करोमि किम् यन्न मनस्-तेष्व-प्रीतिषु निष्ठुरम्।।34।।

मार्कण्डेय उवाच।।35।।

ततस्-तौ सहितौ विप्र तम् मुनिम् समु-पस्थितौ।।36।।

समा-धिर्-नाम वैश्यो-ऽसौ स च पार्थिव-सत्तमः।
कृत्वा तु तौ यथा-न्यायम् यथा रहम् तेन संविदम्।।37।।

उप-विष्टौ कथाः कांश्चिच्-चक्र तुर् वैश्य-पार्थिवौ।।38।।

राजोवाच।।39।।

भगवंस्-त्वा महम् प्रष्टु-मिच्छा-म्येकम् वदस्व तत्।।40।।

दुःखाय यन्मे मनसः स्व-चित्ता-यत्त-ताम् विना।
ममत्वम् गत-राज्यस्य राज्यां गेष्व-खिले ष्वपि।।41।।

जान तोऽपि यथा-ज्ञस्य किमेतन्-मुनि सत्तम।
अयम् च निकृतः पुत्रैर्-भृत्यैस्-तथोज्झितः।।42।।

स्वजनेन च सन् त्यक्तस्-तेषु हार्दी तथाप्यति।
एव मेष तथाहम् च द्वा वप्य-त्यन्त-दुःखितौ।।43।।

दृष्ट-दोषे ऽपि विषये ममत्वा-कृष्ट-मानसौ।
तत्-किमेतन्-महाभाग यन्-मोहो ज्ञानिनो-रपि।।44।।

ममास्य च भवत्येषा विवे-कान्धस्य मूढता।।45।।

ऋषिरुवाच।।46।।

ज्ञान-मस्ति समस्तस्य जन्तोर्-विषय-गोचरे।।47।।

विषयश्च महाभाग याति चैवम् पृथक् पृथक्।
दिवान्धाः प्राणिनः केचिद्-रात्रा-वन्धास्-तथापरे।।48।।

केचिद्-दिवा तथा रात्रौ प्राणिनस्-तुल्य-दृष्टयः।
ज्ञानिनो मनुजाः सत्यम् किम् तु ते न हि केवलम्।।49।।

यतो हि ज्ञानिनः सर्वे पशु-पक्षि-मृगादयः।
ज्ञानम् च तन्-मनुष्या-णाम् यत्-तेषाम् मृग-पक्षि-णाम्।।50।।

मनुष्या-णाम् च यत्-तेषाम् तुल्य-मन्यत्-तथो-भयोः।
ज्ञानेऽपि सति पश्यै तान् पतंगान्-छाव-चञ्चुषु।।51।।

कण-मोक्षा-दृतान-मोहात्-पीड्य-माना नपि क्षुधा।
मानुषा-मनुज-व्याघ्र साभि लाषाः सुतान् प्रति।।52।।

लोभात्-प्रत्युप्-काराय नन्वेतान् किम् न पश्यसि।
तथापि ममता वर्ते मोह-गर्ते निपातिताः।।53।।

महा-माया-प्रभावेण संसार-स्थिति-कारिणा।
तन्-नात्र विस्मयः कार्यो योगनिद्रा जगत् पतेः।।54।।

महा-माया हरेश्-चैषा तया सम्मोह्यते जगत्।
ज्ञानि-नामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा।।55।।

बलादा-कृष्य मोहाय महा-माया प्रयच्छति।
तया विसृज्यते विश्वम् जगदे-तच्-चराचरम्।।56।।

सैषा प्रसन्ना वरदा नृणाम् भवति मुक्तये।
सा विद्या परमा मुक्तेर्-हेतु-भूता-सनातनी।।57

संसार-बन्ध-हेतुश्च सैव सर्-वेश्व-रेश्वरी।।58।।

राजोवाच।।59।।

भगवन् का हि सा देवी महा-मायेति याम् भवान्।।60।।

ब्रवीति कथ-मुत्पन्ना सा कर्मा-स्याश्च किम् द्विज।
यत्-प्रभावा च सा देवी यत्-स्वरूपा यदुद्-भवा।।61।।

तत्-सर्वम् श्रोतु-मिच्छामि त्वत्-तो ब्रह्म-विदाम् वर।।62।।

ऋषिरुवाच।।63।।

नित्यैव सा जगन्-मूर्तिस्-तया सर्व मिदम् ततम्।।64।।

तथापि तत्-समुत्-पत्तिर्-बहुधा-श्रूय ताम् मम।
देवानाम् कार्य-सिद्ध यर्थ मा विर-भवति सा यदा।।65।।

उत्-पन्नेति तदा लोके सा नित्याप्य-भिधी-यते।
योग निद्राम् यदा विष्णुर्-जगत्ये-कार्-णवी-कृते।।66।

आस्तीर्य शेषम्-भजत्-कल्पान्ते भगवान प्रभुः।
तदा द्वाव-सुरौ घोरौ विख्यातौ मधु-कैटभौ।।67।।

विष्णु-कर्ण-मलोद्-भूतौ हन्तुम् ब्रह्माण-मुद्यतौ। स
नाभि-कमले विष्णोः स्थितो ब्रह्मा प्रजा-पति।।68।।

दृष्ट्वा ताव-सुरौ चोग्रौ प्रसुप्तम् च जनार्दनम्।
तुष्टाव योग निद्राम् तामे-काग्र-हृदय-स्थितः।।69।।

विवोध-नार्थाय हरेर्-हरि-नेत्र-कृता-लयाम्।
विश्वे श्वरीम् जगद्-धात्रीम् स्थिति-संहार-कारि-णीम्।।70।।

निद्राम् भगवतीम् विष्णोर्-तुलाम् तेजसः प्रभुः।।71।।

ब्रह्मोवाच।।72।।

त्वम् स्वाहा त्वम् स्वधा त्वम् हि वषट्कारः स्वरात्मिका।।73।।

सुधा त्व-मक्षरे नित्ये त्रिधा मात्रात्-मिका स्थिता।
अर्ध-मात्रा-स्थिता नित्या यानु च्चार्या विशेषतः।।74।।

त्वमेव संध्या सावित्री त्वम् देवि जननी परा।
त्वयै-तत्-धार्यते विश्वम् त्वयै-तत्-सृज्यते जगत्।।75।।

त्वयै-तत्-पाल्यते देवि त्वमत्-स्यन्ते च सर्वदा।
विसृष्टौ सृष्टिरूपा त्वम् स्थिति-रूपा च पालने।।76।।

तथा संहृति-रूपान्ते जगतोऽस्य जगन्-मये।
महाविद्या महामाया महामेधा महास्मृतिः।।77।।

महामोहा च भवती महादेवी महासुरी।
प्रकृतिस्-त्वम् च सर्वस्य गुण-त्रय-विभाविनी।।78।।

काल रात्रिर्-महा-रात्रिर-मोह-रात्रिश्च दारूणा।
त्वम् श्रीस्-त्वमी श्वरी त्वम् ह्रीस्-त्वम् बुद्धिर-बोध-लक्षणा।।79।।

लज्जा पुष्टिस्-तथा तुष्टिस्-त्वम् शान्तिः क्षान्तिरेव च।
खड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।।80।।

शंखिनी चापिनी बाण-भुशुण्डी-परिघा-युधा।
सौम्या सौम्य-तरा-शेष सौम्ये-भ्यस्-त्वति-सुन्दरी।।81।।

परा-पराणाम् परमा त्वमेव परमेश्वरी।
यच्च किंचित्- क्वचिद्-वस्तु सद-सद्वा-खिला त्मिके।।82।।

तस्य सर्वस्य या शक्तिः सा त्वम् किम् स्तूयसे तदा।
यया त्वया जगत्-स्रष्टा जगत्-पात्यत्ति यो जगत्।।83।।

सोऽपि निद्रा-वशम् नीतः कस्-त्वाम् स्तोतु-मिहेश्वरः।
विष्णुः शरीर-ग्रहण-मह-मीशान एव च।।84।।

कारि-तास्ते यतो-अतस्-त्वाम् कः स्तोतुम् शक्तिमान् भवेत्।
सा त्व- मित्थम् प्रभावैः स्वैरू-दारैर्-देवि-संस्तुता।।85।।

मोह-यैतौ दुरा-धर्षा-वसुरौ मधु-कैटभौ।
प्रबोधम् च जगत्-स्वामी नीयता-मच्युतो लघु।।86।।

बोधश्च क्रियता-मस्य हन्तु मेतौ महासुरौ।।87।।

ऋषिरुवाच।।88।।

एवम् स्तुता तदा देवी तामसी तत्र वेधसा।।89।।

विष्णोः प्रबोध-नार्थाय निहन्तुम् मधु-कैटभौ।
नेत्रास्य-नासिका-बाहु-हृदये-भ्यस्-तथो रसः।।90।।

निर् गम्य दर्शने तस्थौ ब्रह्मणो-अव्यक्त-जन्मनः।
उत्तस्थौ च जगन् नाथस्-तया मुक्तो जनार्दनः।।91।।

एका र्णवे-अहि-शयनात्-ततः स ददृशे च तौ।
मधु-कैटभौ दुरात्मा-ना वति-वीर्य-पराक्रमौ।।92।।

क्रोध-रक्ते-क्षणा-वत्तुम् ब्रह्माणम् जनितो-द्यमो।
समुत्थाय ततस्-ताभ्याम् युयुधे भगवान हरिः।।93।।

पञ्च-वर्ष-सहस्राणि बाहु प्रहरणो विभुः।
ताव-प्यति-बलोन् मत्तौ महा-माया-विमोहितौ।।94।।
उक्त-वन्तौ वरोऽस्-मत्तो व्रियता-मिति केशवम्।।95।।
श्रीभगवानुवाच।।96।।
भवेता-मद्य मे तुष्टौ मम वध्या-वुभा-वपि।।97।।
किमन्येन वरे-णात्र एता-वद्धि वृतम् मम।।98।।
ऋषिरुवाच।।99।।
वंचि-ताभ्याम्-मिति तदा सर्व-मापो-मयम्-जगत्।।100।।
विलोक्य ताभ्याम् गदितो भगवान कमले-क्षणः।
आवाम् जहि न यत्रोर्वी सलिलेन परि-प्लुता।।101।।
ऋषिरुवाच।।102।।
तथेत्युक्-त्वा भगवता शंखा-चक्र-गदा-भृता।
कृत्वा चक्रेण वै च्छिन्ने जघने शिरसी तयोः।।103।।
एवमेषा समुत्पन्ना ब्रह्मणा संस्तुता स्वयम्।
प्रभाव-मस्या देव्यास्तु भूयःशृणुवदामि ते।। ऐंॐ।104।।

श्री जगदम्बा दुर्गा-अर्पण-मस्तु

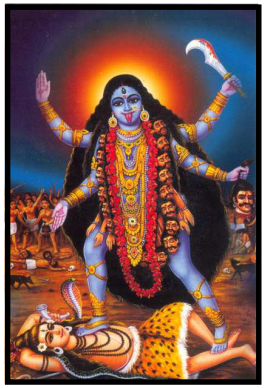

द्वितीयोऽध्यायः

विनियोगः - ॐ मध्यम-चरित्रस्य विष्णुःऋषिः, महालक्ष्मीः देवता, उष्णिक् छन्दः, शाकम्भरी शक्तिः, दुर्गा बीजम्, वायुः तत्त्वम, यजुर्वेदः स्वरूपम्, श्रीमहालक्ष्मी प्रीत्यर्थम् मध्यम-चरित्र जपे विनियोगः।

ध्यानम्

ॐ अक्ष-स्रक परशुम् गदेषु कुलिशम् पदमम् धनुष् कुण्डिकाम्
दण्डम् शक्ति-मसिम् च चर्म जलजम् घण्टाम् सुरा भाजनम्।

शूलम् पाश-सुदर्शने च दधतीम् हस्तैः प्रसन्ना-ननाम्
सेवे-सैरिभ-मर्दिनी-मिह महा-लक्ष्मीम् सरोज- स्थिताम्।।

ॐ ह्रीं ऋषिरूवाच।।1।।

देवा-सुरम्-भूद्-युद्धम् पूर्ण-मब्द-शतम् पुरा।
महिषेऽ-सुराणा-मधिपे देवानाम् च पुरन्दरे।।2।।

तत्रा-सुरैर् महा वीर्यैर् देव-सैन्यम् परा जितम्।
जित्वा च सकलान् देवा-निन्द्रो-ऽभून-महिषासुरः।।3।।

ततः पराजिता देवाः पद्म-योनिम् प्रजापतिम्।
पुरस्-कृत्य गतास्-तत्र यत्रेश-गरूड-ध्वजौ।।4।।

यथा-वृतम् तयोस्-तद्वन-महिषासुर-चेष्टितम्।
त्रिदशाः कथया-मासुर्-देवाभि-भव-विस्तरम्।।5।।

सूर्येन्-द्रागन्य-निलेन्दू-नाम् यमस्य वरूणस्य च।
अन्ये षाम् चाधि-कारान् स स्वय-मेवाधि-तिष्ठति।।6।।

स्वर्गान-निराकृताः सर्वे तेन देवगणा भुवि।
विचरन्ति यथा मर्त्या महिषेण दुरात्मना।।7।।

एतद्-वः कथितम् सर्व-ममरा-रिवि-चेष्टितम्।
शरणम् वः प्रपन्नाः स्मो वधस्- तस्य विचिन्त्य-ताम्।।8।।

इत्थम् निशम्य देवानाम् वचांसि मधुसूदनः।
चकार कोपम् शुम्भश्च भ्रृकुटी-कुटिला-ननौ।।9।।

ततो-अति-कोप-पूर्णस्य चक्रिणो वदनात्-ततः।
निश्चक्राम महत्तेजो ब्रह्मणः शंकरस्य च।।10।।

अन्ये षाम् चैव देवानाम् शक्रा-दीनाम् शरीरतः।
निर्गतम सुमहत्-तेजस्-तच्चै-क्यम् सम-गच्छत।।11।।

अतीव तेजसः कूटम् ज्वलन्त-मिव पर्वतम्।
ददृ शुस्ते सुरास्-तत्र ज्वाला-व्याप्त-दिगन्तरम्।।12।।

अतुलम् तत्र तत्-तेजः सर्व-देव-शरीर-जम्।
एकस्-थम् तद् भून्-नारी व्याप्त-लोक-त्रयम् त्विषा।।13।।

यद-भूच्-छाम्-भवम् तेजस्-तेना-जायत तन्मुखम्।
याम्येन चाभवन् केशा बाहवो विष्णु-तेजसा।।14।।

सौम्येन स्तन योर्-युग्मम् मध्यम् चैन्द्रेण चाभवत।
वारुणेन च जङ्घोरू नितम्बस्-तेजसा भुवः।।15।।

ब्रह्मणस्-तेजसा पादौ तदंगुल्यो-अर्क तेजसा।
वसूनाम् च करांगुल्यः कौबेरेण च नासिका।।16।।

तस्यास्तु दन्ताः संभूताः प्राजा-पत्येन तेजसा।
नयन-त्रि-तयम् जज्ञे तथा पावक-तेजसा।।17।।

भ्रुवौ च संध्य-योस्-तेजः श्रव-णाव निलस्य च।
अन्ये-षाम् चैव देवा-नाम् संभवस्-तेज-साम् शिवा।।18।।

ततः समस्त देवानाम् तेजो-राशि-समुद्-भवाम्।
ताम् विलोक्य मुदम् प्रापु-रमरा महिषार्-दिताः।।19।।

शूलम् शूलाद्-विनिष-कृष्य ददौ तस्यै पिनाक्-धृत।
चक्रम् च दत्तवान् कृष्णः समुत्-पाद्य स्व चक्रतः।।20।।

शंखम् च वरुणः शक्तिम् ददौ तस्यै हुताशनः।
मारुतो दत्त वांश्-चापम् बाण-पूर्णे तथे-षुधी।।21।।

वज्र-मिन्द्रः समुत्-पाद्य कुलिशा-दमरा धिपः।
ददौ तस्य सहस्रा क्षो घण्टा-मैरा-वताद् गजात्।।22।।

काल-दण्डा-द्यमो दण्डम् पाशम् चाम्बु पतिर्-ददौ।
प्रजा पतिश्-चाक्ष-मालाम् ददौ ब्रह्मा-कमण्डलुम्।।23।।

समस्त-रोम-कूपेषु निज-रश्मीन् दिवाकरः।
कालश्च दत्तवान् खड्गम् तस्याश्-चर्म च निर्मलम्।।24।।

क्षीरो दश्-चामलम् हार-मजरे च तथाम्बरे।
चूड़ा मणिम् तथा दिव्यम् कुण्डले कटकानि च।।25।।

अर्ध-चन्द्रम् तथा शुभ्रम् केयूरान् सर्व-बाहुषु।
नूपुरौ विमलौ तद्-वत्-ग्रैवे-यक-मनुत्त-मम्।।26।।

अंगुलीय-कर-रत्नानि समस्ता-स्वंगुलीषु च।
विश्व कर्मा ददौ तस्यै परशुम् चाति-निर्मलम्।।27।।

अस्त्राण्य-नेक-रूपाणि तथा-भेद्यम् च दंशनम्।
अम्लान्-पंकजाम् मालाम् शिरस्यु-रसि-चापराम्।।28।।

अद-दज्- जलधिस्-तस्यै पंकजम् चाति-शोभनम्।
हिमवान् वाहनम् सिंहम् रत्नानि विविधानि च।।29।।

ददाव-शून्यम् सुरया पान-पात्रम् धनाधिपः।
शेषश्च सर्व-नागेशो महा-मणि-विभूषितम्।।30।।

नागहारम् ददौ तस्यै धत्ते यः पृथिवी-मिमाम्।
अन्यै-रपि सुरैर्-देवी भूषणै-रायुधैस-तथा।।31।।

सम्मानिता नना-दोच्चैः साट्ट-हासम् मुहुर्-मुहुः।
तस्या नादेन घोरेण कृत्स्न-मापूरि-तम् नभः।।32।।

अमाय-ताति-महता प्रति-शब्दो महान-भूत्।
चुक्षु भुः सकला लोकाः समु-द्राश्च चकम्पिरे।।33।।

चचाल वसुधा चेलुः सकलाश्च महीधराः।
जयेति देवाश्च मुदा तामूचुः सिंह- वाहिनीम्।।34।।

तुष्टु-वुर्-मुनयश् चैनाम् भक्ति-नम्रात्म-मूर्तयः।
दृष्ट्वा समस्तम् संक्षुब्धम् त्रैलोक्य-ममरारयः।।35।।

सन्नद्धा-खिल-सैन्यास्ते समुत्तस्-थुरुदा युधाः।
आः किमे तदिति क्रोधादा-भाष्य महिषासुर।।36।।

अभ्य-धावत तम् शब्दम् शेषैर् सुरैर्-वृतः।
स ददर्श ततो देवीम् व्याप्त-लोक-त्रयाम् त्विषा।।37।।

पादा-क्रान्त्या नत-भुवम् किरीटो-ल्लिखि-ताम्ब-राम्।
क्षोभिता-शेष-पातालाम् धनुर्-ज्या-निःस्वनेन ताम्।।38।।

दिशो भुज-सहस्रेण समन्ताद् व्याप्त संस्थि-ताम।
ततः प्रव-वृते युद्धम् तया देव्या सुर-द्विषाम्।।39।।

शस्त्र-अस्त्रैर्-बहुधा मुक्तैरा-दीपित-दिगन्तरम्।
महिषा-सुर-सेनानीश-चिक्षु-राख्यो महासुरः।।40।।

युयुधे चामरश्-चान्यैश्-चतुरंग-बलान्वितः।
रथानाम-युतैः षडभि-रुद-ग्राख्यो महासुरः।।41।।

अयुध्यता-युतानाम् च सहस्रेण महा-हनुः।
पंचा-शद्-भिश्च नियुतै-रसिलोमा महासुरः।।42।।

अयुता नाम् शतैः षड्भिर-बाष्कलो युयुधे रणे।
गज-वाजि-सहस्रौ-घैर-नेकैः परि-वारितः।।43।।

वृतो रथा-नाम् कोट्या च युद्धे तस्मिन्न-युध्यत।
बिडा लाख्यो-अयुता नाम्च पंचाशद्-भिरथा-युतैः।।44।।

युयुधे संयुगे तत्र रथा-नाम् परि-वारितः।
अन्ये च तत्रा-युतशो रथ-नाग-हयैर्-वृताः।।45।।

युयुधः संयुगे देव्या सह तत्र महा-सुराः।
कोटि-कोटि-सहस्रैस्-तु रथानाम् दन्ति नाम् तथा।।46।।

हयानाम् च वृतो युद्धे तत्रा-भून्-महिषासुरः।
तोम-रैर्-भिन्द-पालैश्च शक्ति भिर्-मुसलैस्-तथा।।47।।

युयुधः संयुगे देव्या खड्गैः परशु-पट्टिशैः।
केचिच्च चिक्षिपुः शक्तीः केचित्-पाशांस्-तथापरै।।48।।

देवीम् खड्ग-प्रहारैस्-तु ते ताम् हन्तुम् प्र-चक्रमुः।
सापि देवी ततस्-तानि शस्त्रा-ण्यस्-त्राणि-चण्डिका।।49।।

लील-यैव प्र-चिच्छेद निज-शस्त्रास्त्र-वर्षिणी।
अना यस्-तानना देवी स्तूय-माना सुरर्-षिभिः।।50।।

मुमो-चासुर-देहेषु शस्त्रा-ण्यस्-त्राणि चेश्वरी।
सोऽपि क्रुद्धो धुट-सटो देव्या वाहन-केसरी।।51।।

चचारा-सुर-सैन्येषु वने-ष्विव हुताशनः।
निःश्वा-सान् मुमुचे यांश्च युध्य माना रणेऽम्बिका।।52।।

त एव सद्यः सम्भूता गणाः शत-सहस्रशः।
युयु-धुस्-ते परशु-भिर्-भिन्दि-पालासि-पट्टिशैः।।53।।

नाश-यन्तो-असुर-गणान् देवी शक्त्युप-बृंहिताः।
अवाद-यन्त पटहान् गणाः शंखास्-तथापरे।।54।।

मृदङ्गांश्च तथै-वान्ये तस्मिन् युद्ध-महोत्सवे।
ततो देवी त्रिशूलेन गदया शक्ति-वृष्टि-भिः।।55।।

खड्-गादि-भिश्च शतशो निजधान महा-सुरान्।
पातया-मास चैवा-न्यान् घण्टा-स्वन-विमोहितान्।।56।।

असुरान् भुवि पाशेन बद्ध्वा चान्यान-कर्ष-यत्।
केचिद्द्विधा कृतास्-तीक्ष्णैः खड्ग-पातैस्-तथापरे।।57।।

विपो-थिता निपातेन गदया भुवि शेरते।
वेमुश्च केचिद्-रुधिरम् मुसलेन भृशम् हताः।।58।।

केचिन्-निपातिता भूमो भिन्नाः शूलेन वक्षसि।
निरन्तराः शिरौ-घेण कृताः केचिद्-रणाजिर।।59।।

श्येना-नुकारिणः प्राणान् मुमुचुस्-त्रि-दशार्दनाः।
केषांचिद् बाहवश्-छिन्नश्-छिन्न-ग्रीवास्-तथापरे।।60।।

शिरांसि पेतु-रन्येषा-मन्ये मध्ये विदारिताः।
विच्छिन्न-जंघास-त्वपरे पेतुरुर्-व्याम् महासुराः।।61।।

एक-बाहूवक्षि-चरणाः चिद्-देव्या द्विधा कृताः।
छिन्नेऽपि चान्ये शिरसि पतिताः पुनरु-त्थिताः।।62।।

कबन्धा युयु-धुर्-देव्या गृहीत-परमा-युधाः।
ननृ तुश-चापरे तत्र युद्धे तूर्य-लया-श्रिताः।।63।।

कबन्धाश्-छिन्न-शिरसः खड्ग-शक्ति-ऋष्टि-पाणयः।
तिष्ठ तिष्ठेति भासन्तो देवी-मन्ये महा-सुराः।।64।।

पातितै रथ-नागा-श्वैर-सुरैश्च वसुन्धरा।
अगम्या साभवत्-तत्र यत्रा-भूत्स महारणः।।65।।

शोणि-तौघा महा-नद्यः सद्यस्-तत्र प्रसु-स्रुवुः।
मध्ये चासुर-सैन्यस्य वारणा-सुर-वाजि-नाम।।66।।

क्षणेन तन्-महा-सैन्य-मसुरा-णाम् तथाम्बिका।
निन्ये क्षयम् यथा वह्निस्-तृण-दारू-महा चयम्।।67।।

स च सिंहो महा-नाद-मुत्-सृजन्-धुत-केसरः।
शरीरेभ्यो-अमरारी णाम-सूनिव वि-चिन्वति।।68।।

देव्या गणैश्च तैस्-तत्र कृतम् युद्धम् महासुरैः।
यथै-षाम्-तुतु-षुर्-देवाः पुष्प-वृष्टि-मुचो दिविै।।ॐ।69।।

श्री जगदम्बा दुर्गा अर्पण-मस्तु

तृतीयोऽध्यायः

ध्यानम्

ॐ उद्यद्-भानु-सहस्र-कान्ति-मरूण-क्षौमाम् शिरो-मालिकाम्
रक्ता-लिप्त-पयो-धराम्-जपवटीम् विद्याम-भीतिम् वरम्।

हस्ताब् जैर्-दधतीम् त्रिनेत्र-विलसद्-वक्त्रार-विन्द-श्रियम्
देवीम् बद्ध-हिमांशु-रत्न-मुकुटाम् वन्देऽर-विन्दस्थि-ताम्।।

ॐ ऋषिरुवाच।।1।।

निहन्य-मानम् तत्-सैन्य-मव-लोक्य महासुरः।
सेनानीश्-चिक्षुरः कोपाद्-ययौ योद्धु-मथाम्बि-काम्।।2।।

स देवीम् शर-वर्षेण ववर्ष समरेऽ सुरः।
यथा मेरू-गिरेः शृंगम् तोय-वर्षेण तोयदः।।3।।

तस्यच्-छित्त्वा ततो देवी लील-यैव शिरोत्-करान्।
जघान तुरगान् बाणैर्-यन्तारम् चैव वाजिनाम्।।4।।

चिच्छेद च धनुः सद्यो ध्वजम् चाति समुच्-छ्रितम्।
वि-व्याध-चैव गात्रेषु छिन्न-धन्वान-माशुगैः।।5।।

सच्छिन्न-धन्वा विरथो हताश्वो हत-सारथिः।
अभ्य-धावत ताम् देवीम् खड्ग-चर्म-धरोऽ-सुरः।।6।।

सिंह-माहत्य खड्गेन तीक्ष्ण-धारेण मूर्धनि।
आजधान भुजे सव्ये देवी-मप्यति-वेगवान्।।7।।

तस्याः खड्गो भुजम् प्राप्य पफाल नृप-नन्दन।
ततो जग्राह शूलम् स कोपा-दरूण-लोचनः।।8।।

चिक्षेप च ततस्-तत्तु भद्र-काल्याम् महासुरः।
जा-ज्वल्य मानम् तेजोभी रवि-बिम्ब-मिवाम्ब-रात्।।9।।

दृष्ट्वा तदा-पतच्-छूलम् देवी शूलम्-मुञ्चत।
तच्-छूलम् शतधा तेन नीतम् स च महासुरः।।10।।

हते तस्मिन-महा वीर्ये महिषस्य चमूपतौ।
आ-जगाम गजा-रूढश्-चामरस्-त्रि-दशार्-दनः।।11।।

सोऽपि शक्तिम् मुमो-चाथ देव्यास्-तामम्बिका द्रुतम्।
हुंकारा-भिहताम् भूमौ पातया-मास निष्प्रभाम्।।12।।

भग्नाम् शक्तिम् निपति-ताम् दृष्ट्वा क्रोध-समन्वितः।
चिक्षेप चामरः शूलम् बाणैस्-तदपि साच्छि-नत्।।13।।

ततः सिहः समुत्-पत्य गज-कुम्भान्तरे स्थितः।
बाहु-युद्धेन युयुधे तेनो च्चैस्-त्रि-दशा-रिणा।।14।।

युद्धय-मानौ ततस्-तौ तु तस्मान्-नागान्-महीम् गतौ।
युयु-धाते ऽति-संरब्धौ प्रहारै-रति-दारूणैः।।15।।

ततो वेगात् खमुत्-पत्य निपत्य च मृगा-रिणा।
कर-प्रहारेण शिरश्-चामरस्य पृथक-कृतम्।।16।।

उदग्रश्च रणे देव्या शिला-वृक्षादि-भिर्हतः।
दन्त-मुष्टि-तलैश्-चैव करा-लश्च निपातितः।।17।।

देवी कुद्धा गता-पातैश-चूर्ण-यामास-चोद्धतम्।
वाष्कलम्-भिन्दि-पालेन वाणैस्-ताम्रम्तथान्ध-कम्।।18।।

उग्रास्य-मुग्र-वीर्यम् च तथैव च महा-हनुम्।
त्रिनेत्रा च त्रिशूलेन जघान परमेश्वरी।।19।।

विडा-लस्या-सिना कायात्-पातया-मास वै शिरः।
दुर् धरम् दुर् मुखम् चोभौ शरैर्-नित्ये यमक्ष-यम्।।20।।

एवम् संक्षीय-माणे तु स्व-सैन्यै महिषासुरः।
माहिषेण स्वरूपेण त्रास-यामास तान्-गणान्।।21।।

कांश-चित-तुण्ड प्रहारेण खुर-क्षेपैस्-तथा-परान्।
लाङ्गूल-ताडि तांश्-चान्यान्-छृंगा-भ्याम् च विदा-रितान्।।22।।

वेगेन कांश्चिद्-परान्-नादेन भ्रमणेन च।
निःश्वास-पवने-नान्यान् पातया-मास भूतले।।23।।

निपात्य प्रमथा-नीक-मभ्य-धावत सोऽ सुरः।
सिंहम् हन्तुम् महादेव्याः कोपम् चक्रे ततोऽम्बिका।।24।।

सोऽपि कोपान् महा-वीर्यः खुर-क्षुण्ण-महीतलः।
शृंगा-भ्याम् पर्वता-नुच्चांश-चिक्षेप च ननाद च।।25।।

वेग-भ्रमण-विक्षुण्णा मही तस्य व्यशीर्-यत।
लाङ्-गूलेना-हतश्-चाब्धिः प्लावया-मास सर्वसः।।26।।

धुत-शृंग-विभिन्नाश्च खण्डम् खण्डम् युयुर्-घना।
श्वासा-निलास्-ताः शतशो निपेतुर्-नभसोऽ चलाः।।27।।

इति क्रोध-समाध्-मातमा-पतन्तम् महासुरम्।
दृष्टवा सा चण्डिका कोपम् तद्-वधाय तदाकरोत्।।28।।

सा क्षिप्त्वा तस्य वै पाशम् तम् बबन्ध महासुरम्।
तत्याज माहिषम् रूपम् सोऽपि बद्धो महा-मृधे।।29।।

ततः सिंहो-अभवत्-सद्यो यावत्-तस्याम्बिका शिरः।
छिनत्ति तावत्-पुरूषः खड्ग-पाणिर-दृश्यत।।30।।

तत एवाशु पुरूषम् देवी चिच्छेद सायकैः।
तम् खड्ग-चर्मणा सार्धम् ततः सोऽ-भून-महागजः।।31।।

करेण च महा-सिंहम् तम् चकर्ष जगर्ज च।
कर्ष-तस्तु करम् देवी खड्गेन निर-कृन्तत।।32।।

ततो महासुरो भूयो माहिषम् वपुरा-स्थितः।
तथैव क्षोभया-मास त्रैलोक्यम् सचरा-चरम्।।33।।

ततः क्रुद्धा जगन्माता चण्डिका पान-मुत्तमम्।
पपौ पुनः पुनश्चैव जहा-सारूण-लोचना।।34।।

ननर्द चासुर सोऽपि बल-वीर्य-मदोद्-धतः।
विषाणा-भ्याम् च चिक्षेप चण्डिकाम् प्रति भूधरान्।।35।।

सा च तान् प्रहतांस-तेन चूर्ण-यन्ती शरोत्-करैः।
उवाच तम् मदोद्-धूत-मुख-रागा-कुला-क्षरम्।।36।।

देव्युवाच।।37।।

गर्ज गर्ज क्षणम् मूढ मधु यावत्-पिबाम्य-हम्।
मया त्वयि हतेऽत्रैव गर्-जिष्यन्-त्याशु देवताः।।38।।

ऋषिरुवाच।।39।।

एव-मुक्त्वा समुत्-पत्य साऽऽ रूढा तम् महासुरम्।
पादेना-क्रम्य कण्ठे च शूले-नैन-मताडयत्।।40।।

ततः सोऽपि पदाऽऽ-क्रान्तस्-तया निज-मुखात्-ततः।
अर्ध-निष्क्रान्त एवा-सीद् देव्या वीर्येण संवृतः।।41।।

अर्ध-निष्-क्रान्त एवासौ युध्य-मानो महासुरः।
तया महा-सिना देव्या शिरश्-छित्त्वा निपातितः।।42।।

ततो हाहा-कृतम् सर्वम् दैत्य-सैन्यम् ननाश तत्।
प्रहर्ष च परम् जग्मुः सकला देवता-गणाः।।43।।

तुष्टु-वुस्-ताम् सुरा देवीम् सह दिव्यैर्-महर् षिभिः।
जगुर्-गन्धर्व-पतयो ननृ-तुश-चाप्सरो-गणाः।।ॐ44।।

श्रीजगदम्बा दुर्गा-अर्पण-मस्तु

चतुर्थोऽध्यायः

ध्यानम्

ॐ काला-भ्रा भाम् कटाक्षै-ररि-कुल-भयदाम्
मौलि----बद्धेन्दु----रेखाम्
शंखम् चक्रम् कृपाणम् त्रिशिख-मपि
करै-रुद-वहंतीम् त्रिनेत्राम्।
सिंह-स्कंदा-धिरूढाम् त्रिभुवन-
मखिलम् तेजसा पूर-यन्तीम्
ध्यायेद् दुर्गाम् जयाख्याम् त्रिदश-परिवृताम्
सेविताम् सिद्धि-कामैः।।

ॐ ऋषिरुवाच।।1।।

शक्रा-दयः सुर-गणा निह-तेऽ-तिवीर्ये।
तस्मिन्-दुरा त्मनि सुरारि-बले च देव्या।।
ताम् तुष्टु-वुः प्रणति-नम्र-शिरो-धरांसा।
वाग्भिः प्रहर्ष-फुल -कोद्-गम-चारू-देह्मः।।2।।

देव्या यया तत-मिदम् जग-दात्म-शक्त्या
निश्शेष-देव-गण-शक्ति-समूह-मूर्त्या।
ता-मम्बिका-खिल-देव-महर्षि-पूज्याम्
भक्त्या नताः स्म विद धातु शुभानि सा नः।।3।।

यस्याः प्रभाव-मतुलम् भगवान-नन्तो
ब्रह्मा हरश्च न हि वक्तु-मलम् बलम् च।
सा चण्डिका-खिल-जगत्-परि पाल-नाय
नाशाय चाशुभ-भयस्य मतिम् करोतु।।4।।

या श्रीः स्वयम् सुकृति-नाम् भव-नेष्व-लक्ष्मीः
पापात्-मनाम् कृत-धियाम् हृदयेषु बुद्धिः
श्रद्धा सताम् कुल-जन-प्रभ-वस्य लज्जा
ताम् त्वाम् नताः स्म परि-पालय देवि विश्वम्।।5।।

किम् वर्ण-याम तव रूप-मचिन्त्य - मेतत्
किम् चाति-वीर्य-मसुर-क्षय-कारि भूरि।
किम् चाह-वेषु चरि-तानि तवाद्-भुतानि
सर्वेषु देव्य-सुर-देव-गणादि-केषु।।6।।

हेतुः समस्त-जग-ताम् त्रिगु-णापि दोषैर्
न ज्ञायसे हरि-हरादि-भिरप्य-पारा
सर्वा-श्रया-खिल-मिदम् जगदंश-भूत-
मव्या-कृता हि परमा प्रकृतिस्-त्व-माद्या।।7।।

यस्याःसमस्त-सुरता समुदी-रणेन
तृप्तिम् प्रयाति सकलेषु मखेषु देवि
स्वा-हासि वै पितृ-गणस्य च तृप्ति-हेतु-
रुच्चार्-यसे त्वमत एव जनैः स्वधा च।।8।।

या मुक्ति-हेतुर-विचिन्त्य-महा-व्रता त्व
मभ्य-स्यसे सुनिय-तेन्द्रिय-तत्त्व-सारैः।
मोक्षार्-थिभिर्-मुनि-भिरस्त-समस्त-दोषैर्-
विद्यासि सा भगवती परमा हि देवि।।9।।

शब्दात्-मिका सुवि-मलर्ग्य-जुषाम् निधान-
मुद-गीथ-रम्य-पद-पाठ-वताम् च साम् नाम्।

देवी त्रयी भगवती भव-भाव-नाय
वार्ता च सर्व-जग-ताम्-पर-मारर्ति हन्त्री।।10।।
मेधासि देवि विदिता-खिल-शास्त्र-सारा
दुर्गासि दुर्ग-भव-सागर-नौर-संगा।
श्रीःकैट-भारि-हृद-यैक-कृता-धिवास
गौरी त्वमेव शशि-मौलि-कृत-प्रतिष्ठा।।11।।
ईषत्-सहास-ममलम्परि-पूर्ण-चन्द्र
बिम्बानु-कारि कन-कोत्तम-कान्ति-कान्तम्।
अत्यद्-भुतम् प्रहृत-मात्त-रूषा तथापि
वक्त्रम् विलोक्य सहसा महिषा-सुरेण।।12।।
दृष्ट्वा तु देवि कुपितम् भृकुटी-कराल
मुद्यच्-छशांक-सदृ-शच्-छवि यन्न सद्यः।
प्राणान्-मुमोच महिषस्-तद-तीव चित्रम्
कैर-जीव्यते हि कुपि तान्-तक दर्श नेन।।13।।
देवि प्रसीद परमा भवती भवाय
सद्यो विनाश-यसि कोप-वती कुलानि।
विज्ञात-मेतद-धुनैव यदस्त-मेतन्
नीतम् बलम् सु-विपुलम् महिषा-सुरस्य।।14।।
ते सम्मता जन-पदेषु धनानि तेषाम्
तेषाम् यशांसि न च सीदति धर्म-वर्गः।
धन्यास्त एव निभृ-तात्-मज-भृत्य-दारा
येषाम् सदा-भ्यु-दयदा भवती प्रसन्ना।।15।।
धर्-म्याणि देवि सक-लानि सदैव कर्मा-

ण्यत्या-दृतः प्रति-दिनम् सुकृती करोति।
स्वर्गम् प्रयाति च ततो भवती-प्रसा-दात्-
लोक-त्रये-ऽपि फलदा ननु देवि तेन।।16।।
दुर्गे स्मृता हरसि भीतिम-शेष-जन्तोः
स्वस्थैः स्मृता मति-मतीव शुभाम् ददासि।
दारिद्र्य-दुःख-भय-हारिणि का त्वदन्या
सर्वोप-कार-करणाय सदाऽऽर-द्र-चित्ता।।17।।
एभिर्-हतैर्-जग-दुपैति सुखम् तथैते
कुर्-वन्तु नाम नरकाय चिराय पापम्।
संग्राम-मृत्यु-मधि-गम्य दिवम् प्रयान्तु
मत्वेति नून-महि-तान् विनि-हंसि देवि।।18।।
दृष्-ट्वैव किम् न भवती प्रक-रोति भस्म
सर्वा-सुरा-नरिषु यत्-प्रहि-णोषि शस्त्रम्।
लोकान् प्रयान्तु रिप-गवोऽपि हि शस्त्र-पूता
इत्थम् -मतिर्-भवति तेष्वपि तेऽति-साध्वी।।19।।
खड्ग-प्रभा-निकर-विस्फुर णैस्-तथोग्रैः
शूलाग्र-क्रान्ति-निवहेन दृशो-ऽसुरा-णाम्।
यन्-नागता विलय-मंशु-मदिन्दु-खण्ड-
योग्या-ननम् तव विलोक-यताम् तदे तत्।।20।।
दुर्-वृत्त-वृत्त-शमनम् तव देवि शीलम्
रूपम् तथै-तद-विचिन्त्य-मतुल्य-मन्यैः।
वीर्यम् च हन्तृ हृत-देव-परा-क्रमा-णाम्
वैरि ष्वपि प्रकटि-तैव दया त्वयेत्-थम्।।21।।

केनो-पमा भवतु तेऽस्य परा-क्रमस्य
रूपम् च शत्रु-भय-कार्य-तिहारि कुत्र
चित्ते कृपा समर-निष्ठुरता च दृष्टा
त्वयि-येव देवि वरदे भुवन-त्रयेऽपि।।22।।

त्रै-लोक्य-मेत-दखिलम् रिपु-नाश-नेन
त्रातम् त्वया समर-मूर्धनि तेऽपि हत्वा।
नीता दिवम् रिपुगणा भय-मप्य-पास्त
मस्माक-मुन्-मद-सुरारि-भवम् नमस्ते।।23।।

शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके।
घण्टा-स्वनेन नः पाहि चाप-ज्या-निः-स्वनेन च।।24।।

प्राच्याम् रक्ष प्रती-च्याम् च चण्डिके रक्ष-दक्षिणे
भ्रामणे-नात्म-शूलस्य उत्तरस्याम् तथेश्वरि।।25।।

सौम्यानि यानि रूपाणि त्रै-लोक्ये-विच-रन्ति ते।
यानि चात्यर्थ-घोराणि तै रक्षास्-मांस्-तथा भुवम्।।26।।

खड्ग-शूल-गदा-दीनि यानि चास्-त्राणि तेऽम्बिके।
कर-पल्लव-संगीनि तैरस्-मान रक्ष सर्वतः।।27।।

ऋषिरुवाच।।28।।

एवम् स्तुता सुरैर्-दिव्यैः कुसुमैर्-नन्द-नोद्-भवैः।
अर्चिता जगताम् धात्री तथा गन्धानु-लेपनैः।।29।।

भक्त्या समस्-तैस्-त्रिदशैर्-दिव्यैर्-धूपैस्तु धूपिता।
प्राह प्रसाद-सुमुखी समस्तान् प्रण तान् सुरान्।।30।।

देव्युवाच।।31।।

व्रिय ताम्त्रिदशाः सर्वे यदस्-मत्तोऽ-भि-वाञ्छितम्।।32।।

देवा ऊचुः।।33।।

भग वत्या कृतम् सर्वम् न किंचिदव- शिष्यते।।34

यद यम् निहतः शत्रु रस्मा कम् कृतम् महिषा सुरः।
यदि चापि वरो देयस्-त्वयास्-माकम् महेश्वरि।।35।।

संस्-मृता संस्-मृता त्वम् नो हिंसेथाः परमा-पदः।
यश्च मर्त्यः स्तवै-रेभिस्-त्वाम् स्तो-ष्यत्य-मलानने।।36।।

तस्य वित्तर्द्धि-विभवैर्-धन-दारादि-सम्प दाम्।
वृद्धये-ऽस्मत्-प्रसन्ना त्वम् भवेथाः सर्व-दाम्बिके।।34।।

ऋषिरुवाच।।38।।

इति प्रसा-दिता देवैर्-जगतोऽर-थे तथाऽऽत्मनः।
तथे-त्युक्-त्वा भद्र काली वभू-वान्तर्-हिता नृप।।39।।

इत्ये-तत्-कथितम् भूप सम्भूता सा यथा पुरा।
देवी देव-शरी-रेभ्यो जगत्-त्रय-हितै-षिणी।।40।।

पुनश्च गौरी-देहात्-सा समुद्-भूता यथा-भवत्।
वधाय दुष्ट-दैत्या-नाम् तथा शुम्भ-निशुंभयोः।।41।।

रक्ष-णाय च लोका-नाम् देवा-नामुप-कारिणी।
तच्-छृणुष्व मयाऽऽ-ख्यातम् यथावत्-कथयामि ते।

ह्रींॐ।।42।।

श्रीजगदम्बा दुर्गा-अर्पण-मस्तु

पञ्चमोऽध्यायः

विनियोग : -

ॐ अस्य श्री-उत्तर-चरित्रस्य रूद्र ऋषिः, महा सरस्वती देवता, अनुष्टुप् छन्दः, भीमा शक्तिः, भ्रामरी बीजम्, सूर्यस्-तत्त्वम्, सामवेदः स्वरूपम् महा सरस्वती-प्रीत्यर्थे उत्तर-चरित्र-पाठ जपे विनियोगः।

ध्यानम्

ॐघण्टा-शूल-हलानि शंख-मुसले चक्रम् धनुः सायकम्
हस्ताब्जैर्-दधतीम् घनान्त-विलसच्-द्दीतांशु-तुल्य-प्रभाम्
गौरी -देह-समुद्-भवाम् त्रिजगता-माधार-भूताम् महा-
पूर्वा-मत्र सरस्वती-मनु-भजे शुम्भादि-दैत्यार्-दिनीम्।।

ॐ क्लीं ऋषिरुवाच।।1।।

पुरा शुम्भ-निशुम्भा-भ्याम-सुरा-भ्याम् शची-पतेः।
त्रै-लोक्यम् यज्ञ-भागाश्च हृता मद-बला-श्रयात्।।2।।

तावेव सूर्यताम् तद्-वदधि-कारम् तथैन्द-वम्।
कौबेर-मथ याम्यम् च चक्राते वरुणस्य च।।3।।

तावेव पव-नर्द्धिम् च चक्रतुर्-वह्नि-कर्म च।
ततो देवा विनिर्-धूता भ्रष्ट-राज्याः पराजिताः।।4।।

हृता-धिका-रास्-त्रि-दशास्-ता-भ्याम् सर्वे निरा-कृताः।
महा-सुरा-भ्याम् ताम् देवीम् संस् मरन्त्य-परा-जिताम्।।5।।

तयास्-माकम् वरो दत्तो यथाऽऽ पत्सु स्मृता-खिलाः।
भवताम् नाश-यिष्यामि तत्क्षणात्-परमा-पदः।।6।।

इति कृत्वा मतिम् देवा हिम-वन्तम् नगेश्वरम्।
जग्मुस्-तत्र ततो देवीम् विष्णु-मायाम् प्र-तुष्टु-वुः।।7।।

देवा ऊचुः।।8।।

नमो देव्यै महा-देव्यै शिवायै सततम् नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम्।।9।।

रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः।
ज्योत्-स्नायै चेन्दु-रूपिण्यै सुखायै सतत्म नमः।।10।।

कल्याण्यै प्रण-ताम् वृद्धयै सिद्धयै कूर्मो नमो नमः।
नैर्-ऋत्यै भू-भृताम् लक्ष्म्यै शर्-वाण्यै ते नमो नमः।।11।।

दुर्गायै दुर्ग-पारायै सारायै सर्व-कारिण्यै।
ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततम् नमः।।12।।

अति -सौम्याति-रौद्रायै नतास्-तस्यै नमो नमः।
नमो जगत्-प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः।।13।।

या देवी सर्व-भूतेषु विष्णु-मायेति शब्दिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।16।।

या देवी सर्व-भूतेषु चेत-नेत्य-भिधीयते।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।19।।

या देवी सर्वभूतेषु बुद्धि-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।22।।

या देवी सर्वभूतेषु निद्रा-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।25।।

या देवी सर्वभूतेषु क्षुधा-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।28।।

या देवी सर्वभूतेषु छाया-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।31।।

या देवी सर्वभूतेषु शक्ति-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।34।।

या देवी सर्वभूतेषु तृष्णा-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।37।।

या देवी सर्वभूतेषु क्षान्ति-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।40।।

या देवी सर्वभूतेषु जाति-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।43।।

या देवी सर्वभूतेषु लज्जा-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।46।।

या देवी सर्वभूतेषु शान्ति-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।49।।

या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धा-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।52।।

या देवी सर्वभूतेषु कान्ति-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।55।।

या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मी-रूपेण संस्थिता।

नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।58।।

या देवी सर्वभूतेषु वृत्ति-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।61।।

या देवी सर्वभूतेषु स्मृति-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।64।।

या देवी सर्वभूतेषु दया-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।67।।

या देवी सर्वभूतेषु तुष्टि-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।70।।

या देवी सर्वभूतेषु मातृ-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।73।।

या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्ति-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।76।।

इन्द्रिया-णाम-धिष्ठात्री भूता-नाम् चाखि-लेषु या।
भूतेषु सततम् तस्यै व्याप्ति-देव्यै नमो नमः।।77।।
चिति-रूपेण या कृत्-स्न-मेतद् व्याप्य स्थिता जगत्।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।80

स्तुता सुरैः पूर्व-मभीष्ट-संश्र-यात् तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता। करोतु सा
नः शुभ-हेतु-रीश्वरी शुभानि् भद्राण्य-भिहन्तु चापदः।।81।।

या साम्प्र तम् चोद्धत-दैत्य-तापितै-रस्मा-भिरीशा च सुरैर्-नमस्यते।
या च स्मृता तत् क्षण-मेव हन्ति नः सर्वा- पदो भक्ति-विनम्र-मूर्तिभिः।।82।।

ऋषिरुवाच।।83।।

एवम् स्तवादि-युक्ता-नाम् देवा-नाम् तत्र पार्वती।
स्नातु-मभ्या-ययौ तोये जाह्नव्या नृप-नन्दन।।84।।

साब्र-वीत्-तान् सुरान् सुभ्रूर-भवद्भिः स्तूय तेऽत्र का।
शरीर-कोश-तश् चास्याः समुद् भूता-ब्रवीच्-छिवा।।85।।

स्तोत्रम् ममै-तत् क्रियते शुम्भ-दैत्य-निरा-कृतैः।
देवैः समेतैः समरे निशुम्भेन परा-जितैः।।86।।

शरीर-कोशा-द्यत्-तस्याः पार्वत्या-निःसृ ताम्-बिका।
कौशि-कीति समस्तेषु ततो लोकेषु गीयते।।87।।

तस्याम् विनिर्-गता-याम् तु कृष्णा-भूत्-सापि पार्वती।
कालि-केति समा-ख्याता हिमाचल-कृता-श्रया।।88।।

ततोऽम्-बिकाम् परम् रूपम् विभ्रा-णाम् सुमनो-हरम्।
ददर्श चण्डो मुण्डश्च भृत्यौ शुम्भ-निशुम्भ-योः।।89।।

ता-भ्याम् शुंभाय चा ख्याता अतीव सु-मनोहरा।
का-प्यास्-ते स्त्री महाराज भास-यन्ती हिमाचलम्।।90।।

नैव तादृक् क्वचिद्-रूपम् दृष्टम् केन चिदुत्-तमम्।
ज्ञाय ताम् काप्यसौ देवी गृह्य-ताम् चा-सुरेश्वर।।91।।

स्त्री-रत्न-मति-चार-वंगी द्योत-यन्ती दिशस्-त्विषा।
सा तु तिष्ठति दैत्येन्द्र ताम् भवान द्रष्टु मर् हति।।92।।

यानि रत्नानि मणयो गजाश्वा-दीनि वै प्रभो।
त्रै लोक्ये तु समस्तानि साम्प्र तम् भान्ति ते गृहे।।93।।

ऐरावतः समा-नीतो गज-रत्नम् पुरन्द-रात्।
पारि-जात-तरुश्-चायम् तथै-वोच्चैः श्रवा हयः।।94।।

विमानम् हंस-संयुक्त-मेतत्-तिष्ठति तेंऽगणे।
रत्न-भूत-मिहा-नीतम् यदा-सीद-वेध सोऽद्-भुतम्।।95।।

निधिरेष महा-पद्मः समा नीतो धनेश्व-रात्।
किञ्जल्-किनीम् ददौ चाब्धिर्-माला-मम्लान-पंकजाम्।।96।।

छत्रम् ते वारुणम् गेहे काञ्चन-स्रावि तिष्ठति।
तथा यम् स्यन्दन-वरो यः पुराऽऽ सीत्-प्रजापतेः।।97।।

मृत्यो-रुत्-क्रान्ति-दा नाम शक्ति-रीश त्वया हृता।
पाशः सलिल-राजस्य भ्रातुस्-तव परिग्रहे।।98।।

निशुम्भ-स्याब्धि-जाताश्च समस्ता रत्न-जातयः।
वह्नि-रपि ददौ तुभ्य-मग्नि-शौचे च वाससी।।99।।

एवम् दैत्येन्द्र रत्नानि समस्-तान्या-हृतानि ते।
स्त्री-रत्न-मेषा कल्याणी त्वया कस्मान्न गृह्यते।।100।।

ऋषिरुवाच।।101।।

निशम्येति वचः शुम्भः स तदा चण्ड-मुण्डयोः।
प्रेषया-मास सुग्रीवम् दूतम् देव्या महासुरम्।।102।।

इति चेति च वक्तव्या सा गत्वा वचनान्-मम।
यथा चाभ्येति सम्-प्रीत्या तथा कार्यम् त्वया लघु।।103।।

स तत्र गत्वा यत्रास्-ते शैलोद्-देशेऽति-शोभने।
सा देवी ताम् ततः प्राह-श्लक्ष्-णम् मधुरया गिरा ।104।।

दूत उवाच।।105।।

देवि दैत्येश्वरः शुम्भस्-त्रै-लोक्ये परमेश्वरः।
दूतोऽहम् प्रेषि-तस्-तेन त्वत्-सकाश-मिहागतः।।106।।

अव्याह-ताज्ञः सर्वासु यः सदा देव-योनिषु।
निर्जिता-खिल-दैत्यारिः स यदाह शृणुष्व तत्।।107।।

मम त्रैलोक्य-मखिलम् मम देवा वशा-नुगाः।
यज्ञ-भागान्-अहम् सर्वानु-पाश्नामि पृथक-पृथक्।।108।।

त्रै-लोक्ये वर-रत्नानि मम वश्यान्य-शेषतः।
तथैव गज-रत्नम् च हृत्वा देवेन्द्र-वाहनम्।।109।।

क्षीरोद्-मथनोद्-भूत-मश्व-रत्नम् ममा-परैः।
उच्चैः श्रवस-संज्ञम् तत्-प्रणि-पत्य समर्पितम्।।110।।

यानि चान्यानि देवेषु गन्धर्वेषु-उरगेषु च।
रत्न-भूतानि भूतानि तानि मय्येव शोभने।।111।।

स्त्री-रत्न-भूताम् त्वाम् देवि लोके मन्या-महे वयम्।
सा त्व-मस्मानु-पागच्छ यतो रत्न-भुजो वयम्।।112।।

माम् वा ममानु-जम् वापि निशुम्भ-मुरु-विक्रमम्।
भज त्वम् चञ्चला-पांगि रत्न-भूतासि वै यतः।।113।।

पर-मैश्वर्य-मतुलम् पाप्-स्यसे मत्-परि-ग्रहात्।
एतद् बुद्धया समा-लोच्य मत्-परि-ग्रहताम् व्रज।।114।।

ऋषिरुवाच।।115।।

इत्युक्-ता सा तदा देवी गंभी-रान्तः स्मिता जगौ।
दुर्गा भगवती भद्रा यये-दम् धार्-यते जगत्।।116।।

देव्युवाच।।117।।

सत्य-मुक्तम् त्वया नात्र मिथ्या किंचित्-त्वयो-दितम्।
त्रैलोक्या-धिपतिः शुम्भो निशुम्भश्-चापि तादृशः।।118।।

किम् त्वत्र यत्-प्रति-ज्ञातम् मिथ्या तत्-क्रियते कथम्।
श्रूयता-मल्प-बुद्धि-त्वात्-प्रतिज्ञा या कृता पुरा।।119।।

यो माम् जयति संग्रामे यो मे दर्पम् व्यपो-हति।
यो मे प्रति बलो लोके स मे भर्ता भविष्यति।।120।।

तदा-गच्छतु शुम्भोऽत्र निशुम्भो वा महासुरः।
माम् जित्वा किम् चिरे-णात्र पाणिम् गृह्णातु मे लघु।।121।।

दूत उवाच।।122।।

अवलिप्-तासि मैवम् त्वम् देवि ब्रूहि ममाग्रतः।
त्रैलोक्ये कः पुमांस्-तिष्ठे-दग्रे शुम्भ-निशुंभयो।।123।।

अन्येषा-मपि दैत्या-नाम् सर्वे देवा न वै युधि।
तिष्ठन्ति सम्मुखे देवि किम् पुनः स्त्री त्वमे-किका।।124।।

इन्द्रा द्याः सकला देवास्-तस्थुर्-येषाम् न संयुगे।
शुम्भा-दीनाम् कथम् तेषाम् स्त्री प्रया-स्यसि-सम्मुखम्।।125।।

सा त्वम् गच्छ मयै-वोक्ता पार्श्वम् शुम्भ-निशुम्भ योः।
केशा-कर्षण-निर्-धूत-गौर-वा गमि-ष्यसि।।126।।

देव्युवाच।।127।।

एव-मेतद् बली शुम्भो निशुम्भश्-चाति-वीर्य-वान्।
किम् करोमि प्रतिज्ञा मे यदना-लोचिता पुरा।।128।।

स त्वम् गच्छ मयोक्तम् ते यदे तत्-सर्व-मादृतः।
तदा-चक्ष्वा-सुरेन्द्राय स च युक्तम् करोतु तत्।।ॐ।।129।।

श्रीजगदम्बा दुर्गा-अर्पण-मस्तु

षष्ठोऽध्यायः

ध्यानम्

ॐ नागा-धीश्वर-विष्टराम् फणि-फणोत्-तंसोरु-रत्नावली-
भास्वद्-देह-लताम् दिवाकर-निभाम् नेत्र-त्रयोद्-भासिताम्।
माला-कुंभ-कपाल-नीरज-कराम् चन्द्रार्ध-चूड़ाम् पराम्
सर्व-ज्ञेश्वर-भैरवांक-निलयाम् पद्मा-वतीम् चिन्तये।।

ॐ ऋषिरुवाच।।1।।

इत्या-कर्ण्य वचो देव्याः स दूतोऽ-मर्ष-पूरितः।
समा-चष्ट समा-गम्य दैत्य-राजाय विस्त रात्।।2।।

तस्य दूतस्य तद्-वाक्य-मा-कर्ण्या सुर-राट् ततः।
सक्रोधः प्राह दैत्या-नाम-धिपम् धूम्र-लोचनम्।।3।।

हे धूम्र-लोच-नाशु त्वम् स्व-सैन्य-परि-वारितः।
तामा-नय बलाद् दुष्टाम् केशा-कर्षण-विह्वलाम्।।4।।

तत्-परि-त्राणदः कश्चिद्-यदि वोत्-तिष्ठते-ऽपरः।
स हन्तव्यो-अमरो वापि यक्षो गन्धर्व एव वा।।5।।

ऋषिरुवाच।।6।।

तेना-ज्ञप्तस-ततः शीघ्रम स दैत्यो धूम्र-लोचनः।
वृतः षष्ट्या सहस्रा-णाम-सुरा णाम् द्रुतम् ययौ।।7।।

स दृष्ट्वा ताम् ततो देवीम् तुहिना-चल संस्थि-ताम्।
जगा-दोच्चैः प्रया-हीति मूलम् शुम्भ-निशुंभयोः।।8।।

न चेत्-प्रीत्याद्य भवती मद्-भर्तार-मुपै-ष्यति।
ततो बलान्-नया-म्येष केशा-कर्षण-विह्वलाम्।।9।।

देव्युवाच।।10।।

दैव्ये-श्वरेण प्रतिहते बलवान् बल संवृतः।
बलान्-नयसि मामे वम् ततः किम् ते करोम्यहम।।11।।

ऋषिरुवाच।।12।।

इत्युक्तः सोऽभ्य-धावत्-ताम सुरो धूम्र-लोचनः।
हुंकारे-णैव तम् भस्म-सा चका-राम्-बिका ततः।।13।।

अथ कुद्धम् महा-सैन्यम्-सुरा-णाम् तथाम्-बिका।
ववर्ष-साय कैस्-तीक्ष्णैस्-तथा शक्ति-परश्व धैः।।14।।

ततो धुतसटः कोपात्-कृत्वा नादम् सुभैरवम्।
पपाता-सुर-सेनायाम् सिंहो देव्याः स्ववाहनः।।15।।

कांश्चित् कर-प्रहारेण दैत्या-नास्येन चापरन्।
आक्रम्य चाध-रेणा-न्यान स जघान् महा -सुरान्।।16।।

केषांचित्-पाटया-मास नखैः कोष्ठानि केसरी।
तथा तल-प्रहारेण शिरांसि कृतवान् पृथक्।।17।।

विच्छिन्न-बाहु-शिरसः कृतास्-तेन तथापरे।
पपौ च रुधिरम् कोष्ठा-दन्ये-षाम् धुत केसरः।।18।।

क्षणेन तद्-बलम् सर्वम् क्षयम् नीतम् महात्मना।
तेन केसरिणा देव्या वाहने-नाति-कोपिना।।19।।

श्रुत्वा तम-सुरम् देव्या निहतम् धूम्र-लोचनम्।
बलम् च क्षयितम् कृत्-स्नम् देवी-केसरिणा ततः।।20।।

चुकोप दैत्या-धिपतिः शुम्भः प्रस्-फुरिता-धरः।
आज्ञाप-यामास च तौ चण्ड-मुण्डौ महासुरौ।।21।।

हे चण्ड हे मुण्ड बलैर्-बहुभिः परि-वारितौ।
तत्र गच्छत गत्वा च सा समा-नीय-ताम् लघु।।22।।

केशेष्वा-कृष्य बद्ध्वा वा यदि वः संशयो युधि।
तदा-शेषा-युधैः सर्वै-रसुरैर्-विनि -हन्य-ताम्।।23।।

तस्याम् हता-याम् दुष्टा-याम् सिंहे च विनि-पातिते।
शीघ्रमा-गम्य ताम् बद्ध्वा गृहीत्वा ताम-थाम्-बिकाम ॐ24।।

श्री जगदम्बा दुर्गा-अर्पण-मस्तु

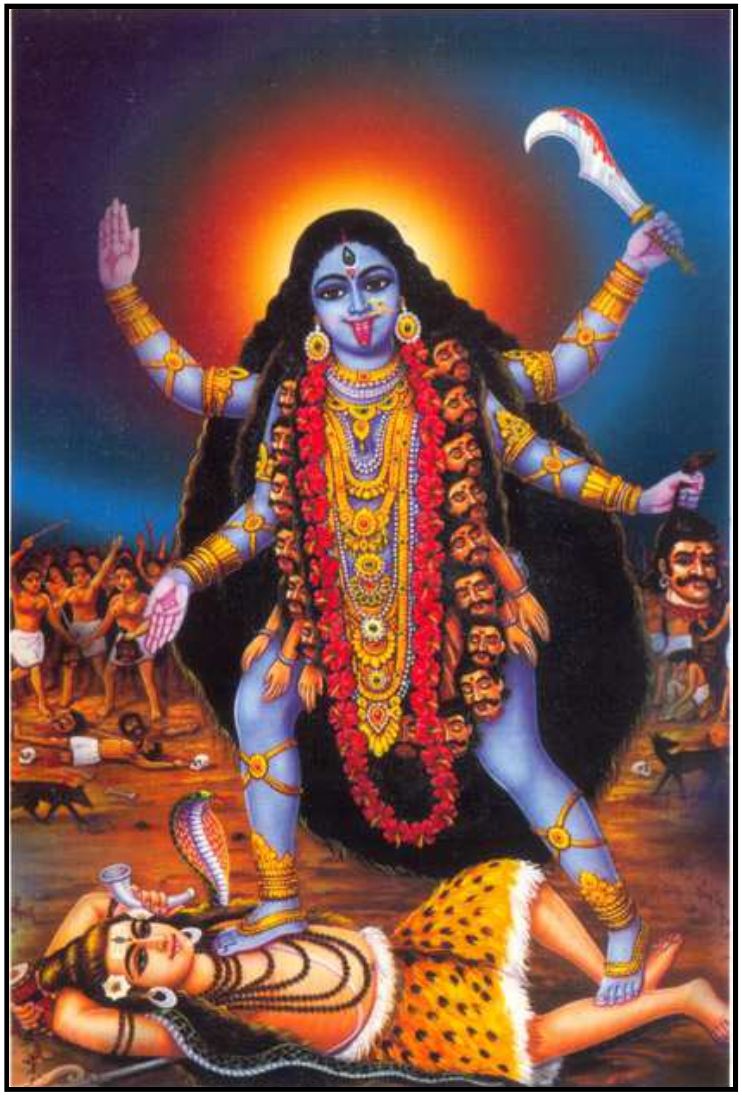

सप्तमोऽध्यायः

ध्यानम्

ॐ ध्याये-यम् रत्नपीठम् शुक-कल-पठितम् शृण्व-तीम् श्याम-लांगी
न्यस्-तै-कांघ्रि सरोजे शशि-शकल-धराम् वल्ल-कीम् वाद-यन्तीम।
कह्लारा-बद्ध-मालाम् नियमित-विलसच्- चोलि काम् रक्त-वस्त्राम्
मातंगी शंख-पात्राम् मधु-मदाम् चित्रकोद्-भासि-भालाम्।।

ॐ ऋषिरुवाच।।1।।

आज्ञप्-तास्ते ततो दैत्याश्-चण्ड-मुण्ड पुरो-गमाः।
चतुरंग-बलो-पेता युयु-रभ्यु-द्यता-युधाः।।2।।

ददृ-शुस्ते ततो देवी-मीषद्-धासाम् व्यवस्थि-ताम्।
सिंहस्यो-परि शैलेन्द्र-शृंगे महति काञ्चने।।3।।

ते दृष्ट्वा ताम् समा-दातु-मुद्यमम् चक्रु-रुद्यताः।
आकृष्ट-चापासि-धरास्-तथान्ये तत्-समीपगाः।।4।।

ततः कोपम् चका-रोच्चै-रम्बिका तान-रीन् प्रति।
कोपेन चास्या वदनम् मषी-वर्ण-मभूत्-तदा।।5।।

भ्रुकुटी-कुटिलात्-तस्या ललाट-फल काद्-द्रुतम्।
काली कराल-वदना विनिष्-क्रान्तासि-पाशिनी।।6।।

विचित्र-खट्वांग-धरा नर-माला-विभूषणा।
द्वीपि-चर्म-परीधाना शुष्क-मांसाति-भैरवा।।7।।

अति-विस्तार-वदना जिह्वा-ललन-भीषणा।
निमग्ना-रक्त-नयना नादा-पूरित-दिङ्मुखा।।8।।

सा वेगे-नाभि-पतिता घात-यन्ती महा-सुरान्।
सैन्ये तत्र सुरारी-णाम-भक्ष-यत तद्-बलम्।।9।।

पार्ष्णि-ग्राहांकुश-ग्राहि-योध-घण्टा-समन्वि-तान्।
समा-दायैक-हस्तेन मुखे चिक्षेप वारणान्।।10।।

तथैव योधम् तुरगै रथम् सारथिना सह।
निक्षिप्य वक्त्रे-दशनैश्-चर्व यन्त्यति भैरवम्।।11।।

एकम् जग्राह केशेषु ग्रीवा-यामथ चापरम्।
पदेना-क्रम्य चैवान्य-मुर-सान्य-मपो-थयत।।12।।

तैर्-मुक्तानि च शस्त्राणि महास्-त्राणि तथा सुरैः।
मुखेन जग्राह रुषा दशनैर्-मथिता-न्यपि।।13।।

बलिनाम् तद बलम् सर्वम्-सुरा णाम् दुरात्म नाम्।
ममर्दा-भक्ष-यच्-चान्या-नन्यांश्चा-ताडयत्-तथा।।14।।

असिना निहताः केचित्-केचित्-खटवांग-ताडिताः।
जग्मुर्-विनाश-मसुरा दन्ताग्रा-भिहतास्-तथा।।15।।

क्षणेन तद् बलम् सर्व-मसुरा-णाम् निपातितम्।
दृष्टवा चण्डोऽ-भिदु-द्राव ताम् काली-मति-भीषणाम्।।16।।

शर- वर्षैर्-महा-भीमैर्-भीमा-क्षीम ताम् महासुरः।
छादया-साम चक्रैश्च मुण्डः क्षिप्तैः सहस्रशः।।17।।

तानि चक्राण्य-नेकानि विश्मा-नानि तन्-मुखम्।
बभुर्-यथार्क-बिम्बानि सुबहूनि घनोदरम्।।18।।

ततो जहा-साति-रुषा भीमम् भैरव-नादिनी।
काली-कराल-वक्त्रान्तर-दुर्दर्श-दशनो-ज्ज्वला।।19।।

उत्थाय च महासिम् हङ् देवी चण्ड-मधावत।
गृहीत्वा चास्य केशेषु शिरस्-तेना-सिनाच्-छिनत्।।20।।

अथ मुण्डोऽ भ्य धावत्ताम् दृष्ट्वा चण्डम् निपा-तितम्।
तमप्य-पातयद्-भूमौ सा खडगाभि-हतम् रूषा।।21।।

हत-शेषम् ततः सैन्यम् दृष्टवा चण्डम् निपाति तम्।
मुण्डम च सुमहा-वीर्यम् दिशो भेजे भयातुरम्।।22।।

शिरश्-चण्डस्य काली च गृहीत्वा मुण्ड-मेव च।
प्राह प्र-चण्डाट्ट-हास-मिश्र-मभ्येत्य चण्डिकाम्।।23।।

मया तवात्रौ-पहृतौ चण्ड-मुण्डौ महापशू।
युद्ध-यज्ञे स्वयम् शुम्भम् निशुम्भम् च हनिष्यसि।।24।।

ऋषिरुवाच।।25।।

तवा-नीतौ ततो दृष्ट्वा चण्ड-मुण्डौ महासुरौ।
उवाच कालीम् कल्याणी ललितम् चण्डिका वचः।।26।।

यस्माच्-चण्डम् च मुण्डम् च गृहीत्वा त्वमु-पागता।
चामुण्डेति ततो लोके ख्याता देवि भविष्यसि।।ॐ।।27।।

श्रीजगदम्बा दुर्गा-अर्पण-मस्तु

अष्टमोऽध्यायः

ध्यानम्

ॐ अरूणा करुणा-तरंगि-ताक्षीम्
धृत-पाशांकुश-बाण-चाप-हस्ताम्।
अणि-मादि-भिरा-वृताम् मयूखै
रह मित्येव विभावये भवानीम्।।

ॐ ऋषिरुवाच।।1।।

चण्डे च निहते दैत्ये मुण्डे च विनि-पातिते।
बहुलेषु च सैन्येषु क्षयि-तेष्व-सुरेश्वरः।।2।।

ततः कोप-पराधीन-चेताः शुम्भः प्रताप-वान्।
उद्योगम् सर्व-सैन्या-नाम् दैत्या-नामा-दिदेश ह।।3।।

अद्य सर्व-बलैर् दैत्याः षड-शीति-रुदा-युधाः।
कम्बूनाम् चतुर-शीतिर्-निर्यान्तु स्व-बलैर्-वृतः।।4।।

कोटि-वीर्याणि पञ्चा-शद-सुराणाम् कुलानि वै।
शतम् कुलानि धोम्रा-णाम् निर्-गच्छन्तु ममा-ज्ञया।।5।।

कालका दौर्-हृदा मौर्याः काल-केयास्-तथा सुराः।
युद्धाय सज्जा निर्-यान्तु आज्ञया त्वरिता मम।।6।।

इत्या-ज्ञाप्या-सुरपतिः शुम्भो भैरव-शासनः।
निर्-जगाम महा-सैन्य-सहस्तैर्-बहुभिर्-वृतः।।7।।

आयान्तम् चण्डिका दृष्ट्वा तत-सैन्य-मति-भीषणम्।
ज्या-स्वनैः पूरया-मास धरणी-गगनान्-तरम्।।8।।

ततः सिंहो महा-नाद-मतीव कृतवान् नृप।
घण्टा-स्वनेन तन्-नाद-मम्बिका चोप-बृंहयत्।।9।।

धनुर्-ज्या-सिंह-घण्टानाम् नादा-पूरित-दिङ्मुखा।
ननादैर्-भीषणैः काली जिग्ये विस्तारि-तानना।।10।।

तम् निनाद-मुप-श्रुत्य दैत्य-सैन्यैश-चतुर्-दिशम्।
देवी सिंहस्-तथा काली सरोषैः परिवारिताः।।11।।

एतस्मिन्-नन्तरे भूप विनाशाय सुर-द्विषाम्।
भवा-यामर-सिंहाना-मति-वीर्य-बलान्विताः।।12।।

ब्रह्मेश-गुह-विष्णू नाम् तथेन्-द्रस्य च शक्तयः।
शरीरे-भ्यो विनिष्-क्रम्य तद्-रूपैश्-चंडि-काम् ययुः।।13।।

यस्य देवस्य यद्-रूपम यथा-भूषण-वाहनम्।
तद्-वदेव हि तच्-छक्तिर्-सुरान् योद्धु-मा ययौ।।14।।

हंसयुक्त-विमा-नाग्रे साक्ष-सूत्र-कमण्डलुः।
आयाता ब्रह्मणः शक्तिर्-ब्रह्माणी साभि-धीयते।।15।।

माहेश्वरी वृषा रूढ़ा त्रिशूल-वर-धारिणी।
महाहि-वलया प्राप्ता चन्द्र-रेखा-विभूषणा।।16।।

कौमारी शक्ति-हस्ता च मयूर-वर-वाहना।
योद्धु-मभ्या-ययौ दैत्या-नम्बिका गुह-रूपिणी।।17।।

तथैव वैष्णवी शक्तिर्-गरुडो-परि-संस्थिता।
शंख-चक्र-गदा-शारंग-खड्ग-हस्ताभ्यु-पाययौ।।18।।

यज्ञ-वाराह-मतुलम् रूपम् या विभ्रतो हरेः।
शक्तिः साप्या-ययौ-तत्र वारा-हीम् विभ्रती तनुम्।।19।।

नार-सिंही नृ-सिंहस्य विभ्रती सदृशम् वपुः।
प्राप्ता तत्र सटा-क्षेप-क्षिप्त-नक्षत्र-संहतिः।।20।।

वज्र-हस्ता तथै-वैन्द्री गज-राजो-परि स्थिता।
प्राप्ता सहस्र-नयना यथा शक्रस्-तथैव सा।।21।।

ततः परि-वृतस्-ताभि-रीशानो देव-शक्ति-भिः।
हन्यन्-ताम्-सुराः शीघ्रम् मम् प्रीत्याऽऽह चंडिकाम।।22।।

ततो देवी-शरीरात्-तु विनिष-क्रान्ताति-भीषणा।
चंडिका-शक्ति-रत्युग्रा शिवा-शत-निनादिनी।।23।।

सा चाह धूम्र-जटिल-मीशा-नमप राजिता।
दूत त्वम् गच्छ भगवन् पार्श्वम् शुम्भ-निशुंभयोः।।24।।

ब्रूहि शुम्भम् निशुम्भम् च दानवा-वति-गर्वितौ।
ये चान्ये दानवास्-तत्र युद्धाय समु-पस्थिता।।25।।

त्रैलोक्य-मिन्द्रो लभताम् देवाः सन्तु हविर्-भुजः।
यूयम् प्रयात पातालम् यदि जीवितु मिच्छथ।26।।

बला-बले-पादथ चेद्-भवन्तो युद्ध कांक्षिणः।
तदा-गच्छत तृप्यन्तु मच्-छिवा पिशितेन वः।।27।।

यतो नियुक्तो दौत्येन तया देव्या शिवः स्वयम्।
शिव-दूतीति लोके-अस्मिंस्-ततः सा ख्याति-मागता।।28।।

तेऽपि श्रुत्वा वचो देव्याः शर्वा-ख्यातम् महासुराः।
अमर्षा- पूरिता जग्मुर्-यत्र कात्यायनी स्थिता।।29।।

ततः प्रथम-मेवाग्रे शर-शक्त्य-ऋष्टि-वृष्टिभिः।
ववर्ष-रूद्ध-तामर्-षास्ताम्देवीम-ममरारयः।।30।।

सा च-तान् प्रहितान् बाणाञ्-छूल-शक्ति-परश्व धान्।
चिच्छेद लीलयाऽऽ ध्यात-मुक्तैर्-महेषुभिः।।31।।

तस्या-ग्रतस्-तथा काली शूल-पात-विदारितान्।
खट्वांग-पोथि तांश-चारीन कुर्वती व्यचरत्-तदा।।32।।

कमण्डलु-जलाक्षेप-हत-वीर्यन् हतौजसः।
ब्रह्माणी चा करोच्-छत्रून येन येन स्म धावति।।33।।

माहेश्वरी त्रिशूलेन तथा चक्रेण वैष्णवी।
दैत्यान-जघान कौमारी तथा शक्त्याति-कोपना।।34।।

ऐन्द्री-कुलिश-पातेन शतशो दैत्य-दानवाः।
पेतुर्-विदारिताः पृथ्व्याम् रूधि रौघ-प्रवर् षिणः।।35।

तुण्ड-प्रहार-विध्वस्ता द्रंष्ट्राग्र-क्षत-वक्षसः।
वाराह-मूर्त्या न्यप तंश्-चक्रेण च विदारिताः।।36।।

नखैर्-विदा-रितांश-चान्यान् भक्ष यन्ती महा सुरान्।
नारसिंही चचा-राजौ नादा-पूर्ण-दिगम्बरा।।37।।

चण्डाट्ट-हासै-रसुराः शिव-दूत्यभि-दूषिताः।
पेतुः पृथि-व्याम् क्रुद्धम् मर्द यन्तम् महा सुरान्।।38।।

इति मातृ गणम् क्रुद्धम् मर्द यन्तम् महा सुरान्।
दृष्ट्वा-वभ्यु-पायैर्-विवि धैर्-नेशुर्-देवारि-सैनिकाः।।39।।

पलायन-परान् दृष्ट्वा दैत्यान् मातृ-गणार्-दितान।
योद्धु-मभ्या-ययौ-क्रुद्धो रक्त-बीजो महासुरः।।40।।

रक्त-बिन्दुर्-यदा भूमौ पत-त्यस्य शरीरतः।
समुत्-पतति मेदि-न्याम् तत्-प्रमाणस्-तदासुरः।।41।।

युयुधे स गदा-पाणि-रिन्द्र-शाक्त्या महासुरः।
ततश्-चैन्द्री स्व-वज्रेण रक्त-बीजम्-ताडयत्।।42।।

कुलिशेना-हत-स्याशु बहु-सुस्राव शोणितम्।
समुत्-तस्थुस्-ततो योधास्-तद्रू पास्-तत्-पराक्रमाः।।43।।

यावन्तः पतितास्-तस्य शरीराद्-रक्त-बिन्दवः।
तावन्तः पुरुषा-जातास्-तद्-वीर्य-बल-विक्रमा।।44।।

ते चापि युयु-धुस्-तत्र पुरुषा-रक्त-संभवः।
समम् मातृ-भिरत्युग्र-शस्त्र-पाताति-भीषणम्।।45।।

पुनश्च वज्र-पातेन क्षत-मस्य शिरो-यदा।
ववाह रक्तम् पुरुषास्-ततो जाताः सहस्रशः।।46।।

वैष्णवी समरे चैनम् चक्रे-णाभि-जघान् ह।
गदया ताडया-मास ऐन्द्री तम-सुरेश्वरम्।।47।।

वैष्णवी-चक्र-भिन्नस्य रूधिर-स्राव-संभवः।
सहस्र-शो जगद्-व्याप्-तम् तत्-प्रमा-णैर्-महासुरैः।।48।।

शक्त्या जघान कौमारी वाराही च तथा-सिना।
माहेश्वरी त्रिशूलेन रक्त-बीजम् महासुरम्।।49।।

स चापि गदया दैत्यः सर्वा एवा हनत् पृथक्।
मातृः कोप-समा-विष्टो रक्त-बीजो महासुरः।।50।।

तस्या-हतस्य बहुधा शक्ति-शूलादि-भिर्-भुवि।
पपात-यो वै-रक्तौ घस्-तेनासन्-छतशोऽ-सुराः।।51।।

तैश्-चासुरा-सृक्-संभूतैर-सुरः सकलम् जगत्।
व्याप्त-मासीत्-ततो देवा भयमा-जग्मु-रुत्तमम्।।52।।

तान् विषण्णान् सुरान् दृष्ट्वा चंडिका प्राह सत्वरा।
उवाच कालीम् चामुण्डे विस्तीर्णम् वदनम् कुरु।।53।।

मच्-छस्त्र-पात-संभूतान् रक्त-बिन्दून्-महा-सुरान्।
रक्त-बिन्दोः प्रतीच्छ त्वम् वक्त्रे-णानेन वेगिना।।54।।

भक्ष-यन्ती चर रणे तदुत्-पन्नान्-महासुरान्।
एव-मेष क्षयम् दैत्यः क्षीण-रक्तो गमिष्यति।।55।।

भक्ष्य-माणास्-त्वया चोग्रा न चोत्पत-स्यन्ति चापरे।
इत्युक्-त्वा ताम् ततो देवी शूले-नाभि-जघान तम्।।56।।

मुखेन-काली जगृहे रक्त-बीजस्य शोणितम्।
ततो-असावा-जघा-नाथ गदया तत्र चंडिकाम्।।57।।

न चास्या वेदनाम् चक्रे गदा-पातोऽल्पि-कामपि।
तस्या-हतस्य देहात्-तु बहु सुस्राव-शोणितम्।।58।।

यतस्-ततस् तद्-वक्त्रेण चामुण्डा सम्प्र-तीच्छति।
मुखे-समुद्र-गता येऽस्या रक्त-पातान्-महासुराः।।59।।

तांश्-चखा-दाथ चामुण्डा पपौ तस्य च शोणितम्।
देवी शूलेन वज्रेण बाणैर्सि भिर्-ऋष्टि भिः।।60।।

जघान रक्त-बीजम् तम् चामुण्डा-पीत-शोणितम्।
स पपात मही-पृष्ठे शस्त्र-संघ-समाहतः।।61।।

नी-रक्तश्च महीपाल रक्तबीजो महासुरः।
ततस्-ते हर्ष-मतुल-मवा पुस्-त्रिदशा नृप।।62।।

तेषाम् मातृ गणो जातो ननस्ता-सृङ्-मदोद्-धतः।।ॐ।।63।।

श्रीजगदम्बा दुर्गा-अर्पण-मस्तु

नवमोऽध्यायः

ध्यानम्

ॐ बन्धूक-काञ्चन-निभम् रूचि-राक्ष-माला
पाशांकुशो च वरदाम् निज-बाहु-दण्डैः।
विभ्राण-मिन्दु शकला-भरणम् त्रिनेत्रम्-
अर्-धाम्बि-केश-मनिशम् वपु-राश्र-यामि।।

ॐ राजोवाच।।1।।

चित्र-मिदमा-ख्यातम् भगवान् भवता मम।
देव्याश्-चरित-माहात्म्यम् रक्तबीज-बधा-श्रितम्।।2।।

भूयस्-चेच्छा-म्यहम् श्रोतुम् रक्तबीजे निपातिते।
चकार शुम्भो यत्-कर्म निशुम्भश्-चाति-कोपनः।।3।।

ऋषिरुवाच।।4।।

चकार कोप-मतुलम् रक्तबीजे निपाततें।
शुम्भा-सुरो निशुम्भश्च हतेष्व-न्येषु-चाहवे।।5।।

हन्य-मानम् महा-सैन्यम् विलोक्या-मर्ष-मुद्-वहन।
अभ्य धावन्-निशुम्भोऽथ मुख्य-यासुर-सेनया।।6।।

तस्या-ग्रतस्-तथा पृष्ठे पार्श्व-योश्च महासुराः।
संदष्-टौष्ठ-पुटाः क्रुद्धा हन्तुम् देवी-मुपा-ययुः।।7।।

आजगाम महा-वीर्यः शुम्भोऽपि स्व-बलैर्-वृतः।
निहन्तुम् चण्डि-काम् कोपात्-कृत्वा युद्धम् तु मातृभिः।।8।।

ततो युद्ध-मती-वासीद्-देव्या शुम्भ-निशुम्भ योः।
शर-वर्ष-मती-वोग्रम् मेघयो-रिव वर्षतोः।।9।।

चिच्-छेदास्-तान्-छरांस् -ताभ्याम् चण्डिका-स्व-शिरोत्-करैः।
ताडया-मास चांगेषु शस्त्रौ-घैर-सुरेश्वरौ।।10।।

निशुम्भो निशितम् खड्गम् चर्म चादाय सुप्रभम्।
अताड्यन्-मूर्ध्नि सिंहम् देव्या वाहन-मुत्तमम्।।11।।

ताडिते वाहने देवी क्षुर-प्रेणासि-मुत्त-मम्।
निशुंभ-स्याशु चिच्छेद चर्म चा प्यष्ट-चन्द्रकम्।।12।।

छिन्ने चर्मणि खड्गे च शक्तिम् चिक्षेप सोऽसुरः।
ताम-प्यस्य द्विधा चक्रे चक्रे-णाभि-मुखा-गताम्।।13।।

कोपाध्-मातो निशुंभो-अथ शूलम् जग्राह दानवः।
आया-तम् मुष्टि-पातेन देवी तच्-चाप्य-चूर्णयत्।।14।।

आवि-ध्याथ गदाम् सोऽपि चिक्षेप चंडिकाम्।
सापि देव्या त्रिशूलेन भिन्ना भस्मत्व-मागता।।15।।

ततः परशु-हस्तम् तमा-यान्तम् दैत्य-पुंगवम्।
आहत्य देवी बाणौ-घैर-पातयत भूतले।।16।।

तस्मिन्-निपतिते भूमौ निशुंभे भीम-विक्रमे।
भ्रातर्-यतीव संक्रुद्धः प्रययौ हन्तु मम्-बिकाम्।।17।।

स स्थस्-थस् तथा-त्युच्-चैर्-गृहीत-परमा-युधैः।
भुजै-रष्टा-भिर-तुलैर् व्याप्या-शेषम् वभौ नभः।।18।।

तमा-यान्तम् समा-लोक्य देवी शंखम्-वादयत्।
ज्या-शब्दम् चापि धनुषश्च-चकारा-तीव दुःसहम्।।19।।

पूरया-मास ककुभो निज-घण्टा-स्वनेन च।
समस्त-दैत्य-सैन्या-नाम् तेजो-वध-विधायिना।।20।।

ततः सिंहो महा-नादैस्-त्या जितेभ-महा-मदैः।
पूरया-मास गगनम् गाम् तथैव दिशो-दश।।21।।

ततः काली समुत्-पत्य गगनम् क्ष्माम-ताडयत्।
करा-भ्याम् तन्-निनादेन प्राक्-स्व नास्ते तिरोहिताः।।22।।

अट्टाट्ट-हास मशिवम् शिवदूती चकार ह।
तैः शब्दैर्-सुरास्त्रेषुः शुम्भुः कोपम् परम् ययौ।।23।।

दुरात्मंस्-तिष्ठ तिष्ठेति व्याज-हाराम्-बिका यदा।
तदा जयेत्य-भिहितम् देवै-राकाश-संस्थितैः।।24।।

शुंभे-नागत्य या शक्तिर्-मुक्ता ज्वालाति-भीषणा।
आयान्ती वह्नि-कूटाभा सा निरस्ता महोल्कया।।25।।

सिंहनादेन शुंभस्य व्याप्तम् लोक-त्रयान्-तरम्।
निर्घात-निःस्वनो घोरो जितवान-वनीपते।।26।।

शुम्भ-मुक्तान्-छरान्देवी शुंभस्-तत्-प्रहि तान्-छरान्।
चिच्छेद स्व-शैर-रुग्रैः शत-शोऽथ सहस्रशः।।27।।

ततः सा चंडिका क्रुद्धा शूलेना-भिज-जघान तम्।
स तदा-भिहतो भूमौ मूर्च्छितो निपपात ह।।28।।

ततो निशुम्भः सम्प्राप्य चेतना-मात्त-कार्-मुकः।
आजघान शरैर् देवीम् कालीम् केसरि-णम् तथा।।29।।

पुनश्च कृत्वा बाहू-नाम-युतम् दनुजेश्वरः।
चक्रा-युधेन दिति-जश्-छादया-मास चण्डिकाम्।।30।।

ततो भगवती क्रुद्धा दुर्गा दुर्गार्-ति-नाशिनी।
चिच्छेद तानि चक्राणि स्व-शरैःसाय कांश्च तान्।।31।।

ततो निशुंभो वेगेन गदा-मादाय चण्डिकाम्।
अभ्य-धावत वै हन्तुम् दैत्य-सेना-समावृतः।।32।।

तस्या-पतत एवाशु गदाम् चिच्छेद चण्डिका।
खड्गेन शित-धारेण स च शूल समाददे।।33।।

शूल-हस्तम् समा-यान्तम् निशुंभ-मम रार्-दनम्।
हृदि विव्याध शूलेन वेगा-विद्धेन चंडिका।।34।।

भिन्नस्य तस्य शूलेन हृदयान्-निःसृतोऽ-परः।
महाबलो महा-वीर्यस्-तिष्ठेति पुरुषो वदन्।।35।।

तस्य निष्क्रा-मतो देवी प्रहस्य स्वन्-वत्-ततः।
शिरस्-चिच्छेद खड्गेन ततोऽ साव-पतद्-भुवि।।36।।

ततः सिंहश्-खादो ग्रम् दंष्ट्रा-क्षुण्ण-शिरो-धरान्।
असुरांस-तांस-तथा काली शिवदूती तथा परान्।37।।

कौमारी-शक्ति-निर्-भिन्नाः केचिन्-नेशुर्-महासुराः।
ब्रह्माणी-मंत्र-पूतेन तोये-नान्ये निराकृताः।।38।।

माहेश्वरी-त्रिशूलेन भिन्नाः पेतुस्-तथापरे।
वाराही-तुण्ड-घातेन केचिच्-चूर्णी-कृता भुवि।।39।।

खण्डम् खण्डम् च चक्रेण वैष्णव्या दानवाः कृताः।
वज्रेण चैन्द्री-हस्ताग्र-विमुक्तेन तथापरे।।40।।

केचिद्-विनेशु-रसुराः केचिन्-नष्टा महा-हवात्।
भक्षिताश्-चापरे काली-शिवदूती-मृगाधिपैः।।ॐ।।41।।

श्रीजगदम्बा दुर्गा-अर्पण-मस्तु

दशमोऽध्यायः

ध्यानम्

ॐ उत्तप्त-हेम-रुचिराम्
रवि-चन्द्र-वह्नि-नेत्राम्
धनुंश्-युतांकुश-पाश-शूलम्।
रम्यैर्-भुजैश्च दधतीम्
शिव-शक्ति-रूपाम् कामेश्वरी
हृदि भजामि धृतेन्दु-लेखाम्।।

ॐ ऋषिरुवाच।।1।।

निशुंभम् निहतम् दृष्ट्वा भ्रातरम् प्राण-सम्मितम्।
हन्य-मानम् बलम् चैव शुम्भः क्रुद्धोऽ ब्रवीद् वचः।।2।।

बला-बले-पाद्-दुष्टे त्वम् मा दुर्गे गर्व-मावह।
अन्या साम् बल-माश्रित्य युद्ध-यसे यति-मानिनी।।3।।

देव्युवाच।।4।।

एकै-वाहम् जगत्यत्र द्वितीया का ममा परा।
पश्यैता दुष्ट मय्येव विशन्त्यो मद्-विभूतयः।।5।।

ततः समस्-तास्-ता देव्यो ब्रह्माणी-प्रमुखा लयम्।
तस्या देव्या-स्तनौ जग्मु-रेकै-वासीत्-तदाम्बिका।।6।।

देव्युवाच।।7।।

अहम् विभूत्या बहुभि-रिह रूपैर्-यदा-स्थिता।
तत्-संहृतम् मयै-कैव तिष्ठा-म्याजौ स्थिरो भव।।8।।

ऋषिरुवाच।।9।।

ततः प्रव-वृते युद्धम् देव्याः शुंभस्य चोभ्योः।
पश्य-ताम् सर्व-देवानाम्-सुराणाम् च दारुणाम्।।10।।

शर-वर्षैः शितैः शस्त्रैस्-तथा स्त्रैश-चैव दारुणः।
तयोर्-युद्धम् भूद भूयः सर्व-लोक-भयंकरम्।।11।।

दिव्या-न्यस्-त्राणि शतशो मुमुचे यान्य-थाम्बिका।
बभञ्ज तानि दैत्येन्-द्रस्-तत्-प्रती-घात-कर् तृभिः।।12।।

मुक्तानि तेन चास्-त्राणि दिव्यानि परमेश्वरी।
बभञ्ज लीलयै-बोग्र-हुंका-रोच्-चारणा-दिभिः।।13।।

ततः शर-शरैर्-देवी-माच्छा-दयत सोऽसुरः।
सापि तत्-कुपिता देवी धनुश्-चिच्छेद् चेषुभिः।।14।।

छिन्ने धनुषि दैत्येन् द्रस्-तथा शक्ति -मथा-ददे।
चिच्छेद देवी चक्रेण ता-मप्यस्य करे स्थिताम्।।15।।

ततः खड्ग-मुपादाय शत-चंद्रम् च भानुमत्।
अभ्य-धावत्-तदा देवीम् दैत्या-नामधि पेश्वरः।।16।।

तस्या-पतत एवाशु खड्गम् चिच्छेद चण्डिका।
धनुर्-मुक्तैः शितैर्-बाणैश्-चर्म चार्क-करामलम्।।17।।

हताश्वः स तदा दैत्यश्-छिन्न-धन्वा विसारथिः।

जग्राह मुद्गरम् घोर-मम्बिका-निधनोद्-द्यतः।।18।।

चिच्छेदा-पततस्-तस्य मुदगरम् निशितैः शिरैः।
तथापि सोऽभ्य-धावत्ताम् मुष्टि-मुद्यम्य वेगवान्।।19।।

स मुष्टिम् पातया-मास हृदये दैत्य-पुंगवः।
देव्यास्-तम् चापि सा देवी तलेनो-रस्य-ताडयत।।20।।

तल-प्रहारा-भिहतो निपपात महीतले।
स दैत्यराजः सहसा पुनरेव तथोत्-थितः।।21।।

उत्-पत्य च प्रगृह्योच्-चैर्-देवीम् गगन-मास्थितः।
तत्रापि सा निराधारा युयुधे तेन चण्डिका।।22।।

नियुद्धम् खे तदा दैव्यश्-चंडिका च परस्परम्।
चक्रतुः प्रथमम् सिद्ध-मुनि-विस्मय-कारकम्।।23।।

ततो नियुद्धम् सुचिरम् कृत्वा तेनाम्-बिका-सह।
उत्-पात्य भ्रामया-मास चिक्षेप धरणी-तले।।24।।

स क्षिप्तो धरणीम् प्राप्य मुष्टि-मुद्यम्य वेगितः।
अभ्य-धावत दुष्टात्मा चंडिका-निधनेच्-छया।।25।।

तमा-यान्तम् ततो देवी सर्व-दैत्य-जनेश्वरम्।
जगत्याम् पातया-मास भित्त्वा शूलेन वक्षसि।।26।।

स गतासुः पपातोर्-व्याम् देवी-शूलाग्र विक्षतः।
चालयन् सकलाम् पृथ्वीम् साब्धि-द्वीपाम सपर्वताम्।।27।।

ततः प्रसन्न-मखिलम् हते तस्मिन दुरात्मनि।

जगत्-स्वास्थ्य-मती-वाप निर्मलम् चाभवन्-नभः।।28।।

उत्पात-मेघाः सोल्का ये प्रागा-संस्ते-शमम् ययुः।
सरितो मार्ग-वाहि-न्यस्-तथा-संस्-तत्र पातिते।।29।।

ततो देव-गणाः सर्वे हर्ष निर्भर-मानसाः।
बभूवुर-निहते तस्मिन् गन्धर्वा ललितम् जगुः।।30।।

अवाद-यंस्-तथै-वान्ये ननृ-तुश्-चाप्सरो-गणाः।
ववुः पुण्यास्-तथा वाताः सुप्रभोऽ-भूद्-दिवाकरः।।31।।

जज्व-लुश्-चाग्नयः शान्ताः शान्ता दिग्-जनित-स्वनाः।।ॐ।।32।।

श्रीजगदम्बा-दुर्गा-अर्पण-मस्तु

एकादशोऽध्यायः

ध्यानम्

ॐ बाल-रवि-द्युति-मिन्दु-किरीटाम् तुंग-कुचाम् नयन-त्रय-युक्ताम्।
स्मेर-मुखीम् वर-दांकुश-पाशा भीति-कराम् प्रभजे भुवनेशीम्।।

ॐ ऋषिरुवाच।।1।।

देव्या हते तत्र महा-सुरेन्द्रे सेन्द्राः सुरा वह्नि-पुरो-गमास्-ताम्।
कात्या-यनीम् तुष्टु-वुरिष्ट-लाभाद् विकाशि-वक्त्राब्ज-विकाशि-ताशाः।।2।।

देवि प्रपन्नार्-तिहरे प्रसीद प्रसीद मातर्-जगतोऽ-खिलस्य।
प्रसीद विश्वे-श्वरि पाहि विश्वम् त्वमी-श्वरी-देवि चरा-चरस्य।।3।।

आधार-भूता जगतस्-त्वमेका महीं-स्वरूपेण यतः स्थितासि।
अपाम्स्वरू-पस्थि-तया त्वयैत-दाप्या-यते कृत्-स्न-मलंघ-वीर्ये।।4।।

त्वम् वैष्णवी शक्ति-रनन्त-वीर्या विश्वस्य बीजम् परमासि माया।
सम्-मोहितम् देवि समस्त-मेतत् त्वम् वै प्रसन्ना भुवि मुक्ति-हेतुः।।5।।

विद्या समस्-तास्-तव देवि भेदाः स्त्रियः समस्ताः सकला जगत्सु।
त्वयै-कया पूरित-मम्ब-यैतत् का ते स्तुतिः स्तव्य-परा परोक्तिः।।6।।

सर्व-भूता यदा देवी स्वर्ग-मुक्ति-प्रदायिनी।
त्वम् स्तुता स्तुतये का वा भवन्तु पर-मोक्तयः।।7।।

सर्वस्य बुद्धि-रूपेण जनस्य हृदि संस्थिते।
स्वर् गाप-वर्गदे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते।।8।।

कला-काष्ठादि-रूपेण परिणाम-प्रदायिनी।
विश्वस्यो-परतौ शक्ते नारायणि नमोऽस्तु ते।।9।।

सर्व-मंगल-मंगल्ये शिवे सर्वार्थ-साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते।।10।।

सृष्टि-स्थिति-विनाशा-नाम् शक्ति-भूते सनातनि। गुणा
श्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु ते।।11।।

शरणा-गत-दीनार्त-परि-त्राणा-परायणे।
सर्वस्यार्-तिहरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते।।12।।

हंस-युक्त-विमा-नस्थे ब्रह्माणी-रूप-धारिणि।
कौ-शाम्भः-क्षरिके देवि नारायणि नमोऽस्तु ते।।163।।

त्रिशूल-चंद्राहि-धरे महा-वृषभ-वाहिनि।
माहेश्वरी-स्वरूपेण नारायणि नमोऽस्तु ते।।14।।

मयूर-कुक्कुट-वृते महा-शक्ति-धरेऽ-नघे।
कौमारी-रूप-संस्थाने नारायणि नमोऽस्तु ते।।15।।

शंख-चक्र-गदा-शारंग-गृहीत-परमा-युधे।
प्रसीद वैष्णवी-रूपे नारायणि नमोऽस्तु ते।।16।।

गृही-तोग्र-महा-चक्रे दंष्ट्रोद्-धृत-वसुंधरे।
वाराह-रूपिणी शिवे नारायणि नमोऽस्तु ते।।17।।

नृसिंह-रूपे-णोग्रेण हन्तुम् दैत्यान् कृतो-द्यमे।
त्रैलोक्य-त्राण-सहिते नारायणि नमोऽस्तु ते।।18।।

किरी-टिनी महा-वज्रे सहस्र-नयनो-ज्ज्वले।
वृत्र-प्राण-हरे चैन्द्रि नारायणि नमोऽस्तु ते।।19।।

शिव-दूती-स्वरूपेण हत-दैत्य-महाबले।
घोर-रूपे महारावे नारायणि नमोऽस्तु ते।।20।।

दंष्ट्रा-कराल-वदने शिरो-माला-विभूषणे।
चामुण्डे मुण्ड-मथने नारायणि नमोऽस्तु ते।।21।।

लक्ष्मि लज्जे महाविद्ये श्रद्धे पुष्टि-स्वधे ध्रुवे।
महा-रात्रि महाऽविद्ये नारायणि नमोऽस्तु ते।।22।।

मेधे सरस्वति वरे भूति बाभ्रवि तामसि।
नियते त्वम् प्रसी-देशे नारायणि नमोऽस्तु ते।।23।।

सर्व- स्वरूपे सर्वेशे सर्व-शक्ति-समन्विते।
भये-भ्यस्-त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते।।24।।

एतत्-ते वदनम् सौम्यम् लोचन-त्रय-भूषितम्।
पातु नः सर्व-भीतिभ्यः कात्या-यनि नमोऽस्तु ते।।25।।

ज्वाला-कराल-मृत्यु ग्रम-शेषा-सुर-सूदनम्।
त्रिशूलम् पातु नो भीतेर्-भद्रकाली नमोऽस्तु ते।।26।।

हिनस्ति दैत्य-तेजांसि स्वेना-पूर्य या जगत्।
सा घण्टा पातु नो देवि पापे भ्योऽ नः सुतानिव।।27।।

असुरा-सृग्व-सापंक-चर् चितस्ते करो-ज्ज्वलः।
शुभाय खड्गो भवतु चंडिके त्वाम् नता वयम्।।28।।

रोगान-शेषान-पहंसि तुष्टा रूष्टा तु कामान् सकलान-भीष्टान्।
त्वामा-श्रिता नाम् न विपन्-नराणाम् त्वामा-श्रिता ह्या-श्रयताम् प्रयान्ति।।29।।

एतत्-कृत म्यत्-कदनम् त्वयाद्य धर्म-द्विषाम्देवि महासुरा-णाम्।
रूपैर-नेकैर्-बहुधाऽऽत्म-मूर्तिम् कृत्वाम्-बिके तत्-प्रकरोति कान्या।।30।।

विद्यासु-शास्त्रेषु विवेक-दीपे-ष्वाद्येषु वाक्येषु च का त्वदन्या।
ममत्व-गर्तेऽ-ति-महान्ध-कारे विभ्रा-मयत्ये-तद-तीव विश्वम्।।31।।

रक्षांसि यत्रोग्र-विषाश्च नागा यत्रा-रयो दस्यु-बलानि यत्र।
दावा-नलो यत्र तथाब्धि-मध्ये तत्र स्थिता त्वम् परिपासि विश्वम्।।32।।

विश्वे-श्वरि त्वम् परि-पासि विश्वम् विश्वात्मिका धार-यसीति विश्वम्।
विश्वेश-वन्द्या भवती भवन्ती विश्वा-श्रया ये त्वयि भक्ति नम्राः।।33।।

देवि प्रसीद परि-पालय नोऽरि-भीतेर्-नित्यम् यथा-सुर-वधाद-धुनैव सद्यः।
पापानि सर्व-जगताम् प्रशमम् नयाशु उत्पात-पाक-जनितांश्च-महोप-सर्गान्।।34।।

प्रण-ता नाम् प्रसीद त्वम् देवि विश्वार्-तिहा-रिणि।
त्रैलोक्य-वासिना-मीड्ये लोका-नाम् वरदा भव।।35।।

देव्युवाच।।36

वर-दाहम् सुरगणा वरम् यन्मन-सेच्छथ।
तम् वृणु-ध्वम् प्रय-च्छामि जगता-मुप-कारकम्।।37।।

देवा ऊचुः।।38।।

सर्वा-बाधा- प्रशमनम् त्रैलो-क्यस्या-खिलेश्वरि।
एवमेव त्वया कार्य-मस्मद्-वैरि-विना-शनम्।।39।।

देव्युवाच।।40।।

वैवस्व तेऽन्तरे प्राप्ते अष्टा-विंशति-मे युगे।
शुंभो निशुंभश्-चै-वान्या-वुत्-पत्स्येते महासुरौ।।41।।

नन्द-गोप-गृहे जाता यशोदा-गर्भ-संभवा।
ततस् तौ नाश-यिष्यामि विंध्या-चल-निवासिनी।।42।।

पुन-रप्यति-रौद्रेण रूपेण पृथ्वी-तले।
अव-तीर्य हनि-ष्यामि वैप्र-चित्तांस्-तु दानवान्।।43।।

भक्ष-यन्त्याश्-च तानु-ग्रान वैप्र-चितान्-महासुरान्।
रक्ता दन्ता भविष्यन्ति दाडिमी-कुसुमो-पमाः।।44।।

ततो माम् देवताः स्वर्गे मर्त्य-लोके च मानवाः।
स्तु-वन्तो व्याहरि-ष्यन्ति सततम् रक्त दन्तिकाम्।।45।।

भूयश्च शत-वार्षिक्या-मना-वृष्ट्या-मनम्-भसि।
मुनिभिः संस्तुता भूमौ सम्भवि-ष्याम्य-योनिजा।।46।।

ततः शतेन नेत्रा-णाम् निरी-क्षिष्यामि यन्-मुनीन्।
कीर्त-यिष्यन्ति मनुजाः शताक्षी-मिति माम् ततः।।47।।

ततोऽ हमखिलम् लोक-मात्म-देह-समुद् भवैः।
भरिष्यामि सुराः शाकै-रावृष्टेः प्राण-धारकैः।।48।।

शाकम्-भरीति विश्ख्यातिम् तदा यास्या-म्यहम् भुवि।
तत्रैव च वधि-ष्यामि दुर्ग-माख्यम् महासुरम्।।49।।

दुर्गा देवीति विख्यातम् तन्मे नाम भविष्यति।
पुनश्-चाहम् यदा भीमम् रूपम् कृत्वा हिमाचले।।50।।

रक्षांसि भक्ष-यिष्यामि मुनीनाम् त्राण-कारणात्।
तदा माम् मुनयः सर्वे स्तोष-यन्त्या-नम्र-मूर्तयः।।51।।

भीमा देवीति विख्यातम् तन्मे नाम-भविष्यति।
यदा-रुणा-ख्यस्-त्रैलोक्ये महा-बाधाम् करिष्यति।।52।।

तदाहम् भ्रामरम् रूपम् कृत्वाऽ-संख्ये-षट् पदम्।
त्रैलो-क्यस्य हितार्-थाय वधि-ष्यामि महा-सुरम्।।53।।

भ्राम-रीति च माम् लोकास्-तदा स्तोष्यन्ति सर्वतः।
इत्थम् यदा यदा बाधा दान-वोत्था भविष्यति।।54।।

तदा-तदाव-तीर्या-हम् करिष्या-म्यरि-संक्षयम्।।ॐ।।55।।

श्रीजगदम्बा-दुर्गा-अर्पण-मस्तु

द्वादशोऽध्यायः

ध्यानम्

ॐ विद्युद् दाम-सम-प्रभाम् मृगपति-स्कन्ध-स्थिताम् भीषणाम्
कन्याभिः करवाल-खेट-विलसद्-धस्ता-भिरा-सेविताम्।
हस्तैश्-चक्र-गदासि-खेट-विशि खांश्-चापम् गुणम् तर्जनीम्
विभ्राणा-मन-लात्मि-काम् शशि-धराम् दुर्गाम् त्रिने-त्राम् भजे।।

ॐ देव्युवाच।।1।।

एभिः स्तवैश्च माम् नित्यम् स्तो-ष्यते यः समाहितः।
तस्या हम् सकलाम् बाधाम् नाश-यिष्याम्य-संशयम्।।2।।

मधु-कैटभ-नाशम् च महिषा-सुर-घातनम।
कीर्त-यिष्यन्ति ये तद्-वद् वधम् शुंभ-निशुंभ-योः।।3।।

अष्टम्याम् च चतुर्-दश्याम् नवम्याम् चैक-चेतसः।
श्रो-ष्यन्ति चैव ये भक्त्या मम माहात्म्य-मुत्तमम्।।4।।

न तेषाम् दुष्कृतम् किंचिद् दुष्कृ-तोत्था न चापदः।
भविष्यति न दारिद्र यम न चैवेष्ट-वियो-जनम्।।5।।

शत्रुतो न भयम् तस्य दस्युतो वा न राजतः।
न शस्त्रा-नल-तोयौ-घात्-कदाचित्-संभवि ष्यति।।6।।

तस्मान्-ममैतन्-माहात्म्यम् पठि तव्यम् समाहितैः।
श्रोतव्यम् च सदा भक्त्या परम् स्वस्-त्यय नम् हि तत्।।7।।

उप-सर्गान्-शेषांस्तु महा-मारी-समुद्-भवान्।
तथा त्रिविध-मुत्पातम् माहात्म्यम् शमयेन्-मम।।8।।

यत्रै-तत्-पठ्यते सम्यङ्-नित्य-मायतने मम्।
सदा न तद्-विमोक्ष्यामि सांनिध्यम् तत्र मे स्थितम्।।9।।

बलि-प्रदाने पूजाया-मग्नि-कार्ये महोत्सवे।
सर्वम् ममै-तच्-चरित-मुच्-चारयम् श्राव्य-मेव-च।।10।।

जानता-अजानता वापि बलि-पूजाम् तथा कृताम्।
प्रतीच् छिष्या-म्यहम् प्रीत्या-वह्नि-होमम् तथा कृतम्।।11।।

शरत्काले महापूजा क्रियते या च वार्षिकी।
तस्याम् ममै-तन्-माहात्म्यम् श्रुत्वा भक्ति-समन्वितः।।12।।

सर्वा-बाधा-विनिर्-मुक्तो धन-धान्य-सुतान्वितः।
मनुष्यो मत्-प्रसादेन भविष्यति न संशयः।।13।।

श्रुत्वा ममेतन्-माहात्म्यम् तथा चोत्-पत्तयः शुभा।
पराक्रमम् च युद्धेषु जायते निर्भयः पुमान्।।14।।

रिपवः संक्षयम् यान्ति कल्याणम् चोप-पद्यते।
नन्दते च कुलम् पुंसाम् माहात्म्यम् मम शृण्व ताम्।।15।।

शान्ति-कर्मणि सर्वत्र तथा दुःस्वप्न-दर्शने।
ग्रह-पीडासु चो-ग्रासु माहात्-म्यम् शृणु-यान्-मम।।16।।

उप-सर्गाः शमम् यान्ति ग्रह-पीडाश्च दारुणाः।
दुःस्वप्नम् च नृ-भिर्-दृष्टम् सुस्वप्न-मुप-जायते।।17।।

बाल-ग्रहाभि-भूतानाम् बालानाम् शान्ति-कारकम्।
संघात-भेदे च नृणाम् मैत्री-करण-मुत्तमम्।।18।।

दुर्-वृत्ता-नाम-शेषाणाम् बाल-हानि-करम् परम्।
रक्षो-भूत-पिशाचा-नाम् पठना-देव नाशनम्।।19।।

सर्वम् ममै-तन् माहात्-म्यम् मम सन्निधि-कारकम्।
पशु-पुष्पार्-घ्र्य-धूपैश्च गंध-दीपैस्-तथोत्तमैः।।20।।

विप्रा-णाम् भोजनैर्-होमैः प्रोक्ष-णीयै-रहर-निशम्।
अन्यैश्च विवि-धैर-भोगैः प्रदानेर-वत्सरेण या।।21।।

प्रीतिर्-मे क्रियते सास्मिन् सकृत्-सुचरिते श्रुते।
श्रुतम् हरति पापानि तथाऽऽ रोग्यम् प्रयच्छति।।22।।

रक्षाम् करोति भूतेभ्यो जन्मनाम् कीर्तनम् मम।
युद्धेषु चरितम् यन्मे दुष्ट-दैत्य-निबर्-हणम्।।23।।

तस्मिन्-छुते वैरि-कृतम् भयम् पुंसाम् न जायते।
युष्माभिः स्तुतयो याश्च याश्च ब्रह्मर्षि-भिः कृताः।।24।।

ब्रह्मणा च कृतास्-तास्तु प्रयच्छन्ति शुभाम् मतिम्।
अरण्ये प्रान्तरे वापि दावाग्नि-परि-वारितः।।25।।

दस्यु-भिर्वा वृतः शून्ये गृहीतो वापि शत्रुभिः।
सिंह-व्याघ्रा-नुयाता वा वने वा वन-हस्तिभिः।।26।।

राज्ञा क्रुद्धेन चा-ज्ञप्तो वध्यो बंध-गतोऽपि वा।
आधूर्-णितो वा वातेन स्थितः पाते महार्णवे।।27।।

पतत्-सु चापि शस्त्रेषु संग्रामे भृश-दारूणे।
सर्वा-बाधासु घोरासु वेद-नाभ्यर्-दितोऽपि वा।।28।।

स्मरन्-ममै-तच्चरि-तम् नरो मुच्येत संकटात्।
मम प्रभा-वात्-सिंहाद्या दस्यवो वैरिणस्-तथा।।29।।

दूरा-देव पलायन्ते स्मर-तश्-चरितम् मम।।30।।

ऋषिरुवाच।।31।।

इत्युक्-त्वा सा भगवती चण्डिका चण्ड-विक्रमा।।32।।
पश्यता-मेव देवानाम् तत्रै-वान्तर-धीयत।
तेऽपि देवा निरातंकाः स्वाधि-कारान् यथा पुरा।।33।।
यज्ञ-भाग-भुजः सर्वे चक्रुर्-विनि-हतारयः।
दैत्याश्च देव्या निहते शुम्भे देव-रिपौ युधि।।34।।
जगद्-विध्वंसिनि तस्मिन् महोग्रेऽ-तुल-विक्रमे।
निशुम्भे च महा-वीर्ये शेषाः पाताल-माययुः।।35।।
एवं भगवती देवी सा नित्यापि पुनः पुनः।
सम्भूय कुरुते भूप जगतः परि-पालनम्।।36।।
तयै-तन्-मोहयते विश्वम् सैव विश्वम् प्रसूयते।
सा याचिता च विज्ञानम् तुष्टा ऋद्धिम् प्रयच्छति।।37।।
व्याप्तम् तयै-तत्-सकलम् ब्रह्माण्डम् मनुजेश्वर।
महा-का-ल्या महा-काले महा-मारी-स्वरूपया।।38।।
सैव काले महा-मारी सैव सृष्टिर्-भवत्य-जा।
स्थितिम् करोति भूतानाम् सैव काले सनातनी।।39।।
भव-काले नृणाम् सैव लक्ष्मीर्-वृद्धि-प्रदा गृहे।
सेवा-भावे तथाऽ लक्ष्मीर्-विनाशा-योप-जायते।।40।।
स्तुता सम्-पूजिता पुष्पैर्-धूप-गन्धादि भिस्-तथा।
ददाति वित्तम् पुत्रांश्च मतिम् धर्मे गतिम् शुभाम्।।ॐ।।41।।

श्रीजगदम्बा-दुर्गा-अर्पण-मस्तु

त्रयोदशोऽध्यायः

ध्यानम्

ॐबालार्क-मण्डला-भासाम् चतुर्-बाहुम् त्रिलोच-नाम्।
पाशाङ् कुश-वरा-भीतीर्-धार-यन्तीम शिवाम् भजे।।1।।

‘ॐ’ ऋषिरुवाच।।1।।

एतत्-ते कथितम् भूप देवी-माहात्म्य-मुत्तमम्।
एवं-प्रभावा सा देवी ययेदम् धार्-यते जगत्।।2।।

विद्या तथैव क्रियते भगवद्-विष्णु-मायया।
तया त्वमेष वैश्यश्च तथै-वान्ये विवेकिनः।।3।।

मोह्-यन्ते मोहि-ताश्चैव मोह-मेष्यन्ति चापरे।
तामु-पैहि महा-राज शरणम् परमेश्व-रीम्।।4।।

आराधिता सैव नृणाम् भोग-स्वर्गाप-वर्गदा।।5।।

मार्कण्डेय उवाच।।6।।

इति तस्य वचः श्रुत्वा सुरथः स नराधिपः।।7।।

प्रणि-पत्य महा-भागम् तमृषिम् शंसित-व्रतम।
निर्-विण्णोऽति-ममत्वेन राज्याप-हरणेन च।।8।।

जगाम सद्यस्-तपसे स च वैश्यो महामुने।
संदर्श-नार्थ-मम्बाया नदी-पुलिन-संस्थितः।।9।।

स च वैश्यस्-तपस्-तेपे देवी-सूक्तम् परम् जपन्।
तौ तस्मिन् पुलिने देव्याः कृत्वा मूर्तिम् मही-मयीम्।।10।।

अर् हणाम् चक्र-तुस्-तस्याः पुष्प-धूपाग्नि-तर्पणैः।
निराहारौ यताहारौ तन्-मनस्कौ समाहितौ।।11।।

दद तुस्-तौ बलिम् चैव निज-गात्रा-सृगुक्षि-तम्।
एवंसमा राध-यतोस्-त्रिभिर्-वर्षैर्-यतात्मनोः।।12।।

परितुष्टा जगद्-धात्री प्रत्यक्षम् प्राह चण्डिका।।13।।

देव्युवाच।।14।।

यत्-प्रार्थ्यते त्वया भूप त्वया च कुल-नन्दन।
मत्तस्-तत्-प्राप्य-ताम् सर्वम् परितुष्टा ददामि तत्।।15।।

मार्कण्डेय उवाच।।16।।

ततो वव्रे नृपो राज्यम-विभ्रन्-श्यन्य-जन्मनि।
अत्रैव च निजम् राज्यम् हत-शत्रु-बलम् बलात्।।17।।

सोऽपि वैश्यस्-ततो ज्ञानम् वव्रे निर्-विण्ण-मानसः।
मेमेत्य-हमिति प्राज्ञः संग-विच्युति-कारकम्।।18।।

देव्युवाच।।19।।

स्वल्पै-रहो भिर्-नृपते स्वम् राज्यम् प्राप्स्यते भवान।।20।।

हत्वा रिपून-स्खलि तम् तव तत्र भविष्यति।।21।।

मृतश्च भूयः समप्राप्य जन्म देवाद्- विवस्वतः।।22।।

सावर्-णिको नाम मनुर्-भवान् भुवि भविष्यति।।23।।

वैश्य-वर्य त्वया यश्च वरोऽस्-मत्तोऽ-भिवाञ्छितः।।24।।

तम्प्रय च्छा मि संसिद्-धयै तव ज्ञानम् भविष्यति।।25।।

मार्कण्डेय उवाच।।26।।

इति दत्त्वा तयोर्-देवी यथा-भिल षितम् वरम्।।27।।

बभू-वान्तर-हिता सद्यो भक्त्या ताभ्याम्-भिष्टुता।
एवम् देव्या वरम् लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्-षभः।।28।।

सूर्याज्-जन्म समा-साद्य सावर्-णिर्-भविता मनुः।।29।।

एवम् देव्या वरम् लब्ध्वा सुरथः क्षत्रियर्-षभः।
सूर्याज्-जन्म समा-साद्य-सावर् णिर-भविता मनुः।।क्लींॐ।।

श्रीजगदम्बा दुर्गा-अर्पण-मस्तु

यहाँ तक पाठ करने के बाद प्रथम अध्याय के पूर्व जो नवार्ण मंत्र जप विधि, न्यास आदि, सप्तशती न्यास और दुर्गाध्यान है वह सब विशेष साधक पुनः कर लें।

श्री नवार्ण मंत्र जपविधि

श्री गणपतिर्-जयति। ॐ अस्य श्रीनवार्ण-मंत्रस्य ब्रह्म-विष्णु-रूद्रा ऋषयः, गायत्रि-उष्णिक्-अनुष्टुपः छन्दांसि, श्री महाकाली-महालक्ष्मी-महा-सरस्वत्यो देवताः, ऐं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकम् श्री महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। (इसे पढ़कर जल गिरायें)

ऋष्यादिन्यास-विधि

ब्रह्म-विष्णु-रूद्र ऋषिभ्यो नमः, शिरसि।

(दाएँ हाथ की पाचों ऊँगलियों से यह पढ़कर सिर स्पर्श करें)

गायत्रि उष्णिक्-अनुष्टुप छन्दोभ्यो नमः, मुखे।

(दाएँ हाथ की पाचों ऊँगलियों से यह पढ़कर मुख स्पर्श करें))

महाकाली-महालक्ष्मी-महासरस्वती देवताभ्यो नमः, हृदि।

(दाएँ हाथ की पाचों ऊँगलियों से यह पढ़कर हृदय स्पर्श करें)

ऐं बीजाय नमः, गुह्ये।

(दाएँ हाथ की पाचों ऊँगलियों से यह पढ़कर गुप्तांग संकेत करें)

ह्रीं शक्तये नमः, पादयोः।

(दाएँ हाथ की पाचों ऊँगलियों से यह पढ़कर दोनों पाँव स्पर्श करें)

क्लीं कीलकाय नमः, नाभौ।

(दाएँ हाथ की पाचों ऊँगलियों से यह पढ़कर नाभी स्पर्श करें)

फिर - ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे

इस मूल मंत्र का एक बार उच्चारण करते हुए हाथ में जल लेकर हाथों की शुद्धि करके करन्यास करें।

करन्यास-विधि

ॐ ऐं अंगुठा भ्याम् नमः

(दोनों हाथ की तर्जनी अंगुली से दोनों अगूठे का स्पर्श करें)

ॐ ह्रीं तर्ज-नीभ्याम् नमः

(दोनों हाथ के अंगूठों से दोनों तर्जनी का स्पर्श)

ॐ क्लीं मध्यमा-भ्याम् नमः

(दोनों अंगूठों से दोनों मध्यमा का स्पर्श)

ॐ चामुण्डायै अनामिका भ्याम् नमः

(दोनों अंगूठों से दोनों अनामिका का स्पर्श)

ॐ विच्चे कनिष्ठि-काभ्याम् नमः

(दोनों अंगूठों से दोनों कनिष्ठा का स्पर्श)

ॐ ऐं ह्री क्लीं चामुण्डायै विच्चे

करतल-कर-षृष्ठा-भ्याम् नमः

(दोनों हथेलियों और उनके पृष्ठ /पीछे भागों का परस्पर स्पर्श करें)

हृदयादिन्यास-विधि

ॐ ऐं हृदयायः नमः।

(दाहिने हाथ की पाँचों अंगुलियों से हृदय का स्पर्श)

ॐ ह्रीं शिरसे स्वाहा।

(दाहिने हाथ की पाँचो अंगुलियों से सिर का स्पर्श)

ॐ क्लीं शिखायै वषट्

(पांचों अंगुलियों का अंगूठे से शिखा का स्पर्श)

ॐ चामुण्डायै कवचाय हुम्।

(दाएँ हाथ के पांचो अंगुलियों से बाएँ कंधे का और बाएँ हाथ की पाँचों अंगुलियों से दाएँ कंधे का परस्पर एक साथ स्पर्श करें।)

ॐ विच्चे नेत्र-त्रयाय वौषट्

(दाएँ हाथ की कंगूरिया और अंगूठा छोड़कर शेष तीनों अंगुलियों में तर्जनी से दाएँ आँख, मध्यमा से दोनों भौंह के बीच और अनामिका से बाएँ आँख का एक साथ स्पर्श करें।)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्यै विच्चे अस्त्राय फट्

(यह पढ़कर दाएँ हाथ को सिर के उपर से बायीं ओर से पीछे की ओर ले जायँ और फिर दाहिनी ओर से आगे की ओर से आये और केवल तर्जनी और मध्यमा अंगुली से शेष अंगुली मोड़कर बाएँ हाथ के पृष्ट भाग का दाँए तर्जनी मध्यमा अंगुली से स्पर्श कर फिर दाएँ हथेली पर तर्जनी और मध्यमा से एक या तीन बार ताली बजाये)

अक्षरन्यास-विधि

ॐ ऐं नमः, शिखायाम्

(दाएँ हाथ की अंगुली से शिखा स्पर्श)

ॐ ह्रीं नमः, दक्षिणनेत्रे

(दाएँ अंगुली से दाएँ नेत्र का स्पर्श)

ॐ क्लीं नमः, वामनेत्रे

(दाएँ अंगुली से बायाँ नेत्र का स्पर्श)

ॐ चां नमः, दक्षिण कर्णे

(दाएँ अंगुली से दायाँ कान का स्पर्श)

ॐ मुं नमः, वाम कर्णे

(दाएँ अंगुली से दायाँ कान का स्पर्श)

ॐ डां नमः, दक्षिण नासापुटे

(दाएँ अंगुली से दायाँ नाक का स्पर्श)

ॐ यैं नः, वामनासापुटे

(दाएँ अंगुली से बायाँ नाक का स्पर्श)

ॐ विं नमः, मुखे

(अंगुली से मुख स्पर्श संकेत)

ॐ च्चें नमः, गुह्ये

(अंगुली से गुदा स्पर्श संकेत)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे

(इस मूल मंत्र को पढ़ते हुए आठ बार दोनों हाथों के द्वारा सिर से पैर के सब अंगों का स्पर्श करें। यह व्यापक न्यास कहलाता है।)

दिङ्न्यास-विधि

ॐ ऐं प्राच्यै नमः

(यह पढ़कर पूरब दिशा में चुटकी बजायें)

ॐ ऐं आग्नेय्ये नमः

(अग्निकोण में चुटकी बजावें)

ॐ ह्रीं दक्षिणायै नमः

(दक्षिण में चुटकी बजावें)

ॐ ह्रीं नैऋत्यै नमः

(नैऋति कोण में चुटकी बजावें)

ॐ क्लीं प्रतीच्यै नमः

(पश्चिम में चुटकी बजावें)

ॐ क्लीं वायव्यै नमः

(वायुकोण में चुटकी बजावें)

ॐ चामुण्डायै उदीच्यै नमः

(उत्तर में चुटकी बजावें)

ॐ चामुण्डायै ऐशान्यै नमः

(ईशान कोण में चुटकी बजावें)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ऊर्ध्वायै नमः

(उपर की ओर चुटकी बजावें)

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे भूम्यै नमः

(नीचे की ओर चुटकी बजावें)

त्रिगुणा-ध्यानम्

(हाथ में फूल लेकर या ऐसे भी पढ़कर ध्यान करें फूल हो तो ध्यान कर माँ को अर्पण कर दें)

खड्गम् चक्र-गदेषु-चाप-परिघाञ्-छूलम् भुशुण्डीम्शिरः
शंखम् संदधतीम् करैस्-त्रिनयनाम् सर्वांग-भूषा-वृताम।
नीलाश्म-द्युति-मास्य-पाद-दशकाम् सेवे महा-कालिकाम्
यामस्-तौत्-स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुम् मधुम् कैटभम्।।1।।

अक्ष-स्रक-परशुम् गदेषु-कुलिशम् पद्मम् धनुः कुण्डिकाम्
दण्डम् शक्ति-मसिम् च चर्म जलजम् घण्टाम् सुरा-भाजनम्।
शूलम् पाश-सुदर्शने च दधतीम् हस्तैः प्रसन्ना-ननाम्
सेवे सैरिभ-मर्दिनी-मिह महा-लक्ष्मीम् सरो-जस्थि-ताम्।।

घण्टा-शूल-हलानि शंख-मुसले चक्रम् धनुः सायकम्
हस्ताब्जैर्-दधतीम् घनान्त-विलसच्-शीतांशु-तुल्य-प्रभाम्।
गौरी-देह-समुद्भवां त्रिजगता-माधार-भूताम् महा
पूर्वा-मत्र सरस्वती-मनुभजे शुम्भादि-दैत्यार्-दिनीम्।।3।।

जप-माला पूजन मंत्र

"ऐं ह्रीं अक्षमालिकायै नमः"

माला को बाएँ हाथ में लेकर या समाने रखकर उपर का मंत्र पढ़कर उसपर जल गिरा दें। फिर एक फूल लेकर पढें

सर्वोपचारार्थे पुष्पम् समर्पयामि ऐं ह्रीं अक्षमालिकायै नमः।

माला पर फूल रखकर फिर माला को अंजलि में लेकर या सामने रखकर हाथ जोड़कर निम्न मंत्र पढ़ते हुए प्रार्थना करें -

"ॐ मां माले महामाये सर्व-शक्ति-स्वरूपिणि।
चतुर्-वर्गस्-त्वयि न्यस्-तस्-मान्मे सिद्धिदा भव।।

ॐ अविघ्नम् कुरु माले त्वम् गृह्णामि दक्षिणे करे।
जपकाले च सिद्ध-यर्थम् प्रसीद मम् सिद्धये।।

ॐ अक्ष-मालाधि-पतये सुसिद्धिम् देहि देहि
सर्व-मंत्रार्थ-साधिनि साधय साधय सर्व-सिद्धिम्
परि-कल्पय परि-कल्पय मे स्वाहा।"

इसके बाद माला दाएँ हाथ में लेकर सकाम भक्त अंगूठा अनामिका और मध्यमा की सहायता से तथा निष्काम भक्त मध्यमा पर माला रखकर अंगूठा से खींचकर माला जप करें। माला जप के समय सुखासन, सिद्धासन या पदमासन में बैठें तथा पूरे मेरूदंड को सीधा रखकर माला को कंठ के पास लाकर कपड़े से ढ़ककर या गोमुख (माला जप-वस्त्र) में रखकर माता दुर्गा का मानस ध्यान करते हुए या चित्र देखते हुए श्वांस के साथ या श्वांस रोक धीरे-धीरे तन्मय भाव से मंत्र के अर्थ का मनन करते हुए एक माला जप करें। यदि एक माला से अधिक जप करना हो तो सुमेरू यानी माला के शीर्ष के पास आने पर माला को उल्टा दें। एक माला से अधिक जितना बार जाप करना हो माला उल्टाते

जायें। स्थिर चित्त के जप से निश्चय ही सिद्धि मिलती है।

जप हेतु नवार्ण मंत्र -

"ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे"

जप जब पूरा हो जाय तो नीचे के श्लोक को पढ़कर देवी के बाएँ हाथ में जप निवेदन करते हुए थोड़ा जल गिरा दे या एक फूल दे दें। माला सुमेरू मस्तक में सटा लें।

"गुह्याति-गुह्य-गोप्-त्री त्वम् गृहाण अस्मत् कृतम् जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत् प्रसादान्-महेश्वरि।।"

सप्तशती न्यासः

(सप्तशती पाठ के पूर्व नवार्ण जप के बाद सप्तशती के विनियोग, न्यास, ध्यान करना चाहिये)

विनियोग -

ॐ प्रथम-मध्यमोत्तर-चरित्रा-णाम् ब्रह्म-विष्णु-रूद्रा ऋषयः श्री महाकाली-महालक्ष्मी महा सरस्वत्यो देवताः, गायत्रि-उष्णिक्-अनुष्टुप् छंदासि, नन्दा-शाकम्भरी-भीमाः शक्तयः, रक्त-दन्तिका- दुर्गा-भ्रामर्यो बीजानि, अग्नि-वायु-सूर्यस्- तत्त्वानि, ऋग्-यजुः सामवेदा ध्यानानि सकल-कामना-सिद्धये श्रीमहाकाली-महालक्ष्मी- महासरस्वती देवता प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।

सप्तशती करन्यास-विधि

ॐखड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।
शंखिनी चापिनी बाण-भुशुण्डी-परिघा-युधा।।

अंगुष्ठाभ्याम् नमः।

(दोनों हाथ की तर्जनी से दोनों अंगूठे का स्पर्श करें)

ॐशूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन-चाम्बिके।
घण्टा-स्वनेन नः पाहि चापज्या-निः स्वनेन च।।

तर्जनी-भ्याम् नमः (अंगूठे से तर्जनी स्पर्श)

ॐ प्राच्याम् रक्ष प्रतीच्याम् च चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणे-नात्म-शूलस्य उत्तरस्याम् तथेश्वरि।।

मध्यमा-भ्याम् नमः (अंगूठे से मध्यमा स्पर्श)

ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यर्थ-घोराणि तै रक्षास्-मांस्-तथा भुवम्।।

अनामिका-भ्याम् नमः (अंगूठे से अनामिका स्पर्श)

ॐखडग-शूल-गदा-दीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके।
कर-पल्लव संगीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः।।

कनिष्ठिका-भ्याम् नमः (अंगूठे से कनिष्ठा स्पर्श)

ॐ सर्व-स्वरूपे सर्वेशे सर्व-शक्ति-समन्विते।
भये-भ्यस्-त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते।।

करतल-कर-पृष्ठा-भ्याम् नमः।

(दोनों हथेली और पृष्ठभाग स्पर्श)

(संक्षिप्त करन्यासः)

ॐ ह्रीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ॐ चं तर्जनीयभ्यां नमः। ॐ डिं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ कां अनामिकाभ्यां नमः। ॐ यैं कनिष्ठिकाभ्यां नमः। ॐ ह्रीं चण्डिकार्य करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

हृदयादि न्यास-विधि

ॐखड्गिनी शूलिनी घोरा गदिनी चक्रिणी तथा।
शंखिनी चापिनी बाण-भुशुण्डी-परिघा-युधा।।

हृदयाय नमः (पाँचों अंगुलियों से हृदय स्पर्श)

ॐशूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन-चाम्बिके।
घण्टा-स्वनेन नः पाहि चापज्या-निः स्वनेन च।।

शिर से स्वाहा (पांचों अंगुलियों से सिर स्पर्श)

ॐ प्राच्याम् रक्ष प्रतीच्याम् च चण्डिके रक्ष दक्षिणे।
भ्रामणे-नात्म-शूलस्य उत्तरस्याम् तथेश्वरि।।

शिखायै वषट् (पाँचों अंगुली या अगूठे से शिखा स्पर्श)

ॐ सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते।
यानि चात्यर्थ-घोराणि तै रक्षास्-मांस्-तथा भुवम्।।

कवचाय हुम् (दाएँ हाथ से बाएँ, बाएँ हाथ से दाएँ कंधा)

ॐखडग-शूल-गदा-दीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके।
कर-पल्लव संगीनि तैरस्मान् रक्ष सर्वतः।।

नेत्र-त्रयाय वौषट् (तीनों अंगुली से त्रिनेत्र स्पर्श)

ॐ सर्व-स्वरूपे सर्वेशे सर्व-शक्ति-समन्विते।
भये-भ्यस्-त्राहि नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते।।

अस्त्राय फट्

(दाएँ हाथ को सिर के उपर से पीछे की ओर से लाकर बाएँ हाथ पर ताली बजाएँ)

श्रीदुर्गा ध्यानम्

(हाथ में लाल या कोई फूल लेकर श्लोक पढ़ते हुए अर्थ की भावना करते हुए माँ दुर्गा का ध्यान करें)

विद्युद्-दाम-सम-प्रभाम् मृगपति-स्कंध-स्थिताम् भीषणाम्
कन्याभिः करवाल-खेट-विलसद्-धस्ता-भिरा-सेविताम्।
हस्तैश्-चक्र-गदासि-खेट-विशिखाम् चापम् गुणम् तर्जनीम्
विभ्रा णा-मन-लात्मि-काम्-शशि धराम् दुर्गाम् त्रिनेत्राम् भजे।।

श्लोक पढ़ने के बाद कुछ समय तक मानस-ध्यान दुर्गा माँ का हृदय या आज्ञाचक्र पर या फोटो देखकर करें फिर ध्यान पुष्प को अपने सिर पर रखें या सिर पर रखकर माँ के आगे रख दें।

फिर पाठ आरंभ करें -

श्रीऋग्वेदोक्त देवीसूक्तम्

ॐ अह-मित्यष्-टर्-चस्य सूक्तस्य वागाम्-भृणी ऋषिः, सच्-चित्-सुखात्-मकः सर्व-गतः परमात्मा देवता, द्वितीया-या ऋचो जगती, शिष्टानां त्रिष्टुप् छन्दः, देवी-माहात्म्य-पाठे विनियोगः।

ध्यानम्

ॐ सिंहस्-था शशि-शेखरा मरकत-प्रख्यैश्-चतुर्-भिर्-भुजैः शंखम् चक्र-धनुः शरांश्च दधती नेत्रैस्-त्रिभिः शोभिता। आ-मुक्तांगद-हार-कंकण-रणत् कांची-रणन्-नूपुरा दुर्गा दुर्गति-हारिणी भवतु नो रत्नोल्-लसत्-कुण्डला।।

देवी सूक्तम्

ॐ अहम्रुद्रे-भिर्-वसु-भिश्-चराम्य-हमा-दित्यै-रुत विश्व-देवैः।
अहम् मित्रा-वरु-णोभा बिभर्-म्यह-मिन्द्रा-ग्नी अहमश्वि-नोभा।।1।।

अहम् सोम-माह-नसम् बिभर्-म्यहम् त्वष्टार-मुत पूषणम् भगम्।
अहम् दधामि द्रविणम् हविष्मते सुप्राव्ये यज-मानाय सुन्वते।।2।।

अहम् राष्ट्री संगम-नी वसूनाम् चिकितुषी प्रथमा यज्ञिया-नाम्।
ताम् मा देवा व्यदधुः पुरुत्रा भूरिस्- स्थात्राम् भूर्य्या-वेश-यन्तीम्।।3।।

मया सो अन्न-मत्ति यो विपश्यति यः प्राणिति य ईङ शृणो-त्युक्तम्।
अमन्तवो माम् त उप क्षियन्ति श्रुधि श्रुत श्रद्धि वम् ते वदामि।।4।।

अहमेव स्वय-मिदम् वदामि जुष्टम् देवे-भिरुत मानुषेभिः।
यम् कामये तम् तमुग्रम् कृणोमि तम् ब्रह्माणम् तमृषिम् तम् सुमेधाम्।।5।।

अहम् रुद्राय धनुरा तनोमि ब्रह्म-द्विषे शरवे हन्तवा उ।
अहम् जनाय समदम् कृणो-म्यहम् द्यावा-पृथिवी आ विवेश।।6।।

अहम् सुवे पितर-मस्य मूर्धन्-मम योनि-रप्-स्वन्तः समुद्रे।
ततो वि तिष्ठे भुवनानु विश्वो तामूम् द्याम् वर्ष्म-नोप स्पृशामि।।7।।

अहमेव वात इव प्रवा म्या-रभ-माणा भुवनानि विश्वा।
परो दिवा पर एना पृथिव्यै-तावती महिना संबभूव।।8।।

श्रीऋग्वेदोक्त देवी सूक्तम् अम्बार्पण-मस्तु

श्रीतंत्रोक्तं देवी सूक्तम्

नमो देव्यै महा-देव्यै शिवायै सततम् नमः।
नमः प्रकृत्यै भद्रायै नियताः प्रणताः स्मताम्।।1।।

रौद्रायै नमो नित्यायै गौर्यै धात्र्यै नमो नमः।
ज्योत्-स्नायै चेन्दु-रूपिण्यै सुखायै सतत्म नमः।।2।।

कल्याण्यै प्रण-ताम् वृद्धयै सिद्धयै कूर्मो नमो नमः।
नैर्-ऋत्यै भू-भृताम् लक्ष्म्यै शर्-वाण्यै तै नमो नमः।।3।।

दुर्गायै दुर्ग-पारायै सारायै सर्व-कारिण्यै।
ख्यात्यै तथैव कृष्णायै धूम्रायै सततम् नमः।।4।।

अति -सौम्याति-रौद्रायै नतास्-तस्यै नमो नमः।
नमो जगत्-प्रतिष्ठायै देव्यै कृत्यै नमो नमः।।5।।

या देवी सर्व-भूतेषु विष्णु-मायेति शब्दिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।6।।

या देवी सर्व-भूतेषु चेत-नेत्य-भिधीयते।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।7।।

या देवी सर्वभूतेषु बुद्धि-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।8।।

या देवी सर्वभूतेषु निद्रा-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।9।।

या देवी सर्वभूतेषु क्षुधा-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।10।।

या देवी सर्वभूतेषु छाया-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।11।।

या देवी सर्वभूतेषु शक्ति-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।12।।

या देवी सर्वभूतेषु तृष्णा-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।13।।

या देवी सर्वभूतेषु क्षान्ति-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।14।।

या देवी सर्वभूतेषु जाति-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।15।।

या देवी सर्वभूतेषु लज्जा-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।16।।

या देवी सर्वभूतेषु शान्ति-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।17।।

या देवी सर्वभूतेषु श्रद्धा-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।18।।

या देवी सर्वभूतेषु कान्ति-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।19।।

या देवी सर्वभूतेषु लक्ष्मी-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।20।।

या देवी सर्वभूतेषु वृत्ति-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।21।।

या देवी सर्वभूतेषु स्मृति-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।22।।

या देवी सर्वभूतेषु दया-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।23।।

या देवी सर्वभूतेषु तुष्टि-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।24।।

या देवी सर्वभूतेषु मातृ-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।25।।

या देवी सर्वभूतेषु भ्रान्ति-रूपेण संस्थिता।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।26।।

इन्द्रिया-णाम-धिष्ठात्री भूता-नाम् चाखि-लेषु या।
भूतेषु सततम् तस्यै व्याप्ति-देव्यै नमो नमः।।27।।
चिति-रूपेण या कृत्-स्न-मेतद् व्याप्य स्थिता जगत्।
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।।28

स्तुता सुरैः पूर्व-मभीष्ट-संश्र-यात्
तथा सुरेन्द्रेण दिनेषु सेविता।
करोतु सा नः शुभ-हेतु-रीश्वरी
शुभानि् भद्राण्य-भिहन्तु चापदः।।29।।

या साम्प्र तम् चोद्धत-दैत्य-तापितै-
रस्मा-भिरीशा च सुरैर्-नमस्यते।
या च स्मृता तत् क्षण-मेव हन्ति नः
सर्वा- पदो भक्ति-विनम्र-मूर्तिभिः।।30।।

श्रीतंत्रोक्तं देवी सूक्तं अम्बा-अर्पण मस्तु

प्राधानिक रहस्यम्

विनियोग :

ॐअस्य श्री-सप्तशती-रहस्य- त्रयस्य नारायण ऋषिः-रनुष्टुप्-छन्दः महाकाली-महालक्ष्मी-महा-सरस्वत्यो देवता यथोक्त-फला-वाप्त्यर्थम् जपे विनियोगः।

राजोवाच

भगवन्-नवतारा मे चण्डिका-यास्-त्वयो-दिताः।
एते षाम् प्रकृतिम् ब्रह्मन् प्रधानम् वक्तु-मर्हसि।।1।।

आ-राध्यम् यन्मया देव्याः स्वरूपम् येन च द्विज।
विधिना ब्रूहि सकलम् यथा-वत्-प्रण-तस्य मे।।2।।

ऋषिरुवाच

इदम् रहस्यम् परम्-नाख्येयम् प्र-चक्ष-ते।
भक्तोऽ सीति न मे किंचित्-वाच्यम् नराधिप।।3।।

सर्वस्या-द्या महा-लक्ष्मीस्-त्रिगुणा परमेश्वरी।
लक्ष्या-लक्ष्य-स्वरूपा सा व्याप्य कृत्-स्नम् व्यवस्थिता।।4।।

मातु-लुंगम् गदाम् खेटम् पान-पात्रम् च विभ्रती।
नागम् लिंगम् च योनिम् च विभ्रती नृप मूर्-धनि।।5।।

तप्त-कांचन-वर्णा-भा तप्त-कांचन-भूषणा।
शून्यम् तदखि-लम् स्वेन पूरया-मास तेजसा।।6।।

शून्यम् तदखिलम् लोकम् विलोक्य परमेश्वरी।
बभार परमम् रूपम् तमसा केवलेन हि।।7।।

सा भिन्नांजन-संकाशा दंष्ट्रांकित-वरानना।
विशाल-लोचना नारी वभूव तनु-मध्यमा।।8।।

खड्ग-पात्र-शिरः खेटै-रलंकृत-चतुर्-भुजा।
कबन्ध-हारम् शिरसा विभ्राणा हि शिरः स्रजम्।।9।।

सा प्रो-वाच महा-लक्ष्मीम् तामसी प्रम-दोत्त-माम्।
नाम कर्म च मे मातर्-देहि तुभ्यम् नमो नमः।।10।।

ताम् प्रो-वाच महा-लक्ष्मीस्-तामसीम् प्रम-दोत्त-माम्।
ददामि तव नामानि यानि कर्माणि तानि ते।।11।।

महामाया महाकाली महामारी क्षुधा तृषा।
निद्रा तृष्णा चैक-वीरा काल-रात्रिर्-दुरत्यया।।12।।

इमानि तव नामानि प्रति-पाद्यानि कर्मभिः।
एभिः कर्माणि ते ज्ञात्वा योऽधीते सोऽसुते सुखम्।।13।।

तामि-त्युक्-त्वा महा-लक्ष्मीः स्वरूप-मपरम् नृप।
सत्त्वाख्ये-नाति-शुद्धेन गुणे-नेन्दु-प्रभम् दधौ।।14।।

अक्ष-मालांकुश-धरा वीणा-पुस्तक-धारिणी।
सा बभूव वरा नारी नामा-न्यस्यै च सा ददौ।।15।।

महा-विद्या महा-वाणी भारती वाक् सरस्वती।
आर्या ब्राह्मी काम-धेनुर्-वेद-गर्भा च धीश्वरी।।16।।

अथो-वाच महा-लक्ष्मीर्-महाकालीम् सरस्वतीम्।
युवाम् जनय-ताम् देव्यौ मिथुने स्वानु-रूपतः।।17।।

इत्युक्-त्वा ते महालक्ष्मीः ससर्ज मिथुनम् स्वयम्।
हिरण्य-गर्भौ रुचिरौ स्त्री-पुंसौ कमला-सनौ।।18।।

ब्रह्मन् विधे विरिञ्चेति धात-रित्याह तम् नरम्।
श्रीः पद्मे कमले लक्ष्मी-त्याह माता च ताम् स्त्रियम्।।19।।

महाकाली भारती च मिथुने सृजतः सह।
एत-योरपि रूपाणि नामानि च वदामि ते।।20।।

नील-कंठम् रक्त बाहुम् श्वेतांगम् चंद्र-शेखरम्।
जनया-मास पुरुषम् महा काली सिताम् स्त्रियम्।।21।।

स रुद्रः शंकरः स्थाणुः कपर्दी च त्रिलोचनः।
त्रयी विद्या कामधेनुः सा स्त्री भाषा-अक्षरा स्वरा।।22।।

सरस्वती स्त्रियम् गौरीम् कृष्णम् च पुरुषम् नृप।
जनयामास नामानि तयो-रपि वदामि ते।।23।।

विष्णुः कृष्णो हृषीकेशो वासुदेवो जनार्दनः।
उमा गौरी सती चण्डी सुन्दरी सुभगा शिवा।।24।।

एवम् युवतयः सद्यः पुरु षत्वम् प्र-पेदिरे।
चक्षुष्-मन्तो नु पश्यन्ति नेतरेऽतद् विदो जनाः।।25।।

ब्रह्मणे प्रददौ पत्नीम् महा-लक्ष्मीर्-नृप त्रयीम्।
रूद्राय गौरीम् वरदाम् वासुदेवाय च श्रियम्।।26।।

स्वरया सह सम्भूय विरिञ्-चोऽण्ड-मजी-जनत।
विभेद भगवान् रूद्रस्-तद् गौर्या सह वीर्य वान्।।27।।

अण्ड-मध्ये प्रधानादि कार्य-जातम-भून्-नृप।
महा-भूतात् मकम्-सर्वम् जगत्-स्थावर-जंगमम्।।28।।

पुपोष पालाया-मास तल्-लक्ष्म्या सह केशवः।
संजहार जगत्-सर्वम् सह गौर्या महेश्वरः।।29।।

महा-लक्ष्मीर्-महा-राज सर्व-सत्त्व-मयीश्वरी।
निराकारा च साकारा सैव-नाना-भिधान-भृत।।30।।

नामान्-तरैर्-निरूप्यैषा नाम्ना नाऽन्येन केनचित्।।31।

श्री प्राधानिकम् रहस्यम् दुर्गार्पण-मस्तु

वैकृतिकम् रहस्यम्

ऋषिरुवाच

ॐत्रिगुणा तामसी देवी सात्त्विकी या त्रिधो-दिता।
सा शर्वा चण्डिका दुर्गा भद्रा भग-वतीर्-यते।।1।।

योग-निद्रा हरे-रुक्ता महाकाली तमोगुणा।
मधु-कैटभ-नाशार्थम् याम् तुष्टा-वाम्बु-जासनः।।2।।

दश-वक्त्रा दश-भुजा दश-पादाञ्जन-प्रभा।
विशालया राजमाना त्रिंशल्-लोचन-मालया।।3।।

स्फुरद्-दशन-दंष्ट्रा सा भीम-रूपापि भूमिप।
रूप-सौभाग्य-कान्तीनाम्सा प्रतिष्ठा महा-श्रियः।।4।।

खड्ग-बाण-गदा-शूल-चक्र-शंख-भुशुण्डि-भृत्।
परिघम्-कार्मुकम् शीर्षम् निश्च्योतद् रूधिरम् दधौ।।5।।

एषा सा वैष्णवी माया महाकाली दुरत्यया।
आराधिता वशी-कुर्यात् पूजा-कर्तुश्-चराचरम्।।6।।

सर्व-देव-शरीरे-भ्यो याऽऽविर्भूता मित-प्रभा।
त्रिगुणा सा महालक्ष्मीः साक्षान्-महिष-मर्दिनी।।7।।

श्वेता-नना नील-भुजा सुश्वेत-स्तन-मंडला।
रक्त-मध्या रक्त-पादा नील-जंघोरु-रुन्मदा।।8।।

सुचित्र-जघना चित्र-माल्याम्बर-विभूषणा।
चित्रानु लेपना कान्ति-रूप-सौभाग्य-शालिनी।।9।।

अष्टा-दश-भुजा पूज्या सा सहस्र-भुजा सती।
आयु-धान्यत्र वक्ष्यन्ते दक्षि-णाधः-कर-क्रमात्।।10।।

अक्षर माला च कमलम् बाणोऽसिः कुलिशम् गदा।
चक्रम् त्रिशूलम् परशुः शंखो घण्टा च पाशकः।।11।।

शक्तिर्-दण्डश्-चर्म चापम् पान-पात्रम् कमण्डलुः।
अलंकृत-भुजा-मेभि-रायुधैः कमला-सनाम्।।12।।

सर्व-देव-मयी-मीशाम् महा-लक्ष्मी-मिमाम् नृप।
पूजयेत् सर्व-लोका-नाम् स देवानाम् प्रभुर-भवेत्।।13।।

गौरी-देहात् समुद् भूता या सत्वैक-गुणाश्रया।
साक्षात् सरस्वती प्रोक्ता शुम्भा सुर निबर् हिणी।।14।।

दधौ चाष्ट-भुजा बाण-मुसल शूल-चक्र-भृत्।
शंखम् घण्टाम् लांगलम् च कार्मुकम् वसुधा-धिप।।15।।

एषा सम्पूजिता भक्त्या सर्व ज्ञत्वम् प्रयच्छति।
निशुम्भ-मथिनी देवी शुम्भा सुर-निबर् हिणी।।16।।

इत्युक्-तानि स्वरू पाणि मूर्ती-नाम् तव पार्थिव।
उपासनम् जगन्मातुः पृथगा साम् निशामय।।17।।

महा-लक्ष्मीर्-यदा पूज्या महाकाली सरस्वती।
दक्षि-णोत्तर-योः पूज्ये पृष्ठतो मिथुन-त्रयम्।।18।।

विरंचिः स्वरया मध्ये रुद्रो गौर्या च दक्षिणे।
वामे लक्ष्म्या हृषीकेशः पुरतो देवता-त्रयम्।।19।।

अष्टा-दश-भुजा मध्ये वामे चास्या दशानना।
दक्षि-णेष्ट-भुजा लक्ष्मीर् महतीति समर् चयेत्।।20।।

अष्टा-दश-भुजा चैषा-यदा पूज्या नराधिप।
दशानना चाष्ट-भुजा दक्षि-णोत्तर-योस्-तदा।।21।।

काल-मृत्यू च सम्पूज्यौ सर्वारिष्ट-प्रशान्तये।
नवा स्याः शक्तयः पूज्यास्-तदा रूद्र-विनायकौ।।22।।

नमो देव्या इति स्तोत्रैर् महा-लक्ष्मीम् समर्चयेत्।।23।।

अवतार-त्रया-चार् याम् स्तोत्र-मंत्रास्-तदा-श्रयाः।
अष्टा-दश-भुजा चैषा पूज्या महिष-मर्दिनी।।24।।

महा-लक्ष्मीर् महा-काली सैव प्रोक्ता सरस्वती।
ईश्वरी पुण्य-पापा-नाम् सर्व-लोक-महेश्वरी।।25।।

महिषान्त-करी येन पूजिता स जगत्-प्रभुः।
पूजयेज्-जगताम् धात्रीम् चण्डि काम् भक्त वत्सलाम्।।26।।

अर्ध्या-दिभि-रलंकारैर्-गंध-पुष्पैस् तथाऽ क्षतैः।
धूपैर्-दीपैश्च नैवेद्यर्-नाना-भक्ष्य समन्वितैः।।27।।

रुधि-राक्तेन बलिना मांसेन सुरया नृप।
(बलि-मांसादि-पूजेयम् विप्र-वर्ज्या मयेरिता।।

तेषां किल सुरा-मांसैर्-नोक्ता पूजा नृप क्वचित्।)
प्रणा-माच-मनीयेन चन्दनेन सुगन्धिना।।28।।

स-कर्पूरैश्च ताम्बूलैर्-भक्ति-भाव-समान्वितैः।
वाम-भागे-अग्रतो देव्याश्-छिन्न-शीर्षम् महासुरम्।।29।।

पूजयेन्-महिषम् येन प्राप्तम् सायुज्य-मीशया।
दक्षिणे पुरतः सिंहम् समग्रम् धर्म-मीश्वरम्।।30।।

वाहनम् पूजयेद् देव्या धृतम् येन चराऽचरम्।
कुर्याच्च स्तव-नम् धीमांस्-तस्या एकाग्र-मानसः।।31।।

ततः कृताञ्जलिर्-भूत्वा स्तुवीत चरितै-रिमैः।
एकेन वा मध्यमेन नैके-नेतर-योरिह।।32।।

चरि-तार्धम् तु न जपेज्-जपन्-छिद्र-मवाप्नु-यात्।
प्रदक्षिणा-नमस्कारान् कृत्वा मूर्ध्नि कृतांजलिः।।33।।

क्षमा-पयेज्-जगद्-धात्रीम् मुहुर्र-महुर्-तंद्रितः।
प्रति-श्लोकम् च जुहुयात्-पायसम् तिल-सर्पिषा।।34।।

जुहुयात् स्तोत्र-मंत्रैर्-वा चण्डिकायै शुभम् हविः।
भूयो नाम-पदैर्-देवीम् पूजयेत् सु-समाहितः।।35।।

प्रयतः प्रांजलिः प्रह्वः प्रणम्या-रोप्य चात्मनि।
सुचिरम् भावये-दीशाम् चण्डि-काम् तन्मयो भवेत्।।36।।

एवम् यः पूजयेद् भक्त्या प्रत्यहम् परमेश्व-रीम्।
भुक्त्वा भोगान् यथा-कामम् देवी-सायुज्य-माप्नु-यात्।।37।।

यो न पूजयते नित्यम् चण्डिकाम् भक्त वत्सलाम्।
भस्मी-कृतास्य पुण्यानि निर्-दहेत्-परमेश्वरी।।38।।

तस्मात् पूजय भूपाल! सर्व-लोक-महेश्व-रीम्।
यथोक्तेन विधानेन चण्डि-काम् सुख-माप्-स्यसि।।39।।

श्रीवैकृतिकम् रहस्यम् दुर्गार्पण मस्तु

श्री मूर्ति-रहस्यम्

ऋषिरुवाच

ॐ नन्दा भगवती नाम या भविष्यति नन्दजा।
स्तुता सा पूजिता भक्त्या वशी कुर्याज्-जगत्-त्रयम्।।1।।

कनकोत्तम कान्तिः सा सुकान्ति-कन-काम्बरा।
देवी कनक-वर्णा-भा कन-कोत्तम-भूषणा।।2।।

कम-लांकुश-पाशाब्जै-रत्नकृत-चतुर्-भुजा।
इन्दिरा-कमला लक्ष्मीः सा श्री रुक्माम्बु-जासना।।3।।

या रक्त-दन्तिका नाम देवी प्रोक्ता मयानघ।
तस्याः स्वरूपम् वक्ष्यामि शृणु सर्व-भया-पहम्।।4।।

रक्ताम्बरा रक्त वर्णा रक्त-सर्वांग-भूषणा।
रक्ता-युधा रक्त-नेत्रा रक्त-केशाति-भीषणा।।5।।

रक्त-तीक्ष्ण-नखा रक्त-दशना रक्त-दन्तिका।
पतिम् नारी-वानु रक्ता देवी भक्तम् भजेज्-जनम्।।6।।

वसुधेव विशाला सा सुमेरु-युगल-स्तनी।
दीर्घौ लम्बा-वति-स्थूलौ ताव-तीव मनोहरौ।।7।।

कर्कशा-वति-कान्तौ तौ सर्वा-नन्द-पयोनिधी।
भक्तान् सम्पा-ययेद् देवी सर्व-काम-दुधौ स्तनौ।।8।।

खड्गम् पात्रम् च मुसलम् लांगलम् च बिभर्ति सा।
आख्याता रक्त-चामुण्डा देवी योगेश्व रीति च।।9।।

अनया व्याप्त-मखिलम् जगत्-स्थावर-जंगमम्।
इमाम् यः पूजयेद् भक्त्या स व्याप्नोति चराचरम्।।10।।

(भुक्त्वा भोगान्-यथा कामम् देवी-सायुज्य-माप्नु यात्)

अधीते य इमम् नित्यम् रक्त-दन्त्या वपुः स्तवम्।
तम् सा परिचरेद्-देवी पतिम् प्रिय-मिवांगना।।11।।

शाकम्भरी नील-वर्णा नीलोत्पल विलोचना।
गंभीर नाभिस्-त्रिवली-विभूषित-तनूदरी।।12।।

सुकर्कश-समो-त्तुंग-वृत-पीन-धन- स्तनी।
मुष्टिम्-शिली-मुखा-पूर्णम् कमलम् कमला-लया।।13।।

पुष्प-पल्लव-मूलादि-फला-द्यम् शाक संचयम्।
काम्या-नन्तर-सैर्-युक्तम् क्षुत्तृण्-मृत्यु-भया-पहम्।।14।।

कार् मुकम् च स्फुरत् कान्तिम् विभ्रती परमेश्वरी।
शाकम्भरी शताक्षी सा सैव दुर्गा प्रकीर्तिता।।15।।

विशोका दुष्ट-दमनी शमनी दुरिता-पदाम्।
उमा गौरी सती चण्डी कालिका सा च पार्वती।।16।।

शाकम्भरी स्तुवन् ध्यायन् जपन् सम्पूज-यन्न मन्।
अक्षय्य-मश्नुते शीघ्र-मन्न-पाना मृतम् फलम्।।17।।

भीमापि नील-वर्णा सा दंष्ट्रा-दशन-भासुरा।
विशाल-लोचना नारी वृत-पीन-पयोधरा।।18।।

चन्द्र-हासम् च डमरूम् शिरः पात्रम् च विभ्रती।
एक-वीरा काल-रात्रिः सैवोक्ता कामदा स्तुता।।19।।

तेजो-मण्डल-दुर्-धर्षा भ्रामरी चित्र-कान्ति-भृत्।
चित्रानु लेपना देवी चित्रा-भरण-भूषिता।।20।।

चित्र-भ्रमर-पाणिः सा महा-मारीति गीयते।
इत्येता मूर्त्तयो देव्या याः ख्याता बसुधा-धिप।।21।।

जगन्-मातुश-चंडि कायाः कीर्तिताः काम-धेनवः।
इदम् रहस्यम् परमम् न वाच्यम् कस्य-चित्-त्वया।।22।।

व्या-ख्यानम् दिव्य-मूर्त्ती-नाम-भीष्ट-फल-प्रदाय-कम्।
तस्मात् सर्व-प्रयत्नेन देवीम् जप निरन्तरम्।।23।।

सप्त-जन्मार्-जितैर् घोरैर्-ब्रह्म-हत्या-समैरपि।
पाठ-मात्रेण मन्त्रा-णाम् मुच्यते सर्व-किल्विषैः।।24।।

देव्या ध्यानम् मया ख्यातम् गुह्याद्-गुह्य-तरम्-महत्।
तस्मात् सर्व-प्रयत्नेन सर्व-काम-फल-प्रदम्।।25।।

(एत स्यास्-त्वम् प्रसादेन सर्व मान्यो भविष्यसि।
सर्व-रूप-मयी देवी सर्व-देवी-मयम्-जगत्।।
अतोऽहम् विश्व-रूपाम् ताम् नमामि परमेश्वरीम्।।)

श्रीमूर्तिरहस्यम् श्रीदुर्गार्पण-मस्तु

महामाहेश्वर आचार्य अभिनवगुप्त रचित

श्रीदेवीमयी (देवी-स्तुति)

तव च का किल न स्तुति-रम्बिके!
सकल-शब्द-मयी किल ते तनुः।
निखिल-मूर्तिषु मे भव-दन्वयो
मन-सिजासु बहिः प्रस-रासु च।।

इति विचिन्त्य शिवे शमिता-शिवे
जगति जात-मयत्न-वशा-दिदम्।
स्तुति-जपार्-चन-चिन्तन-वर्जिता
न खलु काचन काल-कलास्ति मे।।

श्रीसप्त श्लोकी दुर्गा स्तोत्रम्

शिव उवाच

देवि त्वम् भक्त-सुलभे सर्व-कार्य-विधायिनी।
कलौ हि कार्य सिद्धयर्थ-मुपायम् ब्रूहि यत्नतः।।

देव्युवाच

शृणु देव प्रवक्ष्-यामि कलौ सर्वेष्ट -साधनम्।
मया-तवैव-स्नेहे-नाप्यम्बा-स्तुति-प्रकाश्यते।।

ॐ अस्य श्रीदुर्गा सप्त श्लोकी स्तोत्र- मंत्रस्य नारायण-त्रषिः अनुष्टुप् छन्दः श्रीमहाकाली महाकालक्ष्मी महासरस्वत्यो देवताः श्रीदुर्गा-प्रीत्यर्थम् सप्त श्लोकी दुर्गा पाठे विनियोगः।

ॐ ज्ञानि-नामपि चेतांसि देवी भगवती हि सा।
बलादा-कृष्य-मोहाय महा-माया-प्रयच्छति।।1।।

दुर्गे-स्मृता-हरसि भीतिम-शेष-जन्तोः
स्वस्थैः स्मृता-मति-मतीव शुभाम् ददासि।
दारिद्र्य-दुःख भय-हारिणि का त्वदन्या
सर्वोप-कार-करणाय-सदार्द्र-चित्ता।।2।।

सर्व-मंगल-मंगल्ये शिवे सर्वार्थ-साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते।।3।।

शरणा-गत-दीनार्त-परित्राण-परायणे।
सर्व स्यार्ति हरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते।।4।।

सर्व-स्वरूपे सर्वेशे सर्व-शक्ति-समन्विते।
भये-भ्यस्-त्राहि-नो देवि दुर्गे देवि नमोऽस्तु ते।।5।।

रोगान्-शेषा- नप - हंसि तुष्टा
रूष्टा तु कामान् सकलान्-भीष्टान्।
त्वा-मा-श्रिता-नाम् न विपन्नरा-णाम्
त्वामा-श्रिता हया-श्रय-ताम् प्रयान्ति।।6।।

सर्वा-बाधा-प्रशमनम् त्रैलो-क्यस्या-खिलेश्वरि।
एव-मेव त्वया कार्य-मस्मद्-वैरि-विनाशनम्।।7।।

एतत्-परम् गुह्यम् सर्व रक्षा विशारदम्।
देव्या संभाषितम् स्तोत्रम् सदा-साम्राज्य-दायकम्।।8।।

शृणु-याद्-वा-पठेद्-वापि-पाठयेद्-वापि-यत्नतः।
परिवार-युतो-भूत्वा त्रैलोक्य-विजयी भवेत्।।9।।

श्रीसप्तश्लोकी दुर्गा अम्बार्पण-मस्तु

श्रीदुर्गा मानस-पूजा

उद्यच्-चंदन-कुंकुमा-रूण-पयो-धारा-भिरा-प्ला-विताम्
नाना-नर्ध्य-मणि-प्रवाल-घटिताम् दत्ताम् गृहा-णाम्-बिके।
आमृष्टाम् सुर-सुन्दरी-भिर-भितो हस्ताम्-बुजैर्-भक्ति-तो
मातः सुन्दरि भक्त-कल्प-लतिके श्री-पादुका मादरात्।।1।।

देवेन्-द्रादि-भिरर्-चितम् सुर-गणै-रादाय सिंहा-सनम्
चंचत्-कांचन-संचया-भिर-चितम् चारू-प्रभा-भास्वरम्।
एतच्-चम्पक-केतकी-परिमलम् तैलम् महा-निर्मलम्
गन्धोद्-वर्तन-मादरेण तरूणी-दत्तम् गृहा-णाम्-बिके।।2।।

पश्चाद-देवि गृहाण शम्भु-गृहिणि श्री सुन्दरि प्रायशो
गन्ध-द्रव्य-समूह-निर्भर-तरम् धात्री-फलम्-निर्मलम्।
स्ना-त्वा प्रो-ज्ज्वल-गंधकम् भवतु हे श्री-सुन्दरि त्वन्-मुदे।।3।।

सुराधि-पति-कामिनी-कर-सरोज-नाली-धृताम्
सचन्दन-सकुंकुमा-गुरु-भरेण विभ्रा-जिताभ्।
महा-परि-मलो-ज्ज्वलाम् सरस-शुद्ध-कस्तू-रिकाम्
गृहाण वर-दायिनी त्रिपुर-सुन्दरि श्रीप्रदे।।4।।

गंधर्-वामर-किन्नर-प्रिय-तमा-संतान-हस्ताम्-बुज
प्रस्-तारैर्-ध्रिय-माण-मुत्तम्-तरम् काश्-मीरजा-पिंजरम्।
मातर्-भास्वर-भानु-मण्डल-लसत्-कान्ति-प्रदानो-ज्ज्वलम्
चैतन्-निर्मल-मात-नोतु वसनम् श्री सुन्दरि त्वन्-मुदम्।।5।।

स्वर्णा-कल्पित-कुण्डले श्रुति-युगे हस्ताम्-बुजे मुद्रिका

मध्ये सा-रसना नितम्ब-फलके मंजीर-मंध्रि द्वये।
हारो वक्षसि कंकणौ क्वण-रणत्-कारौ कर - द्वन्द्व के
विन्यस्तम् मुकुटम् शिरस्य-नुदिनम् दत्तोन्-मदम् स्तूय-ताम्।।6।।

ग्रीवायाम् विलसल्-ललाट-फलके सौन्दर्य-मुद्राधरम्।
सिन्दूरम् विलसल्-ललाट-फलके सौन्दर्य-मुद्राधरम्।
राजत्-कज्जल-मुज्ज्वलोत्-पल-दल-श्री-मोचने लोचने
तद्-दिव्यौ-षधि-निर्मितम् रचयतुम् श्री-शांभवि श्रीप्रदे।।7।।

अमन्द-तरै-मन्दरोन्-मथित-दुग्ध-सिन्धूद्-भवम्
निशा-कर-करो-पमम् त्रिपुर-सुन्दरि श्रीप्रदे।
गृहाण मुख-मीक्षि-तुम् मुकुर बिम्ब-मा-विदुमैर्
विनिर्-मित- मघच्-छिदेरति-कराम्-बुजस्था-यिनम्।।8।।

कस्तूरी-द्रव-चन्दना-गुरु-सुधा-धारा-भिरा-प्लाविताम्
चंचच्-चम्पक-पाटलादि-सुरभि-द्रव्यैः सुगन्धी-कृतम्।
देव-स्त्री-गण-मस्त-कस्थित-महा-रत्नादि-कुंभ-वजै-
रम्भः शांभवि संभ्र-मेण विमलम् दत्तम गृहाणाम्-बिके।।9।।

कह्लारोत्-पल-नाग-केसर-सरो-जाख्या-वली-मालती-
मल्ली-कैरव-केतकादि-कुसुमै रक्ताश्व-मारा-दिभिः।
पुष्पैर्-माल्य-भरेण वै सुर-भिणा नाना-रस-स्रोत-सा
ताम्राम्-भोज-निवा-सिनीम् भगवतीम् श्रीचंडिकाम् पूजये।।10

मांसी-गुग्गुल-चंदना-गुरु-रजः कर्पूर-शैले-यजैर्
माध्वी-कैः सह कुंकुमैः सुर-चितैः सर्पिर्-भिरा-मिश्रितैः।
सौर-भ्यस्-थिति-मन्दिरे मणि-मये पात्रे भवेत् प्रीतये

धूपोऽ-यम् सुर-कामिनी-विरचितः श्री-चण्डिकेत्वन्-मुदे।।11।।

घृत-द्रव-परिस्फुरद्-रूचिर-रत्नष्ट्-यान्वितो
महा-तिमिर-नाशनः सुर-नितम्-बिनी-निर्मितः।
सुवर्ण-चषकस्-थितः सघन-सार-वर्त्या-न्वितः
स्तव त्रिपुर-सुन्दरि स्फुरति देवि दीपो मुदे।।12।।

जाती-सौरभ-निर्भरम् रुचिकरम् शल्यो-दनम् निर्मलम्
युक्तम् हिंगु-मरीच-जीर-सुरभि-द्रव्या-न्वितैर् व्यंजनैः।
पक्वान्-नेन सपाय-सेन मधुना दध्याज्य-सम्-मिश्रितम् नैवेंद्यम्
सुर-कामिनी-विरचितम् श्री-चंडिके त्वन्-मुदे।।13।।

लवंग-कलिको-ज्ज्वलम् बहु-नाग-वल्ली-दलम्
सजाति-फल-कोमलम् सघन-सार-पूगी-फलम्।
सुधा-मधु-रिमा-कुलम् रूचिर-रत्न-पात्र-स्थितम् गृहाण
मुख-पंकजे स्फुरित-मम्ब ताम्बू-लकम्।।14।।

शरत्-प्रभव-चन्द्रमः स्फुरित-चन्द्रिका-सुन्दरम्
गलत्-सुर-तरंगिणी-ललित-मौक्तिका-डम्बरभ्।
गृहाण नव-कांचन-प्रभव-दण्ड-खण्डो-ज्ज्वलम्
महा-त्रिपुर-सुन्दरि प्रकट-मात-पत्रम् महत्।।15।।

मातस्-त्वन्मुद-मात-नोतु सुभगस्-त्रीभिः सदाऽऽन्दो-लितम्
शुभ्रम् चामर-मिन्दु-कुन्द-सदृशम् प्रस्वेद-दुखा-पहम्।
सद्योऽ-गस्त्य-वसिष्ठ-नारद-शुक-व्यासादि-वाल्मीकि-भिः
स्वे चित्ते क्रिय-माण एव कुरुताम् शर्माणि-वेद-ध्वनिः।।16।।

स्वर्-गांगणे वेद-मृदंग-शंख-भेरी-निनादै-रुप-गीय-माना।

कोला-हलैरा-कलिता तवास्तु विद्या-धरी-नृत्य-कला सुखाय।।17।।

देवि-भक्ति-रस-भावित-वृते प्रीय-ताम् यदि कुतोऽपि लभ्यते।
तत्र लौल्य-मपि सत्-फल-मेकम् जन्म-कोटि-भिरपीह न लभ्यम्।।18।।

एतैः षोडश-भिः पद्यै-रुप-चारोप-कल्पितैः।
यः पराम् देवताम् स्तौति स तेषाम् फल-माप्नु-यात।।19।।

श्रीदुर्गा-मानस-पूजा-श्रीदुर्गा-अर्पण-मस्तु

श्रीदुर्गाद्वात्रिंशन्नामाला

(दुर्गा बत्तीस-नाम-माला)

दुर्गा दुर्गार्ति-शमनी दुर्गापद्-विनि-वारिणी।
दुर्ग-मच्छे-दिनी दुर्ग-साधिनी दुर्ग-नाशिनी।।1।।
दुर्गतोद्-धारिणी दुर्ग-निहंत्री दुर्ग-मापहा।
दुर्गम-ज्ञानदा दुर्ग-दैत्य-लोक-दवा-नला।।2।।
दुर्गमा दुर्ग-मालोका दुर्ग-मात्म-स्वरूपिणी।
दुर्ग-मार्ग-प्रदा दुर्गम-विद्या दुर्ग-माश्रिता।।3।।
दुर्गम-ज्ञान-संस्थाना दुर्गम-ध्यान-भासिनी।
दुर्ग-मोहा दुर्ग-मगा दुर्ग-मार्थ-स्वरूपिणी।।4।।
दुर्ग-मासुर-संहन्त्री दुर्ग-मायुध-धारिणी।
दुर्ग-मांगी दुर्गमता दुर्गम्या दुर्ग-मेश्वरी।।5।।
दुर्ग-भीमा दुर्ग-भामा दुर्गभा दुर्ग-दारिणी।
नामावलि-मिमाम् यस्तु दुर्गाया मम मानवः।।6।।
पठेत् सर्व-भयान्-मुक्तो भविष्यति न संशयः।।7।।

श्रीजगदम्बा-दुर्गार्पण-मस्तु

श्री-दुर्गा-अष्टोत्तर-शत-नाम-स्तोत्रम्

ईश्वर उवाच

शतनाम प्रवक्ष्-यामि शृणुष्व कमला-ननें।
यस्य प्रसाद-मात्रेण दुर्गा प्रीता भवेत् सती।।1।।

ॐ सती साध्वी भव-प्रीता भवानी भव-मोचनी।
आर्या दुर्गा जया चाद्या त्रिनेत्रा शूल-धारिणी।।2।।

पिनाक-धारिणी चित्रा चण्ड-घण्टा महातपाः।
मनो बुद्धि-रहंकारा चित्त-रूपा चिता चितिः।।3।।

सर्व-मन्त्र-मयी सत्ता सत्या-नन्द-स्वरूपिणी।
अनन्ता भाविनी भाव्या भव्या-भव्या सदा-गतिः।।4।।

शाम्भवी देव-माता च चिन्ता रत्न-प्रिया सदा।
सर्व-विद्या दक्ष-कन्या दक्ष-यज्ञ-विनाशिनी।।5।।

अपर्णा-नेक-वर्णा च पाटला पाटला-वती।
पट्टाम्बर-परी-धाना कल-मंजीर-रंजिनी।।6।।

अमेय-विक्रमा क्रूरा सुन्दरी सुर-सुन्दरी।
वन-दुर्गा च मातंगी मतंग-मुनि-पूजिता।।7।।

ब्राह्मी माहेश्वरी चैन्द्री कौमारी वैष्णवी तथा।
चामुण्डा चैव वाराही लक्ष्मीश्-च पुरुषा-कृतिः।।8।।

विमलोत्-कर्षिणी ज्ञाना क्रिया नित्या च बुद्धि-दा।
बहुला बहुल-प्रेमा सर्व-वाहन-वाहना।।9।।

निशुम्भ-शुम्भ-हननी महिषा-सुर-मर्दिनी।
मधु-कैटभ-हन्त्री च चण्ड-मुण्ड-विनाशिनी।।10।।

सर्वा-सुर-विनाशा च सर्व-दानव-घातिनी।
सर्व-शास्त्र-मयी सत्या सर्वास्त्र-धारिणी तथा।।11।।

अनेक-शस्त्र-हस्ता च अनेकास्-त्रस्य-धारिणी।
कुमारी चैक-कन्या च कैशोरी युवती यतिः।।12।।

अप्रौढा चैव प्रौढा च वृद्ध-माता बल-प्रदा।
महो-दरी मुक्त-केशी घोर-रूपा महा-बला।।13।।

अग्नि-ज्वाला रौद्र-मुखी काल-रात्रिस्-तपस्विनी।
नारायणी भद्र-काली विष्णु-माया जलो-दरी।।14।।

शिव-दूती कराली च अनन्ता परमेश्वरी।
कात्यायनी च सावित्री प्रत्यक्षा ब्रह्म-वादिनी।।15।।

य इदम् प्रपठेन्-नित्यम् दुर्गा-नाम-शताष्-टकम्।
ना-साध्यम् विद्यते देवि त्रिषु लोकेषु पार्वती।।16।।

धनम् धान्यम् सुतम् जायाम् हयम् हस्तिन-मेव च।
चतुर् वर्गम् तथा चान्ते लभेन्-मुक्तिम् च शाश्व-तीम्।।17।।

कुमारीम् पूजयित्वा तु ध्यात्वा देवीम् सुरेश्वरीम्।
पूजयेत् परया भक्त्या पठेन्-नाम-शताष्ट-कम।।18।।

तस्य सिद्धिर्-भवेद् देवि सर्वैः सुर-वरै-रपि।
राजानो दास-ताम् यान्ति राज्य-श्रिय-मवाप्नु-यात्।।19।।

गोरो- चना- लक्तक- कुंकुमेन
सिन्दूर- कर्पूर- मधु- त्रयेण।
विलिख्य यन्त्रम् विधिना विधिज्ञो
भवेत् सदा धार-यते पुरारिः।।20।।

भौमा-वास्या-निशा-मग्रे चंद्रे शतभिषाम् गते।
विलिख्य प्र-पठेत् स्तोत्रम् स भवेत् सम्पदाम् पदम्।।21।।

श्रीजगदम्बा-दुर्गार्पण-मस्तु

श्रीचण्डिका-हृदयम्

ॐ अस्य श्री चण्डिका हृदय स्तोत्र मंत्रस्य, मार्कण्डेय ऋषिः, अनुष्टुप् छंदः, श्री चण्डिका देवता ह्रां बीजं, ह्रीं शक्तिः, हूं कीलकम् श्री चण्डिका प्रीतये जपे विनियोगः।

ध्यानम्

ॐ सर्व-मंगल-मांगल्ये शिवे सवार्थ-साधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते।।

ॐ जयन्ती मंगला काली भद्रकाली कपालिनी।
दुर्गा क्षमा शिवा धात्रीस्वाहा स्वधा नमोऽस्तु ते।।

अथाः सम-प्रवक्ष्यामि विस्तरेण यथा-तथम्।
चंडिका हृदयम् गुह्यम् शृणुष्वै-काग्र मानसः।।1।।

ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह्रां ह्रीं ह्रं जय चामुण्डे, चण्डिके,
त्रिदश-मणि-मुकुट-कोटीर-संघट्टित-चरणारविन्दे,

गायत्रि-सावित्रि-सरस्वति महाहि-कृता-भरणे, भैरव-रूप-धारिणि-प्रकटित-दंष्ट्रोग्र वदने, घोरे, घोरानने, ज्वल-ज्वल-ज्वाला-सहस्र-परिवृते, महाट्ट-हास-बधिरी-कृत-दिगन्तरे, सर्वायुध-परिपूर्णे, कपाल-हस्ते, गजा-जिनोत्त-रीये, भूत-वैताल-वृन्द-परिवृते, प्रकम्पित-चराचरे, मधुकैटभ- महिषासुर-धूम्रलोचन-चण्ड-मुण्ड-रक्तबीज-शुम्भ-निशुम्भादि-दैत्य-निश्कंटके, कालरात्रि-महामाये, शिवे, नित्ये, इन्द्राग्नि-यम-निर्ऋति-वरूण-वायु-सोमेशान-प्रधान-शक्तिभूते, ब्रह्म-विष्णु-शिवस्तुते, त्रिभुवना-धाराधारे, वामे, ज्येष्ठे, वरदे, रौद्रि, अम्बिके, ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारि, वैष्णवी, शंखिनी, वाराही-इन्द्राणी, चामुण्डा, शिवदूती, महाकाली, महालक्ष्मी, महासरस्वती-स्वरूपे, नाद-मध्य-स्थिते, महोग्र-विषोरग-फणा-फणि- घटित-मुकुट-कटकादि- रत्न-महा-ज्वाला-भय-पाद-बाहु-कंठोत्तमांगे, माला-कुले, महा-महिषो-परि-गंधर्व-विधाधरा-राधिते, नव-रत्न-निधि-कोशे, तत्त्व-स्वरूपे, वाक्-पाणि-पाद-पायू-पस्थात्मिके, शब्द-स्पर्श" -रूप-रस-गंधादि-स्वरूपे,त्वक्-चक्षु- श्रोत्र-जिह्वा-घ्राण-महा-बुद्धि-स्थिते, ॐ ऐंकार-ह्रींकार- क्लींकार-हस्ते, आं क्रों आग्नेय- नयन-पात्रे प्रवेशय- प्रवेशय

द्रां शोषय शोषय द्रीं सुकुमारय सुकुमारय श्रीं सर्वम् प्रवेशय प्रवेशय त्रैलोक्य-वर-वर्णिनि- समस्त चितम् वशीकुरु वशीकुरु मम शत्रून् शीघ्रम् मारय मारय जाग्रत-स्वप्न-सुषुप्ति- अवस्थासु- अस्मान् राज-चौराग्नि-जल-वात-विष-भूत- शत्रु- मृत्यु-ज्वरादि-स्फोटकादि-नाना-रोगेम्यो, नानाभि-चारेभ्यो, नानाप-वादेभ्यः पर-कर्म-मंत्र-तंत्र- यंत्रौषध-शल्य-शून्य-क्षुद्रेभ्यः सम्यक् माम् रक्ष रक्ष ॐ ऐं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः स्क्रां स्क्रीं स्क्रूं स्क्रें स्क्रौं स्क्रः मम सर्व कार्याणि साधय साधय हुं फट् स्वाहा।

राजद्वारे श्मशाने वा विवादे शत्रु संकटे।
भूताग्नि चोर मध्यस्ये मयि कार्याणि साधय स्वाहा।।

चंडिका हृदयम् गुह्यम् त्रिसंध्यम् यो पठेन्नरः।
सर्व काम प्रदम् पुंसाम् भुक्तिम् मुक्तिम् प्रयच्छति।।

श्रीचण्डिका हृदयम् श्री दुर्गार्पण-मस्तु

श्रीचण्डिकाम् दलम्

ॐ नमश्चण्डिकायै

अथातः सम्प्र-वक्ष्यामि चण्डिका-दल-मुत्तमम्।
मंत्रम् विना तु जपत्वा वै तत्-सर्वम् निष्फलम् भवेत्।।1।।

ॐ नमो भगवति जय जय चामुण्डे, चण्ड, चण्डेश्वरि, चण्डायुधे, चण्ड-रुप-धारिणी ताण्डव-प्रिये, कुण्डली-भूत-दिङ्-नाग-मण्डली कृत-गण्ड-स्थले, समस्त-जग-दण्ड-संहार- कारिणी, परे, अनन्ता-नन्त-रूपे, शिवे, नर-शिरो-माला-लंकृत- वक्ष-स्थले, महा-कपाल-भालो-ज्वलन्-मणि-मुकुट-चूड़ा-वतंस-चंद्र-खण्डे, महाभीषणे, देवि-महा-माये-षोडश-कला-परि-वृतोल्-लासिते-महा-देवासुर-समर-निहत-रुधि-रार्द्री-कृता-लम्बित-तनु-कमलोद्-भासित करे, सम्पूर्ण-रूधिर-शोभित-महा-कपोल-वक्त्र हासिनि-दृढ-तर-निबद्ध्य-माने, रोम-राजी-सहित-हेम-काञ्ची- दामो-ज्वलित-वसनारुणी-भूत-नूपुर-प्रज्वलित-मही-मण्डले, महा-शंभु-रूपे, महा-व्याध्र-चर्माम्बर-धरे, महासर्प-यज्ञो-पवीतिनि-महा-श्मशान-भस्मोद्-धूलित-सर्व-गात्रे, कालि-कंकालि-महाकालि-कालाग्नि-रूद्रकालि-काल-संकर्षिणि-काल-नाशिनि-कालरात्रि-मनो-दुष्ट-भक्षिणि-नाना-भूत-प्रेत-पिशाच-गण-सहस्र-संचारिणि-नाना-व्याधि-

प्रशमनि-सर्व-दुष्ट-प्रमथिनि-सर्व दारिद्र्य-नाशिनि-धग-धगेत्या-स्वादित-मांस-खण्डे, गात्र-विक्षेण-कल-कलायमान-कंकाल-धारिणी मुध-मांस-रूधिराव-सिक्त-विलासिनि-सकल सुरासुर-गंधर्व-यक्ष-विद्याधर- किन्नर-किम्- पुरुषादिभिः स्तूयमान-चरिते, सर्व-मंत्राधि-कारिणि-सर्व-शक्ति-प्रधाने, सकल-लोक-पावनि-सकल-दुरित-प्रक्षालिनि-सकल-लोकैक-जननि ब्राह्मि-माहेश्वरि-कौमारि-वैष्णवि- शंखिनि -वाराहि-नारसिंहि- इंद्राणि-चामुण्डे, महालक्ष्मी-स्वरूपे, महाविद्ये, योगेश्वरि, योगिनि, चण्डिके, महामाये, विश्वरूपिणि- सर्वा-भरण-भूषिते, अतल-वितल-सुतल-रसातल-तलातल-महातल-पातालादि-भूर्-भुवःस्वर्-महर्-जनस्-तपः-सत्याख्य-चतुर्-दश भुवनैक-नाथे, महाक्रूरे, प्रसन्न-रूप-धारिणि, ॐ नमः पितामहाय, ॐ नमो नारायणाय, ॐ नमः शिवाय, इति सकल-लोकैक-जायमान-ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वर-रूपिणि-दण्ड-कमण्डलु-धारिणि-सावित्रि-सर्वमंगला- सरस्वति-पद्मालये, पार्वति-सकल-जगत- स्वरूपिणि-शंख-चक्र-गदा-पद्म-धारिणि- परशु-शूल-पिनाक-टंक-धारिणि-शर-चाप-शूल- करवाल-खड्ग-डमरु-कांकुश-गदा-परशु-तोमर- भिन्दिपाल भुशुण्डी-मुद्गर-मूसल-परिघायुध- दोर्-दण्ड सहस्र-चंद्रार्क-वह्नि-नयने,

इन्द्राग्नि, यम, नैऋति-वरुण-वायु-सोमेशान-प्रधान-शक्ति-हेतु-भूते, सप्तद्वीप-समुद्रो-पर्युपरि-व्याप्ते, ईश्वरि-महा-प्रपञ्च-माला-लंकृत-मेदिनी-नाथे, महाप्रधाने, महाकैलाश-पर्वतोद्यान-वन विहारिणि-क्षेत्र-नदी-तीर्थ-देवतायन-अलंकृते, वसिष्ठ-वामदेवादि- महा-मुनिगण-वंद्यमान- चरणारविन्दे, द्वि-चत्वारिंशद्-वर्ण-माहात्म्ये, पर्याप्त- वेद-वेदांगादि-अनेक-शास्त्राधार-भूते, शब्द- ब्रह्ममयि-लिपि-देवते, मातृका देवि चिरम्-माम् रक्ष रक्ष,मम-शत्रून्- हुँकारेण-नाशय नाशय, भूत-प्रेत- पिशाचा-नुच्चाट-योच्चा-टय, समस्त ग्रहान् वशीकुरु वशीकुरु मोहय मोहय स्तंभय स्तंभय मोदय मोदय उन्मादयोन्-मादय विध्वंसय विध्वंसय द्रावय द्रावय श्रावय श्रावय स्तंभय स्तंभय संक्रामय संक्रामय सकला-रातीन मूर्द्धिन स्फोटय स्फोटय मम-शत्रून शीघ्रम् मारय मारय, जाग्रत-स्वप्न-सुषुप्ति-अवस्था-स्वस्मान् राज-चौराग्नि-जल-वात-विषभूत-शत्रु- मृत्यु-ज्वरादि नाना रोगेभ्यो नानाभि-चौरेभ्यो नानाप- वादेभ्यःपर-कर्म-मंत्र- तंत्र-यंत्रौषध शल्य शून्य- क्षुदेभ्यः सम्यक् माम् रक्ष रक्ष, ॐ श्रीं ह्रीं क्ष्मौं मम-शत्रु सर्व-प्राण-संहार-कारिणी हु फट् स्वाहा।

ॐ नमश्चण्डिकायै।।

श्रीरुद्रयामल-तंत्रोक्त-चण्डिकादलम्
श्रीजगदम्बा-दुर्गार्पण-मस्तु

श्रीरामकृत

श्रीकात्यायनी (दुर्गा) स्तुतिः

नमस्ते त्रि-जगद्-वन्द्ये संग्रामे जय-दायिनि।
प्रसीद विजयम् देहि कात्या-यनि नमोऽस्तु ते।।1।।

सर्व-शक्ति-मये दुष्ट-रिपु-निग्रह कारिणि।
दुष्ट-जृम्-भिणि संग्रामे जयम् देहि नमोऽस्तु ते।।2।।

त्व-मेका परमा शक्तिः सर्व-भूतेष्व-वस्थिता।
दुष्टम् संहर संग्रामे जयम् देहि नमोऽस्तु ते।।3।।

रण-प्रिये रक्त-भक्षे मांस-भक्षण-कारिणि।
प्र-पन्नार्-तिहरे युद्धे जयम् देहि नमोऽस्तु ते।।4।।

खट्-वांगासि-करे मुण्ड-माला-द्योतित-विग्रहे।
ये त्वाम् स्मरन्ति दुर्गेषु तेषाम् दूःख-हरा भव।।5।।

त्वत्-पाद-पंकजाद्-दैन्यम् नमस्ते शरण-प्रिये।
विनाशय रणे शत्रून जयम् देहि नमोऽस्तु ते।।6।।

अचिन्त्य-विक्रमेऽ-चिन्त्य-रूप-सौन्दर्य-शालिनि।
अचिन्त्य-चरितेऽ-चिन्त्ये-जयम् देहि नमोऽस्तु ते।।7।।

ये त्वाम् स्मरन्ति दुर्गेषु देवीम् दुर्ग-विना-शिनीम्।
नाव-सीदन्ति दुर्गेषु जयम् देहि नमोऽस्तु ते।।8।।

महिषा-सृक्-प्रिये संख्ये महिषा-सुर-मर्दिनि।
शरण्ये गिरि-कन्ये मे जयम् देहि नमोऽस्तु ते।।9।।

प्रसन्न-वदने चण्डि चण्डा-सुर-विमर्-दिनि।
संग्रामे विजय् देहि शत्रून्-जहि नमोऽस्तु ते।।10।।

रक्ता-क्षि रक्त-दशने रक्त-चर्-चित गात्रके।
रक्त-बीज-निहन्त्री त्वम् जयम् देहि नमोऽस्तु ते।।11।।

निशुंभ-शुंभ-संहन्त्रि विश्व-कर्-त्रि सुरेश्वरि।
जहि शत्रून् रणे नित्यम् जयम देहि नमोऽस्तु ते।।12।।

भवान्ये-तज्-जगत्-सर्वम् त्वम् पाल-यसि सर्वदा।
रक्ष विश्व-मिदम् मातर्-हत्वै-तान् दुष्ट-राक्ष-सान्।।13।।

त्वम् हि सर्व-गता शक्तिर्-दुष्ट-मर्दन-कारिणि।
प्रसीद जगताम् मातर्- जयम् देहि नमोऽस्तु ते।।14।।

दुर्-वृत्त-वृन्द-दमनि सद्-वृत्त-परि-पालिनि।
निपातय रणे शत्रून् जयम् देहि नमोऽस्तु ते।।15।।

कात्या-यनि जगन्-मातः प्र-पन्नार्ति-हरे शिवे।
संग्रामे विजयम् देहि भये-भ्यः पाहि सर्वदा।।16।।

श्रीकृष्णकृतम्

श्रीदुर्गास्तोत्रम्

त्वमेव सर्व-जननी मूल-प्रकृति-रीश्वरी।
त्वमे वाद्या सृष्टि-विधौ स्वेच्छया त्रिगु-णात्मिका।।1।।

कार्यार्थे सगुणा त्वम् च वस्तुतो निर्गुणा स्वयम्।
पर-ब्रह्म-स्वरूपा त्वम् सत्या नित्या सनातनी।।2।।

तेजः स्वरूपा परमा भक्ता-नुग्रह-विग्रहा।
सर्व-स्वरूपा सर्वेशा सर्वा-धारा परात्परा।।3।।

सर्व-बीज-स्वरूपा च सर्व-पूज्या निराश्रया।
सर्वज्ञा सर्वतो-भद्र सर्व-मंगल-मंगला।।4।।

सर्व-बुद्धि-स्वरूपा च सर्व-शक्ति-स्वरूपिणी।
सर्व-ज्ञान-प्रदा देवी सर्वज्ञा सर्व-भाविनी।।5।।

त्वम् स्वाहा देव-दाने च पितृ-दाने स्वधा स्वयम्।
दक्षिणा सर्व-दाने च सर्व-शक्ति-स्वरूपिणी।।6।।

निद्रा त्वम् च दया त्वम च तृष्णा त्वम् चात्मनः प्रिया।
क्षुत्- क्षान्तिः शान्ति-रीशा च सृष्टिश्च शाश्वती।।7।।

श्रद्धा पुष्टिश्च तन्द्रा च लज्जा शोभा दया तथा।
सतां सम्पत्-स्वरूपा श्रीर्-विपत्तिर सतामिह।।8।।

प्रीति-रूपा पुण्य-वताम् पापिनाम् कल-हांकुरा।
शश्वत्-कर्ममयी शक्तिः सर्वदा सर्व-जीविनम्।।9।।

देवेभ्यः स्व-पदो दात्री धातुर्-धात्री कृपामयी।
हिताय सर्व-देवानाम् सर्वा-सुर-विनाशिनी।।10।।
योग-निद्रा योगरूपा योग-दात्री च योगिनाम्।
सिद्धि-स्वरूपा सिद्धा नाम्-सिद्धि-दा सिद्ध-योगिनी।।11।।
माहेश्वरी च ब्रह्माणी विष्णु-माया च वैष्णवी।
भद्र-दा भद्र-काली च सर्व-लोक-भयंकरी।।12।।
ग्रामे-ग्रामे ग्रामदेवी गृह-देवी गृहे गृहे।
सताम् कीर्तिः प्रतिष्ठा च निन्दा त्वम्-सताम् सदा।।13।।
महायुद्धे महामारी दुष्ट-संहार-रूपिणी।
रक्षा-स्वरूपा शिष्टारि नाम् मातेव हित-कारणी।।14।।
वन्द्या पूज्या स्तुता त्वम् च ब्रह्मा-दीना च सर्वदा।
ब्राह्मण्य-रूपा विप्राणाम् तपस्या च तपस्वि-नाम्।।15।।
विद्या विद्या-वताम् त्वम् च बुद्धिर्-बुद्धि-मताम् सताम्।
मेधा-स्मृति-स्वरूपा च प्रतिभा प्रतिभा-वताम्।।16।।
राज्ञाम् प्रताप-रूपा च विशाम् वाणिज्य-रूपिणी।
सृष्टौ सृष्टि-स्वरूपा त्वम् रक्षा-रूपा च पालने।।17।।
तथान्ते त्वम् महामारी विश्वस्य विश्वपूजिते।
काल-रात्रिर्-महा-रात्रिर्-मोह-रात्रिश्च मोहिनी।।18।।
दुरत्यया मे माया त्वम् यया सम्मोहिम् जगत्।
यया मुग्धो हि विद्वांश्च मोक्ष-मार्गम् न पश्यति।।19।।
इत्यात्-मना कृतम् स्तोत्रम् दुर्गाया दुर्ग-नाशनम्।
पूजा-काले पठेत् यो हि सिद्धिर्-भवति वांछिता।।20।।

बंध्या च काक-बंध्या च मृत-वत्सा च दुर्भगा।
श्रुत्वा स्तोत्रम् वर्ष-मेकम् सुपुत्रम् लभते ध्रुवम्।।21।।
कारा गारे महा-घोरे यो बद्धो दृढ़-बंधने।
श्रुत्वा स्तोत्रम् मास-मेकम् बन्धनान् मुच्यते ध्रुवम्।।22।।
यक्ष्म-ग्रस्तो गलत्-कुष्ठी महाशूली महा-ज्वरी।
श्रुत्वा स्तोत्रम् वर्ष-मेकम् सद्यो रोगात् प्रमुच्यते।।23।।
पुत्र-भेदे प्रजा-भेदे पत्नी-भेदे च दुर्गतः।
श्रुत्वा स्तोत्रम् मास-मेकम् लभते नात्र संशयः।।24।।
राजद्वारे श्मशाने च महारण्ये रण-स्थले।
हिंस्र-जन्तु-समीपे च श्रुत्वा स्तोत्रम् प्रमुच्यते।।25।।
गृह-दाहे च दावाग्नौ दस्यु-सैन्य-समन्विते।
स्तोत्र-श्रवण-मात्रेण लभते नात्र संशयः।।26।।
महा-दरिद्रो मूर्खश्च वर्षम् स्तोत्रम् पठेत्-तु यः।
विद्यावान धनवांश्-चैव स भवेन्-नात्र संशयः।।27।।

श्रीकृष्णकृत-दुर्गा-स्तोत्रम् श्रीजगदम्बा-दुर्गार्पण-मस्तु

श्रीदुर्गाष्टकम्

नमस्ते शरण्ये शिवे सानुकम्पे
नमस्ते जगद्-व्यापिके विश्वरूपे
नमस्ते जगद्-वंद्य पादार विन्दे
नमस्ते जगत्-तारिणि त्राहि दुर्गे।।1।।

नमस्ते जगच्-चिन्त्य-मान-स्वरूपे
नमस्ते महा-योगिनि ज्ञान रूपे
नमस्ते सदानन्द-नन्द-स्वरूपे।
नमस्ते जगत्-तारिणि त्राहि दुर्गे।।2।।

अनाथस्य दीनस्य तृष्णा-तुरस्य
भयार्-तस्य भीतस्य बद्धस्य जन्तोः।
त्वमेका गतिर् देवि निस्तार-दात्री।
नमस्ते जगत्-तारिणि त्राहि दुर्गे।।3।।

अरण्ये रणे दारुणे शत्रु-मध्ये- ऽनले
सागरे प्रान्तरे राज गेहे।
त्वमेका गतिर्-देवि निस्तार-हेतु।
नमस्ते जगत्-तारिणि त्राहि दुर्गे।।4।।

अपारे महादुस्तरे ऽत्यन्त-घोरे।
विपत्-सागरे मज्ज ताम् देह भाजाम्।
त्वमेका गतिर-देवि निस्तार-नौका। नमस्ते
जगत्-तारिणि त्राहि दुर्गे।।5।।

नमश्चण्डिके चण्ड-दोर्-दण्ड-लीला
लसत्-खण्डिता-खण्डला-शेष-भीते।
त्वमेका गतिर् विघ्न सन्दोह-हंत्री। नमस्ते
जगत्-तारिणि त्राहि दुर्गे।।6।।

त्वमेका-जिता-राधिता-सत्य-वादिन्
यमेया-जिता-क्रोधना-क्रोध-निष्ठा।
इड़ा पिंगला त्वम् सुषुम्ना च नाड़ी।
नमस्ते जगत्-तारिणि त्राहि दुर्गे।।7।।

नमो देवि दुर्गे शिवे भीम-नादे
सर स्वत्य-रुन्धत्य मोघ-स्वरूपे।
विभूतिः शची काल-रात्रिः सती त्वम्।
नमस्ते जगत्-तारिणि त्राहि दुर्गे।।8।।

शरण मपि सुरा-णाम् सिद्ध विद्या-धराणाम्
मुनि-दनुज-नराणाम् व्याधिभिः पीडिताम्।
नृपति-गृह-गतानाम् दस्युभिस्-त्रासितानाम्
त्वमसि शरण-मेका देवि दुर्गे प्रसीद।।9।।

इदम् स्तोत्रम् मया प्रोक्त- मापद-उद्धार-हेतुकम्
त्रिसन्ध्य-मेक -संध्यम् वा पठना-देव संकटात्।
मुच्यते नात्र सन्देहो भुवि स्वर्गे रसातले।।10।।

श्री अम्बा-अर्पण-मस्तु

श्रीभवान्यष्टकम्

न तातो न माता न बन्धुर्-न दाता
न पुत्रो न पुत्री न भृत्यो न भर्त्ता।
न जाया न विद्या न वृत्तिर्-ममैव
गतिस्त्वम् गतिस्त्वम् त्वमेका भवानि।।1।।

भवाब्धाव-पारे महा-दु:ख-भीरू:
प्रपात: प्रकामी प्रलोभी प्रमत:।
कुसंस्कार-पाश प्रबद्ध: सदाऽहम्
गतिस्त्वम् गतिस्त्वम् त्वमेका भवानि।।2।।

न जानामि दानम् न च ध्यान-योगम्
न जानामि तन्त्रम् न च स्तोत्र-मन्त्रम्।
न जानामि पूजाम् न संन्यास-योगम्
गतिस्त्वम् गतिस्त्वम् त्वमेका भवानि।।3।।

न जानामि पुण्यम् न जानामि तीर्थम्
न जानामि भक्तिम् लयम् वा कदाचित्।
न जानामि भक्तिम् व्रतम वापि मातर्
गतिस्त्वम् गतिस्त्वम् त्वमेका भवानि।।4।।

कुकर्मी कुसंगी कुबुद्धि: कुदास:
कुलाचार-हीन: कदाचार-लीन:।
कुदृष्टि: कुवाक्य-प्रबन्ध: सदाऽहम्
गतिस्त्वम् गतिस्त्वम् त्वमेका भवानि।।5।।

प्रजेशम् रमेशम् महेशम् सुरेशम्
दिनेशम् निशीथे-श्वरम् वा कदाचित्।
न जानामि चाऽन्यत् सदाऽहम् शरण्ये
गतिस्त्वम् गतिस्त्वम् त्वमेका भवानि।।6।।

विवादे विषादे प्रमादे प्रवासे
जले चानले पर्वते शत्रु-मध्ये।
अरण्ये शरण्ये सदा माम् प्रपाहि
गतिस्त्वम् गतिस्त्वम् त्वमेका भवानि।।7।।

अनाथो दरिद्रो जरा-रोग-युक्तो
महा-क्षीण-दीन: सदा जाड्य-वक्त्र:।
विपत्तौ प्रविष्ट: प्रणष्ट: सदाऽहम्
गतिस्त्वम् गतिस्त्वम् त्वमेका भवानि।।8।।

माता भवानी जनको भवानी
बधुर् भवानी भगिनि भवानी।
गोत्रम् भवानी स्वकुलम् भवानी
विना भवानी न हि किंचिदस्ति।।9।।

श्री अम्बा-अर्पण-मस्तु

श्रीमदाद्य-शंकराचार्य-कृत

श्रीदेव्यपराध-क्षमापन-स्तोत्रम्

नो मंत्रम् नो यंत्रम् तदपि च न जाने स्तुति-महो
न चाह्वानम् ध्यानम् तदपि च न जाने स्तुति-कथाः।
न जाने मुद्रास्-ते तदपि च न विल-पनम्
परम् जाने मातस्-त्वदनु-शरणम् क्लेश-हरणम्।।1।।

विधे-रज्ञाने-न द्रविण-विर-हेणा-लस-तया
विधेया-शक्य-त्वा-त्तव चरण-योर्या-च्युतिर्- भूत्।
तदे-तत् क्षन्-तव्यम् जननि सक लोद्-धारिणि शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचि-दपि कुमाता न भवति।।2।।

पृथि-व्याम् पुत्रास्-ते जननि बह-बह् सन्ति सरलाह्
परम् तेषाम् मध्ये विरल-तरलोऽ-हम् तव सुतह्।
मदीयोऽ-यम् त्यागह् समुचित-मिदम् नो तव शिवे
कुपुत्रो जायेत क्वचि-दपि कुमाता न भवति।।3।।

जगन्-मातर्-मातस्-तव चरण-सेवा न रचिता।
न वा दतम् देवि द्रविण-मपि भूयस्-तव मया।
तथापि त्वम् स्नेहम् मयि निरुप-मम् यत्र-कुरुषे
कुपुत्रो जायेत क्वचि-दपि कुमाता न भवति।।4।।

परि-त्यक्तता देवा विविध-विध-सेवा-कुल-तया।
मया पंचा-शीते-रधिक-मप-नीते तु वयसि
इदा-नीम् चेन-मातस्-तव यदि कृपा नापि भविता
निरा-लम्बो लम्बो-दर-जननि कम् यामि शरणम्।।5।।

श्व-पाको जल्पाको भवति मधु-पाको पम-गिरा
निरा-तंको रंको विह-रति चिरम् कोटि-कनकैः।
तवा-पर्णे कर्णे विशति मनु-वर्णे फल-मिदम्

जनह् को जानीते जननि जप-नीयम् जप-विधौ।।6।।

चिता-भस्मा-लेपो गरल-मश-नम् दिक्-पट-धरो
जटा-धारी कंठे भुजग-पति-हारी पशु-पतिह्।
कपाली भूतेशो भजति जगदी-शैक-पदवीम्
भवानि त्वत्-पाणि-ग्रहण-परि-पाटी-फल-मिदम्।।7।।

न मोक्षस्या-कांक्षा भव-विभव-वांछापि च न मे
न विज्ञाना-पेक्षा शशि-मुखी सुखेच्छा-पि न पुनह्।
अतस्-त्वाम् सन्-याचे जननि जननम् यातु मम वै
मृडानी रूद्राणी शिव शिव भवा-नीति जपतह्।।8।।

नारा-धितासि विधिना विवि-धोप-चारैः
किम् रुक्ष-चिन्तन-परैर्-न कृतम् वचोभि।
श्यामे त्वमेव यदि किंचन मय्य-नाथे
धत्से कृपा-मुचित-मम्ब परम् तवैव।।9।।

आ- पत्सु मग्नह् स्मर-णम् त्वदी-यम्
करोमि दुर्गे करु-णार्ण-वेशि
नै - तच् - छठत्वम् मम भाव - येथाः
क्षुधा-तृषार्-ता जननीम् स्मरन्ति।।10।।

जगदम्ब विचित्र-मत्र किम्
परि-पूर्णा करू-णास्ति चेन्-मयि
अपराध - परम्परा - परम्
न हि माता समु-पेक्षते-सुतम्।।11।।

मत्-सम पातकी नास्ति पाप घ्नी त्वत्-समा न हि।
एवम् ज्ञात्वा महादेवि यथा-योग्यम् तथा कुरु।।12।।

श्रीजगदम्बा दुर्गा-अर्पण-मस्तु

श्रीदेवीदुर्गाजी की आरती

जग जननी जय! जय!! माँ! जग जननी जय! जय!!
भय-हारिणि, भव-तारिणी, भव-भामिनि जय जय।।
माँ जग जननी जय जय.....।

तू ही सत्-चित्-सुखमय शुद्ध ब्रह्म-रूपा।
सत्य सनातन सुन्दर पर-शिव सुर-भूपा।।1।।
माँ जग जननी जय जय.....।

आदि अनादि अनामय अविचल अविनाशी।
अमल अनन्त अगोचर अज आनन्द-राशी।।2।।
माँ जग जननी जय जय.....।

अविकारी, अघहारी, अकल कलाधारी।
कर्त्ता विधि, भर्ता हरि, हर-संहार-कारी।।3।।
माँ जग जननी जय जय.....।

तू विधि-वधू, रमा तू, उमा महा-माया।
मूल-प्रकृति, विद्या तू, तू जननी जाया।।4।।
माँ जग जननी जय जय.....।

राम, कृष्ण तू, सीता, व्रज-रानी राधा।
तू वांछा-कल्पद्रुम, हारिणि सब बाधा।।5।।
माँ जग जननी जय जय.....।

दश विद्या, नव दुर्गा, नाना-शस्त्र-करा।
अष्ट-मातृका, योगिनि, नव नवरूप धरा।।6।।
माँ जग जननी जय जय.....।

तू पर-धाम-निवासिनि, महा-विलासिनी तू।
तू ही श्मशान-विहारिणि, ताण्डव-लासिनि तू।।7।।
माँ जग जननी जय जय.....।

सुर-मुनि-मोहिनि सौम्या तू शोभा-धारा।
विव-सनविकट-सरूपा, प्रलय-मयी धारा।।8।।
माँ जग जननी जय जय.....।

तू ही स्नेह-सुधा-मयि, तू अति गरल मना।
रत्न-विभूषित तू ही, तू ही अस्थि-तना।।9।।
माँ जग जननी जय जय.....।

मूला-धार-निवासिनि, इह-पर-सिद्धि-प्रदे।
काला-तीता काली, कमला तू वर दे।।10।।
माँ जग जननी जय जय.....।

शक्ति, शक्ति-धर तू ही नित्य अभेद-मयी।
भेद-प्रदर्शिनी वाणी विमले वेद-त्रयी।।11।।
माँ जग जननी जय जय.....।

हम अति दीन दुखी माँ विपत-जाल घेरे।
हैं कपूत अति कपटी, पर बालक तेरे।।12।।
माँ जग जननी जय जय.....।

निज स्वभाव-बस जननी दया-दृष्टि कीजै।
करुणा कर करुणा-मयि चरण-शरण दीजै।।13।।
माँ जग जननी जय जय.....।

श्रीअम्बा जी की आरती

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी।
तुमको निशिदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवरी।।1।।

माँग सिन्दूर विराजत, टीको मृग-मद को।
उज्जवल से दोउ नैना, चन्द्र-वदन नीको।।2।।

कनक समान कलेवर, रक्ताम्बर राजै।
रक्त-पुष्प गल माला, कण्ठन पर साजै।।3।।

केहरि वाहन राजत, खड्ग खपर धारी।
सुर-नर-मुनि-जन सेवत, तिनके दुख-हारी।।4।।

कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती।
कोटिक चन्द्र दिवाकर, सम राजत ज्योती।।5।।

शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषा-सुर-घाती।
धूम्र-विलोचन नैना, निशिदिन मद-माती।।6।।

चण्ड-मुण्ड संहारे, शोणित-बीज हरे।
मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भय-हीन करे।।7।।

ब्रह्माणी, रूद्राणी, तुम कमला-रानी।
आगम-निगम-बखानी, तुम शिव पटरानी।।8।।

चौंसठ योगिनि गावत, नृत्य करत भैरूँ।
बाजत ताल मृदंगा, "औं" बाजत डमरू।।9।।

तू ही जग की माता, तुम ही हो भरता।
भक्तन की दुःख हरता, सुख सम्पति करता।।10।।

भुजा चार अति शोभित, वर-मुद्रा धारी।
मन-वांछित फल पावत, सेवत नर-नारी।।11।।

कंचन थाल विराजत, अगर कपुर बाती।
श्रीमाल-केतु में राजत, कोटि-रतन ज्योती।।12।।

श्री अम्बे जी की आरति, जो कोई नर गावै।
कहत शिवानन्द स्वामी, सुख सम्पति पावै।।13।।

श्रीदुर्गा माता की आरती

आरति श्री दुर्गा जननी की।
आदि-शक्ति तारिणि त्रिगुणी की।।

ब्रह्मा विष्णु सदा शिव गावत।
मार्कण्डेय सुमेधा ध्यावत।
नारद सनकादिक मुनि भावत।

मधु कैटभ दानव दलनी की।
आरति श्री दुर्गा जननी की।।

गावत सकल शास्त्र निगमागम।
जेहि तें सब विज्ञान समुद्गम।
व्यास आदि ऋषि प्रणत करत नम।

महिष मर्दिनि दुःख दमनी की।
आरति श्री दुर्गा जननी की।।

सत्य सनातन धर्म स्वरूपा।
ब्राह्मी रमा उमा नव रूपा।
नाम रूप बहु ग्रंथ निरूपा।

शुंभ निशुंभासुर हननी की।
आरति श्री दुर्गा जननी की।।
श्री माँ तन छवि निरूपम सुन्दर।
सायुध सिंह सवारी सत्वर।
मुक्ति-मुक्ति-दा शिवा शिवंकर।
त्रिपुर सुन्दरी शिव रमनी की।
आरति श्री दुर्गा जननी की।।
जे कलि जननि आरती गावत।
भ्रम गम तम ताकर मिट जावत।
शिशु सुत रसिक शरण पद पावत।
मातु आगमानंद गुणी की।
आरति श्री दुर्गा जननी की।।

श्रीजगदम्बा दुर्गा की आरती

हे माता दुर्गे तेरी आरती उतारूँ।
आरती उतारूँ मैया पल-पल पुकारुँ।।
जगदम्बा मणिद्वीप निवासिनि।
मुख छवि मुखर मनोरम हासिनि।
नयन बदन छवि रूप निहारूँ।
हे माता दुर्गे.....।
चार आठ दस भुज माँ धारी।
सायुध वरदा सिंह सवारी।
हे देवी लीला तेरी अगम उचारूँ।
हे माता दुर्गे.....।

मधु कैटभ महिषासुर गंजनि।
शुम्भ निशुम्भ हनी भय भंजनि।
महिमा ऋषि मुनि संग विचारूँ।
हे माता दुर्गे.....।
जपहिं नाम हम भक्त तिहारी।
आरति करहिं सकल नर नारी।
'रसिक' नाम जपि चरण निहारूँ।
हे माता दुर्गे.....।
कंचन थाल कपूर के बाती।
आरति मंगल कष्ट नसाती।
शरण 'आगमानन्द' सुधारूँ।
हे माता दुर्गे.....।

श्रीपराम्बा दुर्गा की आरती

दुर्गे तेरी आरती माँ काली तेरी आरती।
सारा संसार, करेगा हाथ जोड़ के।।
माथे मुकुट रतन की राजे, अष्ट भुजा आयुध बहु साजे।
गले मोतिययन की हार करेगा हाथ जोड़ के।।
दुर्गे तेरी.....।
तीन नयन माँ सिंह सवारी, झलमल चीर रूप अति न्यारी।
पग पायल झनकार, करेगा हाथ जोड़ के।।
दुर्गे तेरी.....।
जो मैया की आरति गावे, कष्ट नसावे सब सुख पावे।
महिमा अगम अपार, करेगा हाथ जोड़ के।।

दुर्गे तेरी.....।

करहिं आरती हम नर नारी, ध्याऊँ भजऊँ माँ नाम तिहारी।
रसिक भक्त भव पार, करेगा हाथ जोड़ के।।

दुर्गे तेरी.....।

माँ अम्बे तेरी आरती जगदम्बे तेरी आरती।
माँ काली तेरी आरती माँ तारा तेरी आरती।
माँ शारद तेरी आरती माँ लक्ष्मी तेरी आरती।
माँ शक्ति तेरी आरती दस विद्या तेरी आरती।
नव दुर्गा तेरी आरती हे माता तेरी आरती ।
सारा संसार करेगा हाथ जोड़ के।

श्रीदेवी मैया की आरती

आरति गाऊँ गाऊँ गाऊँ जगदम्ब जी की मैं।
जगदम्ब जी की मैं, जयश्री अम्ब जी की मैं।।

आरति गाऊँ गाऊँ.....।

घृत कपूर ले भक्ति भाव से आरति थाल सजाऊँ।
घंटी घंटा ढोल ढाक संग सुन्दर शंख बजाऊँ।।

आरति गाऊँ गाऊँ.....।

चार बार चरणों में माता नाभी पर दो घुमाऊँ।
एक बार मुख सात बार सब अंगों पे मैं दिखाऊँ।।

आरति गाऊँ गाऊँ.....।

रसिक आगमानन्द शरण तव चरणोंपे बलि जाऊँ।
पूजा करके रो-रो करके आरति मैया गाऊँ।।

आरति गाऊँ गाऊँ.....।

श्री मैया जी की आरती (गोपाल सिंह नेपाली)

मैया तेरी आरती से अंधेरा टले।
भक्त के अंधेरे घर में रोशनी जले।
जय माँ जगदम्बे जय जय माँ अम्बे।
राजा की हवेली या निर्धन की झोपड़ी तेरी दया है
तो वो धरती पे है खड़ी
जो तुम्हें पुकारे, उसे पाप क्या छले।

भक्त के अंधेरे.....।

जय माँ जगदम्बे जय जय माँ अम्बे।
दुःख दर्द से जो लाखों तेरी आरती करे।
नाव में भव सिंधु से उतारती करे।
सुख पाए वो कि जो कि तेरे द्वार को चले।

भक्त के अंधेरे.....।

श्री शैल सुता की आरती

आरति कीजै शैल-सुता की।।-2

जगदम्बा की आरति कीजै।
स्नहे-सुधा, सुख सुन्दर लीजै।
जिनके नाम लेत दृग भीजै।
ऐसी वह माता वसुधा की ।।

पाप-विनाशिनि कलि-मल-हारिणि।
दया-मयी, भव-सागर-तारिणी।
शस्त्र धारिणी, शैल-विहारिणी।
बुद्धि-राशि गणपति माता की।।

सिंह-वाहिनी मातु भवानी।
गौरव-गान करैं जग प्रानी।
शिव के हृदया-सन की रानी।।
करैं आरती मिल जुल ताकी।।

श्रीमाँ दुर्गा की आरती

करके माँ दुर्गा से प्यार, उनकी आरती उतार।
मानव काया तुझे ना मिलेगी बारम्बार।।
कंचन की थाली माता, अबिर से सजाया।
घी ओ कपुर की तेरी, आरती जलाया।।
यह तो माया का संसार, इसमें पड़ना है बेकार।
मैया दुर्गे की, सखि सब आरती उतार।।
वाणी रमा तू सीता, तू काली तारा।
राधा उमा तू दुर्गा, मेरी माँ सहारा।
अब मैं आया तेरे द्वार, कर दो अम्बे बेड़ा पार।
देवी मैया, की भैया अब आरती उतार।।
दर-दर भटकता अंबे ठोकर हूँ खाया।
कोई ना सहारा जननी, आंचल में आया।
शिशु रसिक तनय लाचार,
तेरी चरण शरण आधार
भक्ति भिक्षा, भजन करूँ आरती उतार।।

क्षमा-प्रार्थना

अपराध-सहस्राणि क्रियन्ते-अहर् निशम् मया।
दासो-अयमिति माम् मत्वा क्षमस्व परमेश्वरि।।1।।
आवा-हनम् न जनामि न जानामि तवार्च-नम्।
पूजाम् चैव न जानामि क्षम्यताम् परमेश्वरि। 2।।
मंत्र हीनम् क्रिया हीनम् विधि हीनम् सुरेश्वरि।
यतृ-पूजितम् मया देवि परि-पूर्णम् तदस्तु मे।।3।।
अपराध-शतम् कृत्वा जग-दम्बेति चोच्च-रेत्।
याम् गतिम् सम-वाप्नोति न ताम् ब्रह्मादयः सुराः।।4।।
साप-राधोऽस्मि शरणम् प्राप्तस्-त्वाम् जग-दम्बिके।
इदानी-मनु-कम्प्योऽ-हम् यथेच्छसि तथा कुरु।।5।।
अज्ञा-नाद्-विस्-मृतेर्-भ्रान्त्या यन्-न्यून-मधिकम् कृतम्।
तत्-सर्वम् क्षम्य-ताम् देवि प्रसीद परमेश्वरि।।6।।
कामेश्वरि जगन्-मातः सच्चिदा-नन्द-विग्रहे।
गृहा-णार्-चामि-माम् प्रीत्या प्रसीद परमेश्वरि।।7।।
गुह्याति-गुह्य-गोप्त्री-त्वम् गृहाणा-स्मत्-कृतम् जपम्।
सिद्धिर्-भवतु मे देवि त्वत्-प्रसादात्-सुरेश्वरि।।8।।
यदक्ष-रम्-पदम् भ्रष्टम् मात्रा-हीनम् च यत्- भवेत्।
तत् सर्वम् क्षम्य-ताम् देवि प्रसीद परमेश्वरी।
नमः सर्व-हितार्थाय जगदाधार हेतवे।
साष्टांगो-ऽयम् प्रणा-मस्तु प्रयत्नेन मया कृतः।।10।।
सर्व-रूप-मयी-देवी सर्व-देवी-मयम् जगत्।
अतोऽ-तहम ताम् विश्व-रूपाम् नमामि परमेश्वरीम्।।11।।